₹ 50/-

समकालीन मैथिली साहित्यक रचनात्मक उपक्रम

अनुप्रास

www.anuprasprakashan.com

वर्ष 02 अंक 03-04 जनवरी-दिसंबर 2021

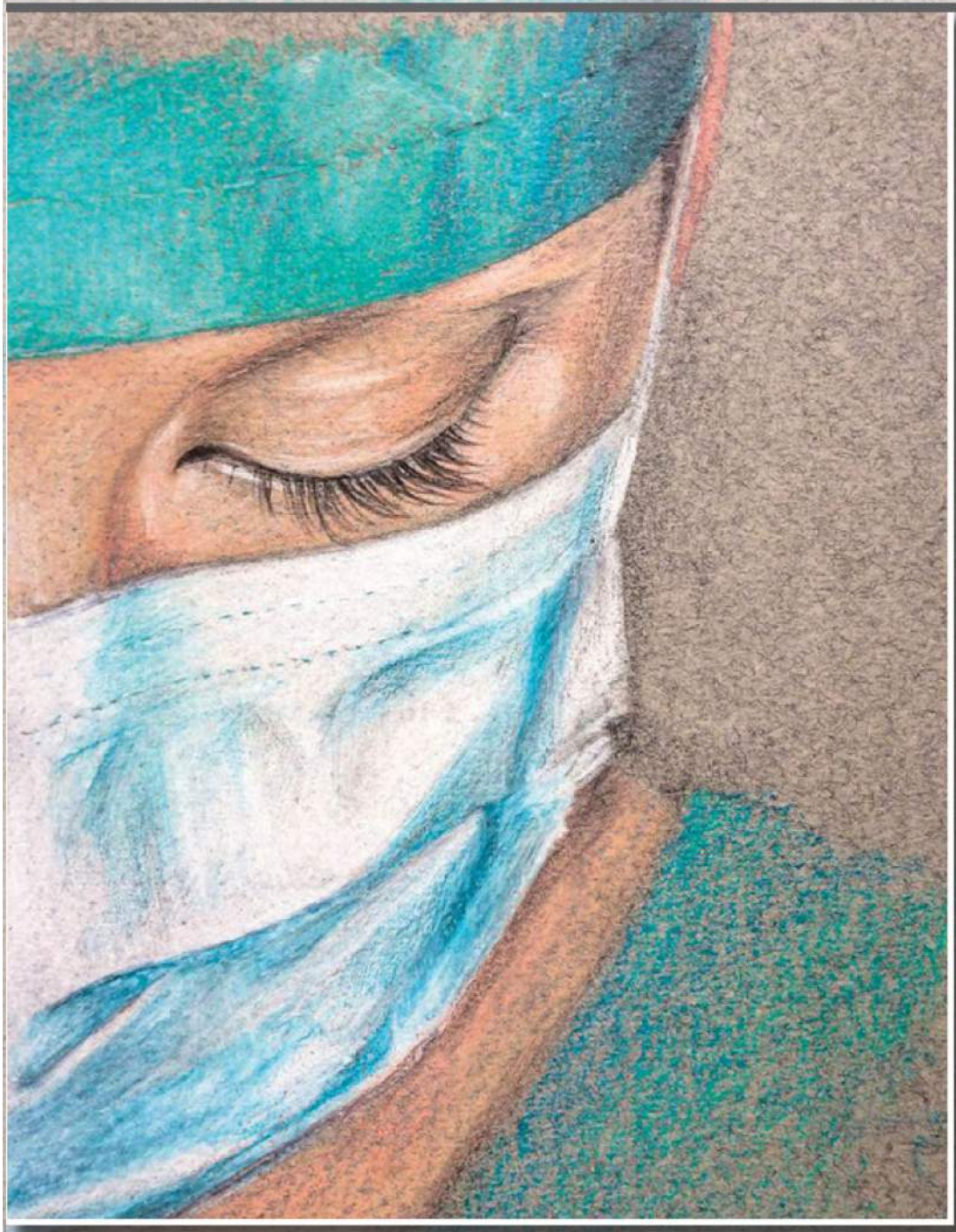

व्याख्यान
प्रा. डा. रामावतार यादव

आलेख
सुकान्त सोम
भैरव लाल दास
डा. निक्की प्रियदर्शिनी

कथा
अशोक
सुभाष चन्द्र यादव
रा. ना. सुधाकर

कविता
कीर्ति नारायण मिश्र
विद्यानंद झा
सुस्मिता पाठक

कविता संवाद
भीमनाथ झा आ
उदय चन्द्र झा 'विनोद'

संस्मरण
उदय नारायण सिंह 'नचिकेता'

बालबाड़ी
ऋषि बशिष्ठ/कर्ण संजय
अभिषेक सुमन

समीक्षा/गजल/खोज-बीन
व्यंग्य/यात्राक पन्ना
कोरोना विशेष/अपनेक
कहनाम

छओ टा गजल

कमल मोहन चुन्नू

सम्पर्क :

डॉ के एम ठाकुर

रमेश झा महिला कॉलेज,
सहरसा (मिथिला), बिहार।
मो : **9334924753**

एक

जुलमी उनटे डाँटि कहलकै, जुलुम भेलैए
कोटक कागत साटि कहलकै, जुलुम भेलैए

पानि स' तिरपित हिया देखि हिलसय पोखरि
बैसल-बैसल जाठि कहलकै, जुलुम भेलैए

भइबट्टी मे एक बीत किछु आंगुर लए
खुनियाँ गरदनि काटि कहलकै, जुलुम भेलैए

कएक मास स' अपसियाँत छल मधुमाछी
म'धु मगहिया चाटि कहलकै, जुलुम भेलैए

आब राज मे दारू लए मातनि पड़तै
रकटल केओ उफाँटि कहलकै, जुलुम भेलैए

बेटा लए एमरी टिकट अजबारने ओ
दाव-पेंच सब साँठि कहलकै, जुलुम भेलैए

हड़ताली मे संसद मे कहबैका सब
जनता के खोरनाठि कहलकै, जुलुम भेलैए

बुढ़िया देहक रत्ती-रत्ती नूआ मे
मसकल चेफड़ी साटि कहलकै, जुलुम भेलैए

दुर्गाथान मे सगरे खून-खुनामहि काल
छागर मूड़ी झाँटि कहलकै, जुलुम भेलैए

सुरुज किरिन धरि सूतल जान-जुआनक बेर
आहि स' छाती फाटि कहलकै, जुलुम भेलैए

दू

ने दाहिना ने वाम तकै छथि
सबठाँ अपने नाम तकै छथि

मारि खसेता ओकरा कहियो
तेँ ईंटा कि झाम तकै छथि

बजबय चाहथि सब के हरदा
मजगुत से इल्जाम तकै छथि

छाल्ही खाय के हिस्सक पुरना
ने शोणित ने घाम तकै छथि

सगर गाम हो-हल्ला अनधुन
अपने सन परिणाम तकै छथि

शहरक मारि सँ ओधबाध भ'
आब पिता केर गाम तकै छथि

ज्ञान-प्राण मे पछड़ल तेँ ओ,
उज्जर-कारी चाम तकै छथि

सीया-धीया सतबरती दिस,
खुनियाँ आँखिये राम तकै छथि

तीन

सगर देश सरिएबाक मौसम
आब आएल फरिएबाक मौसम

चारू कात पसरि जयबा लए
'बाबा' के गरिएबाक मौसम

सपनौती भारत बनबय लए
चूल्हि-आगि ओरिएबाक मौसम

छोटका के पटिदार बना क'
द्रोही सन एँरिएबाक मौसम

समाचार अखबार बेपारी
फुसिओ के भरिएबाक मौसम

मन्दिर-मस्जिद मौला-साधू
ठामहि पर घुरिएबाक मौसम

संविधान आ राजनीति लखि
अपन जाँघ कुरिएबाक मौसम

जनता-गाड़ी घुरमुरिया मे
मेहिया के गोरिएबाक मौसम

उकबा डाही कलह घरे-घर
सपना भेल सुढ़िएबाक मौसम

चारि

कोना-कोना क' करै गोहरिया, की जानी
हमरा लए भरि साल अन्हरिया, की जानी

खेतक आरि सँ हाट-बजारक अपनैती
कहिया बनतै ई एकपेरिया, की जानी

खून-पसेना उसरैग चललहुँ संतति लए
ओमहर राजा भरै बखरिया, की जानी

साधु-महात्मा मस्त-मलंगी डंटा तर
राम-राज सपनौती हुँड़िया, की जानी

कहै कहाँदन आर्य-भूमि दक्खल करतै
कत्ता बनलै मरनीक भरिया, की जानी

बाबा पुरचुक सिका चढ़ौलनि चिनियाँ के
भार पठौलक बिख के पुरिया, की जानी

बद्धि-विवेकक अगबे दाबी दिल्ली के
तखन एते हिजड़ा संगतुरिया, की जानी

जोगी रोगी भोगी सोगी दुनियाँ छै
एना कथी लए कटै अहुरिया, की जानी

फतबा-उधबा उला-पका देखलक सगरो
शांति-सुनरकी बनत बहुरिया, की जानी

एक किरिन हो एक पवन हो एक लहरि
सगर गाम हो एक इजोरिया, की जानी

पाँच

राति-राति भरि कानल छी
समय-टाकु सँ तानल छी

ककरो हाथक कुड़हरि बनि क'
अपने लए समधानल छी

पुरस्कार लए पाग बेचि क'
खरखाही मे फानल छी

धनी-बली के लतखुर्दन मे
सगरे खूनल-खानल छी

योजन विस्तृत अपने घर मे
अपराधी सन बान्हल छी

दोयम-पूजक महायज्ञ बिच
होता-श्रोता गानल छी

परिजन-परिकठ सुभग सुदिन लए
गत्रे-गत्र गतानल छी

छी वनराज मुदा पिजड़ा मे
बन्हकी पड़ल दफानल छी

छओ

कोन-कोन नाप भजारल जाइ छी
दोयम बुझि क' टारल जाइ छी

छहर-महर हमरे पर करितो
आव-भगति सँ बारल जाइ छी

अनके ग्रास बनय लेल सदिखन
एहि पथार सन पाड़ल जाइ छी

बेर-कुबेरे अगिलेसुआ बिच
हमहीं घूर पजारल जाइ छी

छुतिका अभरल ककरो अंगना
छुतहर सन अजबारल जाइ छी

कर्त्ता-धर्त्ता हमहीं तैयो
अपने भोज सँ बारल जाइ छी

अदिन ह'र हम खेत अभागक
कइएक चास समारल जाइ छी

निकहा दिन सपनौती एखनो
नित बेगार हहकारल जाइ छी

रंगबिरही नारा दुनियाँ लए
मिथिला बुझि बहटाराल जाइ छी

जौड़ी-गरछी कैंच-गैंच मे
हमहीं भाँज सुतारल जाइ छी

चुलहा जारनि खापड़ि हमरे
तेसरा हाथे लाड़ल जाइ छी

सीमा पर खकसाहनि होइ लए
बेरम-बेर उतारल जाइ छी

कते बाँट-बखरा खतियेबै
हम तँ एहिना हारल जाइ छी

अंगना मे ओ पुरमैनका, हम
ऐंठारे दुतकारल जाइ छी

सगरे टोलक दाइ सोहागिन
अपने बेर झमारल जाइ छी

ढोल गमार आ की नै लिखलहुँ
अहीं कहू, की ताड़ल जाइ छी

कहिया एमहर गंगा-जमुना
जुग-जुग सँ परतारल जाइ छी

पोथी खोलि बुझा क' कहितहुँ
कोन अपराधे मारल जाइ छी

अनुप्रास

समकालीन मैथिली साहित्यक रचनात्मक उपक्रम

वर्ष : 2 अंक : 3-4 जनवरी-दिसम्बर 2021, ₹ 50/-

संरक्षक

–

परामर्शी

डॉ. तारानन्द वियोगी
धीरेन्द्र प्रेमर्षि
डॉ. कमल मोहन चुन्नू
ऋषि बशिष्ठ

प्रबन्ध सम्पादक

फुलकान्त ठाकुर
7992322719

सम्पादक

दीप नारायण
9430583847

उप सम्पादक

कुमार आलोक
9431014994
शशि कुमार शशि
8521907184

सम्पादकीय कार्यालय

इन्द्र परिसर, लहेरियागंज,
मधुबनी,(मिथिला), बिहार-847 211
मो.- 8862977228
www.anuprasprakashan.com
ई-मेल : info@anuprasprakashan.com

● सम्पादकीय सहयोग पूर्णतः अवैतनिक।

● पत्रिकामे व्यक्त विचार लेल सम्पादक उत्तरदायी नहि छथि। अनुप्राससँ सम्बन्धित समस्त न्यायिक मामिलाक फरिछौट मधुबनी न्यायालयक अधीन होयत।

● अनुप्रास लेल स्वामी, प्रकाशक श्रीमती गिरिजा नारायण द्वारा थॉमसन प्रेस, दिल्लीसँ मुद्रित।

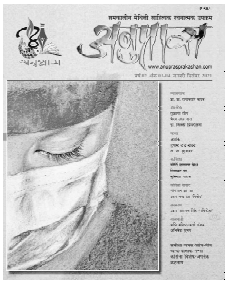

अनुक्रम

सम्पादकीय
02 : प्रश्न क' रहल अछि लहास
व्याख्यान
03 : मैथिली भाषाक वर्तमान अवस्थितिद' संक्षिप्त टिप्पणी : प्रा. डा. रामावतार यादव
आलेख
09 : अही बाट पर चलि बचतीह मैथिली : सुकान्त सोम
11 : ग्राम-पंचायतमे मैथिली : भैरव लाल दास
14 : मिथिलाक नारी : अतीत, वर्त्तमान आ भविष्य : डा. निक्की प्रियदर्शिनी
कथा
18 : गति : सुभाष चन्द्र यादव
20 : राहत : अशोक
23 : झखड़ल फूलक गाछ : रा. ना. सुधाकर
25 : नेपथ्य कथाक मंचन : डा. अभिलाषा
लघुकथा
22 : सुमतिया : अरुण लाल दास
कविता
29 : कीर्ति नारायण मिश्रक दूटा कविता
30 : कविता संवाद : भीमनाथ झा आ उदय चन्द्र झा 'विनोद'
31 : विद्यानंद झाक किछु कविता
33 : सुस्मिता पाठकक तीनटा कविता
22 : अप्पन मिथिला : चंदना दत्त
गजल
34 : चारिटा गजल : प्रेमचन्द्र पंकज
33 : पाँचटा गजल : भास्करानंद झा भास्कर
खोज-बीन
36 : चामुण्डा मायक खोज : डॉ. शिव कुमार मिश्र
संस्मरण
38 : स्मृतिक 'सियाही' एखनहु सूखल नइ अछि : उदय नारायण सिंह 'नचिकेता'
मोनक बात
41 : मोनक बात कागज पर : लक्ष्मण झा 'सागर'
समीक्षा
44 : समकालीन आ सार्थक विमर्श लेल नोतैत उपन्यास : कोखि : रूपम झा
व्यंग्य
46 : मैथिली खरमासी लिटरेचर फेस्टिवल : वीरेन्द्र नारायण झा
यात्राक पन्ना
48 : तिस्ता नदीक कछेरमे एक राति... : फुलकान्त ठाकुर
कोरोना विशेष
50 : ...आब धोखा-धरिक खेल, खेल रहल अछि कोरोना : शशि कुमार शशि
बालबाड़ी
कथा
51 : समानता तँ छैक : ऋषि बशिष्ठ
कविता
53 : कर्ण संजय/अभिषेक सुमन
54 : **अपनेक कहनाम**

प्रश्न क' रहल अछि लहास

आशा करैत छी जे अपने लोकनि सपरिवार अपन हीत-मीत, सखा-सम्बन्धीक संग स्वस्थ होएब। वैश्विक महामारी कोरोना वायरस भारते नहि समुच्चा दुनियाकेँ चपेटमे ल' लेने अछि। कोरोनाक पहिल लहरिक बाद सरकार, प्रशासन आ आम जनताक लापरवाहीक चलते आइ एकर दोसर लहरि हमरा सभक सोझा संकटक विशाल पहाड़ ठाढ़ क' देने अछि। एहि दोसर लहरिक चपेटमे मृत्यु-दर एहि तरहेँ बढ़ि रहल अछि जे लहास जड़ाबए लेल जगह ओछ भ' रहल अछि। श्मशानमे लकड़ी महग भ' गेल अछि। घरबन्दीमे सभक काज-धंधा ठप अछि। सभ अपन बिजनेस-बेपार छोड़ि क' हाथ पर हाथ धयने घरमे बैसल छथि। कोरोनासँ जे से मुदा घरमे भुखमरी सेहो आबि गेल छैक। गरीब-मजदूर लग अपन परिजनकेँ अंतिम संस्कार लेल पाइ नहि छैक। जिनका भरि पेट खएबाक बेऔँत नहि अछि हुनकासँ लहास जराबक बदलामे 25-30 हजार क' टका मांगल जा रहल अछि।

सभसँ त' चिंताजनक बात ई अछि जे कतेक ठाम प्रशासन स्वयं ऊपर-झापड़ खधिया खुनि क' लहासकेँ झाँपि दैत अछि अथवा गंगामे बहा दैत अछि, तकरा बाद कौआ-चील आ...

जखन कि संविधानक अनुच्छेद 21 खाली जीविते लोककेँ सम्मानक संग जीबयकेँ अधिकार नहि दैत अछि अपितु मुइल लोककेँ सेहो समान अधिकार दैत अछि। मृतकक अंतिम संस्कार ओकर आस्था आ परंपराक मोताबिक होएबाक चाही आ एहि अधिकार एवं सम्मानक रक्षा करब राज्य सरकारक कर्तव्य अछि।

मुदा, सरकारक क्रिया किनकोसँ छुपल नहि अछि। एकहक लहास चिकरि-चिकरि क' अपन अधिकारक प्रश्न क' रहल अछि।

खैर, एखन सभसँ जरूरी बात ई अछि जे हमसभ एकमत भ' क' एहि महासंकटक सामना करी। हमरा लोकनिकेँ सुनिश्चित करबाक अछि जे हम सब टीका लगबाबी, मास्कक प्रयोग करैत आवश्यक सामाजिक दूरीक निर्वहन करी। जतेक बनि सकय घरसँ नहि बहराइ अथवा कमसँ कम बहराइ।

विश्व स्वास्थ्य संगठनक कहब अछि जे कोरोना महामारी एखन बेस समय धरि चलत। एकर तेसर आ संभवतः चारिम लहरि सेहो आबि सकैत अछि। तेँ हमरासभकेँ फेरसँ ओ भूल नहि दोहरेबाक चाही जे पहिल लहरिक समयमे कएने रही।

अपने लोकनिक सोझाँ अनुप्रासक संयुक्तांक ल' क' उपस्थित भ' रहल छी। किछु कारण सँ पछिला अंक हम नहि आनि सकल रही।

एम्हर आबि क' मैथिली साहित्यकेँ पैघ-पैघ धक्का सभ लगलैक अछि। हमरा सभक बहुत रास अग्रज/अभिभावक साहित्यकार-संस्कृतिकर्मी लोकनि हमरा सभक बीचसँ प्रस्थान क' गेलाह। एहिमे किछु गोटेकेँ असमय चलि जाएब कनेक बेसिये कचोटैत रहल अछि। मुदा, हिनका सभक रचना-संसार हमरा लोकनिकेँ सदति एकटा सार्थक दिशा देखबैत रहत।

प्रो. डा. रामावतार यादव
काठमाण्डू, नेपाल
ramyadav1942@gmail.com

प्रसिद्ध भाषाविद्, पूर्वांचल विश्वविद्यालय, नेपालक पूर्व उपकुलपति, तीन बेरि प्रज्ञा पुरस्कार विजेता, प्रथम *नेपाल विद्यापति मैथिली अनुसन्धान पुरस्कार* विजेता आ कतेकहु ग्रंथक रचयिता प्राध्यापक डा. रामावतार यादवक अनेकहु अनुसंधानात्मक आलेखसभ नेपाल, भारत, अमेरिका, विलायत ओ जर्मनीमे प्रकाशित छैन्हि। ब्रिटिश काउन्सिल छात्रवृत्ति, विलायत, फुलब्राइट छात्रवृत्ति, अमेरिका, ब्रिटिश काउन्सिल भीजिटर, लण्डन, सीनियर फुलब्राइट भिजिटिङ्ग स्कौलर, अमेरिका, अलेक्जाण्डर फौन हुम्बोल्ट पोष्टडौक्टोरल सीनियर रिसर्च फेलोशिप, जर्मनी आदि प्राप्त कएनिहार प्रा. डा. यादव *मिथिला रत्न*, *मिथिला विभूति*, *पहिल शब्दकोशकार पंडित भवनाथ मिश्र साहित्य शिखर सम्मान* एवं *चेतना समिति ताम्रपत्र सम्मान*सँ सेहो सम्मानित छथि।

[पौष 6-7, 2076 तदनुसार दिसम्बर 22-23, 2019क' विराटनगर, नेपालमे आयोजित सतरहम अन्तर्राष्ट्रिय मैथिली सम्मेलनमे प्रस्तुत आमन्त्रित अतिथि अभिभाषण]

मैथिली भाषाक वर्तमान अवस्थितिद' संक्षिप्त टिप्पणी

No Megasthenes or Fa–hian has left for us an account of ancient Mithila nor are we fortunate in having a Thucidydes or Herodotus. *No literature, geographical or historical, affords us any glimpse into the history of that land.* [Italics added]

Upendra Thakur, *Histoy of Mithila (From the earliest times to 1556 A.D.)*, 1956

0. सम्बोधन

अति आदरणीय अध्यक्ष महोदय, मञ्चस्थ महाजनलोकनि, आमंत्रित अतिथिगण, एवम् सम्पूर्ण मैथिली-भाषी मैथिलजन!

1. प्राक्कथन

मैथिली एसोसिएशन नेपाल, विराटनगरक तत्त्वावधानमे आयोजित एहि सतरहम अन्तर्राष्ट्रिय मैथिली सम्मेलनमे आमन्त्रण पाबि अत्यन्त प्रसन्नता भेल; आयोजकलोकनि धन्यवादार्ह थिकाह। अपनेलोकनिकेँ ज्ञात अछिए जे मैथिली भाषा संसारक चालिसम सर्वाधिक बाजएजाएवाला, नेपालक दोसर सर्वाधिक बाजएजाएवाला, ई. 2003सँ गणतंत्र भारतक संविधानक अष्टम् सूचीमे बीसम प्रमुख भारतीय भाषा रूपेँ प्रतिष्ठापित, ई. 2018सँ उत्तर भारतक झारखण्ड प्रदेशक दोसर सरकारी कामकाजक भाषा रूपेँ अभिमण्डित, एवम् भारत ओ नेपालमे जोड़िकए कुल 4 करोड़सँ बेसी जनसंख्याद्वारा बाजएजाएवाला एकगोट प्रतिष्ठित भाषा रूपेँ स्थापित अछि। जँ साँचेँ कही त' वर्तमानमे मैथिली नेपालक कुल जनसंख्यासँ बेसी जनद्वारा बाजएजाएवाला भाषा रूपेँ सगौरव विराजमान अछि। परञ्च अत्यन्त खेदक गप जे प्रदेश नं 1हुमे मैथिली-भाषीक कुल संख्या 5 लाख 7 हजार 275 होइतहु ओ प्रदेश नं 2मे 24 लाख 47 हजार 978 अर्थात् कुल जनसंख्याक 45.30% जनसंख्याद्वारा बाजएजाएवाला मैथिली भाषा (भाषा आयोग 2075) आन कोनहु वैज्ञानिक विकल्पक अनुपलब्धता होइतहु अद्यतन आधिकारिक रूपेँ प्रदेश नं 2क सरकारी कामकाजक भाषा घोषित भए राजकाजक भाषा रूपेँ प्रतिष्ठापित नहि भ' सकल अछि। आ भारतक बिहार राज्यमे त' एहिमादे कोनहु चर्च पर्यन्त नहि अछि।

निस्सन्देह मैथिली एकगोट प्राचीन एवम् समृद्धिशाली भाषा अछि। अपनेलोकनिकेँ इहो ज्ञात अछि जे मैथिली भाषाक प्राचीनतम कृति रूपेँ सिद्ध सन्तलोकनि-विरचित रहस्यवादी तांत्रिक पद्य-ग्रन्थ *चर्यागीति* (ई. 800-1100)क पाण्डुलिपि नेपाल राष्ट्रिय अभिलेखालय काठमाण्डूमे अद्यतन अनुरक्षित अछि। मुदा खेदक गप जे जेँ कि आइधरि कोनहु मैथिली-भाषी विद्वान एहि कृतिक पाण्डुलिपिक प्रतिकृति संगहि एकर समुचित ओ वैज्ञानिक मैथिली संस्करणक सम्पादन-प्रकाशन कार्य सम्पन्न करबाक प्रयत्न पर्यन्त नहि कएल, तेँ महामहोपाध्याय हर प्रसाद शास्त्रीद्वारा ई. 1907मे नेपालमे अन्वेषित/आविष्कृत ओ सुनीति कुमार चटर्जीक संगहि आन बंगाली विद्वानसभसँ समर्थित/अनुमोदित भेलाक कारणेँ एकरा बांगला भाषाक कृति घोषितकए एकर अनेकहु बांगला

संस्करण प्रकाशित भ' चुकल अछि – ततबहि नहि, नौर्वेक एकगोट अनुसन्धानकर्ता त' आँखि मुनि एकरा बांगला मानि एकर अङरेजी संस्करण पर्यन्त प्रकाशित कए चुकल छथि, देखू (Per Kværne 1977)। ओना हिनकासँ चारि वर्ष पूर्वहि बांगला भाषाक प्रसिद्ध विद्वान Nilratan Sen (1973: 'Preface', xiii) कहि गेल छथि जेः

Caryagitikosa is the earliest manuscript in all the NIA languages. Naturally, with Bengali, the major sister languages like Oriya-Assamese and Maithili have also put their claim on this rare book…in that respect, their claim cannot be rejected outright.

चारि वर्ष पश्चात् पुनश्च Nilratan Sen (ed. 1977: 'Introduction', xviii) कहलैन्हि जेः

During my recent visit to the National Archives of Nepal I had an opportunity to consult some traditional pundits working there as professional readers and scribes of old manuscripts.They identified its script as Old Newari. In their opinion the language of the songs is Maithili, and that of commentary is Sanskrit.

तहिना अपनेलोकनिकेँ इहो ज्ञात अछिए जे सिमरौनगढ़क अन्तिम राजा हरिसिंहदेवक राजपण्डित कविशेखराचार्य ज्योतिरीश्वरकृत *वर्णरत्नाकर* (Circa 1324) उत्तर भारत ओ नेपालक आर्यभाषाक प्राचीनतम गद्य-ग्रन्थरत्न रूपेँ सर्वप्रतिष्ठित अछि। ओना ओइ पारमे जाहि प्रवेग ओ सुनियोजित रूपेँ मैथिलीक प्राचीन अमूल्य निधिरूपी हस्तलिखित पाण्डुलिपिसभक लोप भ' रहल अछि ताहिमादे शशिनाथ झाक (सं. 1981: iii) मार्मिक कथन अत्यन्त मननीय अछिः

मैथिली साहित्यक ई दुर्भाग्य रहल अछि जे एकर प्राचीन-पोथी सभक मूल भोतिआयल जाय रहलैक अछि। *वर्णरत्नाकर*क मूल अप्राप्त, *तरौनी पदावली* बाबू नगेन्द्र गुप्त हेरओलनि, *रामभद्रपुर पदावली* सेहो नष्ट भेल ओ ई *रागतरङ्गिणी* लुप्त भ' गेल। केवल *नेपाल-पदावली* एखनहु नेपाल अभिलेखालयमे सुरक्षित अछि, सेहो ओ नेपालमे अछि तेँ बँचल अछि।

आ तहिना गोविन्द झा (2015: 51) अपन खेदपूर्ण क्षोभ व्यङ्गोक्तिसँ निम्नानुसार प्रगट कएलैन्हि अछिः

दोसर दिस संस्कृतज्ञ यूरोपीय विद्वान सभ भारत पहुँचलाह तँ एतए अमूल्य ग्रन्थ सभक अपार भंडार असुरक्षित अवस्था मे यत्र-तत्र छिड़िआएल देखि केँ सहसा लोभाए गेलाह आ जेना हो तेना बटोरि-बटोरि अपन ग्रन्थागार भरैत गेलाह। मिथिलाक म.म. पँचकौड़ी झा पाँच कौड़ी मे आ बंगालक सतकौड़ी मुखोपाध्याय सात कौड़ी मे अपन धरोहर बेचैत गेलाह।

अत्यन्त खेदक विषय ईहो जे पुरान अभिलेख/पाण्डुलिपिक अवलोकन पश्चात् देखना जाइत अछि जे प्रारम्भहिसँ मैथिली भाषाक नामहु स्थिर नहि भ' सकल-सन अवस्था विद्यमान अछि। ईष्ट इण्डिया कम्पनीक राज्यकालहिमे रोमन लिपिमे लिखल अङरेजी भाषाक माध्यमेँ प्रकाशित प्राचीनतम आलेखमे Henry Thomas Colebrooke (1801: 225) एहि भाषाकेँ ''मैथिल/तिरहुतीय'' कहि सम्बोधित कएने छथिः

MAIT'HILA, or *Tirhutiya*, is the language used in *Mithila*, that is, in the *Sircar* of *Tirhut*, and in some adjoining districts, limited however by the rivers *Cusi (Causici)* and *Gandhac (Ghandhaci,)* and by the mountains of Nepal…

पुनश्च Henry Thomas Colebrooke (1807) अमरसिंह-विरचित विश्वप्रसिद्ध कृति *अमरकोष*मे उपलब्ध भारतक अन्यान्य बारहगोट भाषासहित **मिथिलाभाषा** अर्थात् **मैथिली**अहुक कुल 370 पर्यायी शब्दसभक संकलन कएलैन्हि – जकर देवनागरी लिपिमे हस्तलिखित पाण्डुलिपि ब्रिटिश लाइब्रेरी, लन्दनमे अनुरक्षित तथा अद्यतन अप्रकाशित अछि – सौभाग्यवश एकर आधिकारिक प्रतिलिपि हमरा लग सेहो अछि एवम् एहिमादे हमर अनुसन्धान गतिमान अछि। तत्पश्चात् ईष्ट इण्डिया कम्पनीक एकगोट वफादार नोकर एवम् अनन्य मैथिली-सेवक Francis Buchanan (1810) द्वारा विरचित एवम् ब्रिटिश लाइब्रेरी, लन्दनमे अनुरक्षित तथा अद्यतन अप्रकाशित एकगोट तुलनात्मक शब्दसंग्रहक पाण्डुलिपिमे एहि भाषाक नाम देवनागरी लिपिमे तीनि तरहेँ अर्थात् **मिथिला, मैथिल** तथा **मीथीला** कहि, गाँव-गाँवमे ब्राह्मण जातिक मैथिली-भाषी ज्ञापक पठाए, क्षेत्रानुसन्धान कए, कुल 1759 मूल प्रविष्टि संग (सूक्ष्म गवेषणा पश्चात् कुल प्रविष्टि 1566 मात्र सिद्ध होइत अछि) अन्यान्य आठ भाषासहित मैथिली भाषाक पहिल शब्द-संग्रह प्रस्तुत कएल गेल अछि। सौभाग्यवश एहू पाण्डुलिपिक आधिकारिक प्रतिलिपि हमरा लग अछि एवम् एहिमादे हमर अनुसन्धान कृति शीघ्र प्रकाश्य अछिः विस्तृत विवरणहेतु देखू (यादव 2020, Yadav 2021 Forthcoming)। सत्तैरि वर्ष पछाति, S.W. Fallon (1879) अपन हिन्दुस्तानी-अंग्रेजी शब्दकोशमे एहि भाषाकेँ **तिरहुती** कहि अनेकहु मैथिली शब्द ओ प्रचलित मुहावरा/लोकोक्तिक उद्धरण सोदाहरण प्रस्तुत कएने छथि (देखू गोविन्द झा 2010)। मोन पड़ैत अछि एहि शब्दकोशमे उद्धृत एकगोट अति प्रचलित लोकोक्तिः ***नान्हिटा टुइयाँ पटकि देल भुइयाँ, टूटे न फाटे बाह बाह रे टुइयाँ***। ई त' भेल फिरिंगीसभक कथाः स्मरणीय जे आखिर ओलोकनि कोनहु ब्राह्मण पण्डित-ज्ञापकक सूचनाक आधारेँ एहि नामसभक चयन कएने होएताह। आब सुनू मैथिली-भाषी संस्कृतज्ञ ब्राह्मण विद्वानसभक कथा। चन्दा झा (जन्म 1831) अपन अमर ग्रन्थक शीर्षक रखलैन्हि ***मिथिला-भाषा रामायण***। तहिना, ईष्ट इण्डिया कम्पनीक राज्यकालहिमे मैथिलीक पहिल मैथिली-भाषी तुलनात्मक शब्दसंग्रहकार भव नाथ मिश्र (1914) **मिथिलाभाषा**, हिन्दी, संस्कृत भाषाक त्रैभाषिक शब्दसंग्रह, ***मिथिला शब्द प्रकाशः***,

राखि काशीसँ प्रकाशित कएलैन्हि। तकर 10 वर्ष पश्चात् मैथिली-भाषी संस्कृतज्ञ मुकुन्द झा (1924) तँ आओरो एक डेग आगाँ बढ़ि अमरसिंहकृत *अमरकोष*क विलक्षण **मैथिलभाषा** अनुवाद ***अमरमैथिलभाषाविवृति*** शीर्षक अन्तर्गत कएलैन्हि, आ तकर बाइस वर्ष पछाति मैथिलीक पाणिनि दीनबन्धु झा (1946) अपन अप्रतिम मैथिली व्याकरणक शीर्षक रखलैन्हि ***मिथिला-भाषा विद्योतन*** आ मैथिलीक पहिल मैथिली-भाषी पूर्ण शब्दकोशकार दीनबन्धु झा (1950)क मैथिली-मैथिली शब्दकोश ग्रन्थ-रत्नहुक नाम पर्यन्त पड़ल ***मिथिलाभाषाकोष***। ओना ईष्ट इण्डिया कम्पनीक फिरिंगी निजामती कर्मचारी George Abraham Grierson (1881b) पहिल एहन भाषाविद् भेलाह जनिक विश्वविख्यात मैथिली व्याकरणक प्रकाशनक पश्चातहि बुझू जे एहि भाषाक नाम **मैथिली** रूपेँ स्थिर भेल, सुदृढ़ भेल - ओना प्रारम्भमे ग्रिअर्सनहु हुसि गेल छलाह एहि भाषाक अनौचित्यपूर्ण नाम **बिहारी** राखि।

ताहि हेतुएँ, हमर विनम्र आग्रह जे प्रशस्त विलम्ब आ अनन्त हानि पर्यन्त भ' चुकल अछि, आबहु मैथिलीक हितार्थ एकर एकहिगोट आ स्थिर नाम **मैथिली** रहओ, आन कोनहु नहि - जाहिसँ वैश्विक स्तरपर भाषाशास्त्री ओ अन्वेषकलोकनिकेँ असौकर्य नहि होइन्हि।

एकगोट आओरो खेदक गप। एखनहु यत्र-तत्र सर्वत्र, आ एहूठाम, अनेकहु अति उत्साही मैथिली-अभियानीलोकनि 'मैथिली' शब्दक उच्चारण हिन्दी भाषाक **है** मे प्रयुक्त स्वर/सन्ध्यक्षरसँ प्रभावित वा कहू जे कुप्रभावित भए ***मएथिली** ***Maethili** रूपेँ कए गौरवान्वित होइत छथि, **मैथिली** **Maithili** रूपेँ नहि। ओना आब एकर वर्तनी **मैथिली** रूपेँ स्थिर भ' चुकल अछि। तेँ हमर विनम्र निवेदन जे मैथिली भाषाक निजत्त्व ओ अस्मिताक रक्षार्थ अपनेलोकनि एकर नामक उच्चारण सगौरव **मैथिली** रूपेँ करी, अन्यथा नहि, अर्थात् ***मएथिली** रूपेँ कथमपि नहि।

जेना एतबा कहब मात्र प्रशस्त नहि होअए विराटनगर प्रस्थान करबासँ किछुए दिन पूर्व नेपालक एकगोट गैरसरकारी टेलिभिजनपर मैथिली भाषामे समाचार वाचन करएवाला उत्साही युवक जिज्ञासा करैत पुछलैन्हिः 'सर, हमर गैरमैथिली-भाषी अधिकारीगण ओ मैथिली भाषाक प्रजातान्त्रीकरण करबाक अभियानीलोकनि पर्यन्त हमरा ***मएथली** भाषामे समाचार सुनू कहबाकलेल बाध्य कए रहल छथि, हम की करू।' हम हुनका की कहने होएबैन्हि से अहीँ बुझू, हम अपना मुहेँ किछु नहि कहब। ततबहि नहि, आश्चर्यक गप जे एम्हर आबि नेपालक अधिकांश राई-किराती जनजाति-भाषावैज्ञानिकलोकनि हमरा ईमेलमे अङरेजीमे लिखल अपन अनेकहु आलेखक PDF पठाबि रहल छथि जाहिमे **मैथिली** भाषाकेँ बेहिचक ***मैथली** ***Maithali** लिखि वर्णित/चर्चित कएल गेल पाओल जाइत अछि। भगवान हिनकासभकेँ सद्बुद्धि देइन्हि।

2. मैथिलीक संकट

किछु साल पूर्वधरि जनकपुरक अनेकहु प्रबुद्धलोकनि हमरा फोनसँ बरोबरि प्रदेश 2मे कुल **8 हजार 625** अर्थात् **0.16%** बाजएजाएवाला भाषा **हिन्दी** (विशेषक' अवस्तरीय बिहारी हिन्दी) ओ **हिन्दी साम्राज्यवाद** ताहि प्रदेशमे सर्वाधिक बाजएजाएवाला मैथिलीकेँ दबोचि देतैक कहि गम्भीर चिन्ता व्यक्त करैत छलाह। हम जनकपुर जाए एहने एकगोट सम्मेलनमे आ ताहि ठामक एकगोट टेलिभिजन-अन्तर्वार्तामे पर्यन्त दुहु भाषाक निजत्त्व ओ भिन्न-भिन्न प्रयोजनद' अपन स्वस्थ विचारक निरूपण पर्यन्त कएल। आब एकाएक एहन प्रश्न नहि आबि रहल अछि। ओना सुना दी जे हालहि पटना शरहमे 11-11-2019क' भेल अत्यन्त हार्दिक व्यक्तिगत वार्तालापमे मैथिली भाषाविज्ञानक शिखर पुरुष 98 वर्षक पं गोविन्द झा अत्यन्त दुखित मनेँ क्षोभ प्रगट कएलैन्हि जे जाहि भाषाक सेवामे जनम अवधि गवाँओल से भाषा (अर्थात् हिन्दी) स्वयं भाषा-क्षयक एवम् **English Imperialism**क प्रबल शिकार भ' चुकल अछि। पटनासँ काठमांडू लौटि अएला पश्चात् ज्ञात भेल जे ताही दिन गोविन्द झासँ हस्तगत भेल अनेकहु मूल्यवान ग्रन्थरत्नमध्य ***सात रेखा सात रंग*** नामक पुस्तकमे सन्निहित 'भारतभारतीक खोजपुछारी' शीर्षकक आलेखमे पाँच वर्ष पूर्वहि गोविन्द झा (2015: 54) एहि आशयक अपन निराशाजनक मन्तव्य व्यक्त कए चुकल छलाह - जे अपनेलोकनिक अवगतार्थ निचाँ उद्धृत अछिः

...जाहि हिन्दी के हम आ हमर लाख-लाख बन्धु अपन माथक रस आ हाथक बल सँ पोसि-पोसि कें समर्थ बनाओल से आइ हमर आँखिक समक्ष अङरेजीक सुनाम कि कुनाम मे तिल-तिल कए गलल जाए रहल अछि।

तेँ *'छन्दस'*सँ अकस्मात कहाओल *'संस्कृत'* देवभाषाक, एवम् *'हिन्दवी'*सँ अवतरित तथा भारत देशक राष्ट्रभाषा *'हिन्दी'* भाषाद्वयक जँ ई गति अछि तँ *'मिथिलाभाषा'*सँ नव अवतारमे प्रतिस्थापित होएबाक क्रममे रहल आ बिहार राज्यक सरकारी कामकाजक भाषा पर्यन्त नहि भ' सकल *'मैथिली'* भाषाक तँ कथे कोन।

मैथिली भाषाक स्वतंत्र सत्ता ओ निजत्त्व मादे तथा हिन्दी ओ मैथिलीक विषम भाषिक पार्थक्क्यद' नभेम्बर 28, 1999क' प्रस्तुत Maharajadhiraja Kameshwar Singh Memorial Lecture अन्तर्गत वाचित अभिभाषणमे हम (Yadav 2000) सविस्तर विवेचन करैत आइसँ एक सय अड़तीस वर्ष पूर्वहि आधिकारिकताकसंग प्रगट कएल गेल George Abraham Grierson महोदयक वैदुष्यपूर्ण सम्मतिदिसि विद्वज्जनक ध्यानाकर्षण कएल छल जे निचाँ उद्धृत कएल गेल अछि :

The native language of every Bihari…is as different from Hindi as French is from Italian…but it [Hindi] is not, never was, and never can be the vernacular of Bihar. History and the laws of philology alike decide

against it, and experience has shown how Norman French never became the vernacular of England. (Grierson 1881a, 'Peface', v-vi)

आ तहिना मैथिलीक पृथक व्याकरणगत पद्धति ओ स्वतंत्र सत्तामादे हालहि गोविन्द झाकृत *वेद सँ लोक धरि* (2016: 86) नामक कृशकाय परंच अति गम्भीर ग्रन्थमे हुनक कहब निम्नानुसार छैन्हिः क्रियापदक रूप भूत काल तीनू पुरुष, तीनू बचन आ लिङ्मे अङरेजीमे केवल एक होइछ – *वेन्ट*। हिन्दीमे चारि – *गया, गयी गये और गयीं* । आ मैथिलीमे? केवल मानक रूप बीस गोट।

एहिमादे एखन एतबहि। ओना जाइत-जाइत एतबाधरि कहि दी जे मैथिली भाषाक जटिल क्रियापदक वस्तुगत ओ समाजभाषावैज्ञानिक वर्णन-विश्लेषण कार्यमे दीनबन्धु झा ओ सुभद्र झासन उद्भट्ट विद्वानसभक गत भ' गेलाक पश्चातहु गोविन्द झा, रामावतार यादव, योगेन्द्र यादव प्रभृति अनुसन्धातालोकनि एहिमादे अद्यतन क्रियाशील छथिए।

तत्पश्चात्, पुनश्च जनकपुरक अनेकहु साकांक्ष प्रबुद्धजन फोनपर मैथिली ओ **मगही** भाषाक – जे एकगोट विकसित भाषा भए उत्तर भारतक झारखण्ड प्रदेशक सरकारी कामकाजक प्रमुख भाषा होइतहु प्रदेश 2मे कुल **31 हजार 049** व्यक्तिद्वारा मात्र बाजल जाइत अछि – निकट वा कहू जे विकट सम्बन्धद' हमरा अपन सुदृढ़ विचार प्रस्तुत करबाक आग्रह कएलैन्हि। हुनकालोकनिकेँ अनुगृहित करैत हम जनकपुर जाए एकगोट सम्मेलनमे जे बाजल आ एकगोट स्थानीय F. M. Radio अन्तर्वार्तामे जे कहल तकर सार-सारांश एतए संक्षेपमे प्रस्तुत अछि। मूलभूत रूपेँ वा कहू जे सूत्रवत् दूगोट तथ्य दृष्टिपथपर आएलः **एक** मगही दक्षिण बिहारक नवादा, गया, शेखपुर, नालन्दा, पटना, जहानाबाद, औरंगाबाद, जमुई आदि जिलाक संगहि पश्चिम बंगाल क्षेत्र, ओ झारखण्डक त' प्रमुख सरकारी भाषा रूपेँ अनुमानतः 1 करोड़ 40 लाख जनसमुदायद्वारा बाजलजाएवाला एकगोट समृद्ध भाषा अछि– परंच प्रदेश नं. 2मे बाजलजाएवाला तथाकथित मगही परस्पर भाषिक बोधगम्यता भेलासन्ताँ निस्सन्देह मैथिलीएक एकगोट औपभाषिक स्वरूप अछिः **दुइ**, किछु अति संकीर्ण वा कहू जे संकुचित विचारधारावाला मैथिली-भाषी जनद्वारा जातिगत अहंकार वा भ्रमवशात् अपना मैथिलीकेँ उच्चस्तरीय वा मानक बूझि आन जनद्वारा बाजलजाएवाला मैथिलीकेँ अवस्तरीय/निम्नस्तरीय वा ठेँठ घोषित करबाक आम परिपाटीक कारणहि ताहि अपमानसँ विमुख होएबाक प्रयोजनेँ एवम् अपन निजत्त्वक रक्षार्थ किछु जन अपना भाषाकेँ मगही कहि सम्बोधित करबाकहेतु बाध्य पर्यन्त भ' रहल छथि। एहि कुसंस्कारक निवारण पश्चातहि मैथिलीक दुरवस्थामे सुधार आओत एवम् मैथिली भाषा पुनः सगौरव सुसंस्कृत होएत – से हमर विश्वस्त धारणा अछि।

ताहि हेतुएँ, हमरा मतेँ, मैथिलीकेँ ने हिन्दीक प्रकोपसँ आ ने त' मगहीक पार्थक्य-भावसँ पीड़ित होएबाक अवस्था विद्यमान अछि। मैथिली अपना घरहिमे दू फाँक अछि। एकरा समग्र होमहि पड़तैक। समस्त मैथिली-भाषी मैथिल बीच जन-जुड़ावक संगहि गहन सहिष्णुता, असीम सौहार्द, घनीभूत सद्भाव, ओ हार्दिक सामंजस्यक प्रशस्त खगता अछि। तहिना, मैथिली-भाषीक दैनन्दिन जन-जीवनमे मैथिली भाषाक प्रयोगमे तीव्र ह्रास वा कहू जे प्रयोगशून्यताक जे विकराल अवस्थिति देखना जाइत अछि से एकगोट घोर संकटक परिलक्षण अछि। एकटा आनहि परिवेशमे मुदा एहीसँ जुड़ल विषयद' आइसँ 27 वर्ष पूर्वहि नेपालक मैथिली-भाषीक निरीहता वा कहू जे दुरवस्था देखि हम (Yadav 1992: 198) कहल छल जे एकगोट मैथिली-भाषी युवा "…makes love in Maithili, discusses politics and resents discrimination in Hindi, makes an application for a job in Nepali and does research on laser beam in English." आब तँ लगैत अछि जे सम्भवतः ओ युवा अपन प्रेयसीसँ प्रेमालाप पर्यन्त अङरेजीएमे "Darling, I love you so" कहि करैत हेताह। शेष भगवाने जानथु।

३. अपसंहार

अन्ततः, दू मास पूर्वहि विराटनगर सम्मेलनक आयोजकलोकनि हमरा ब्राह्मणेतर-भाषिकाक विविध पक्षदिसि केन्द्रितभए अपन आलेख प्रस्तुत करबाक आग्रह कएलैन्हि। प्रयोजन ओलोकनि स्वयं बुझताह। अपनेलोकनिकेँ संभवतः ज्ञात होएत जे हम मैथिलीक भाषिक वैविध्य, विशेषतः ब्राह्मण-भाषिका ओ ब्राह्मणेतर-भाषिकाक रूपिमगत विलक्षणताद' सविस्तर 20 वर्ष पूर्वहि लिखि चुकल छी (देखू यादव 1998/1999)। आजुक कार्यक्रममे हम एहि विषयमादे आन विद्वज्जनक प्रस्तुति/सम्मति जानबाकहेतु उद्यत छी, आतुर छी। ताहि हेतुएँ एखन हम विद्यापतिकालीन साहित्य पश्चात् मानक ब्राह्मण-भाषिकाक क्रियापदमे कर्त्ता ओ कर्म कारक, काल, पुरुष ओ कक्ष, तथा क्रियामे पदसंगतिक संगहि बहुल रूपेँ अकस्मात् आएल आदरार्थीसूचक अवयवसभक ऐतिहासिक तथा समाजभाषावैज्ञानिक व्युत्पत्तिमादे संक्षेपमे अपनेलोकनिक ध्यानाकर्षण करए चाहब (ओना देखू गोविन्द झा 2016a) – जे विषय वर्तमानमे संसारभरिक आर्यभाषा-भाषावैज्ञानिकसभकलेल एकगोट शोधपूर्ण गवेषणाक विषय बनि गेल अछि। एहि मादे नभेम्बर 26, 2019क कीर्तिपुर, काठमाण्डूमे आयोजित Linguistic Society of Nepalक 40म वार्षिक सम्मेलनमे प्रस्तुत Keynote भाषणमे हम जे अपन पूर्व प्रकाशित अध्यर्थन/सिद्धान्त प्रगट कएल तकर उद्धरण अपनेलोकनिक अवगतार्थ निचाँ प्रस्तुत अछिः

The question is: how is it that in works produced by kings and their priest-scholars in the Nepal Valley a codification of a complex verbal morphology occurred? The answer to the question may be had in

the sociology of language use. During 16th to 18th centuries, Maithili was a court language, a language of royal communication, a language of prestige and high esteem, and at the same time it was a robust and potent means of literary expression in the Nepalamandala. Maithili was being used in the royal courts of the Malla kings of Nepal under highly formal and even formulaic circumstances by elites and courtiers of varying cadre and status. No wonder an element of highly codified form of deference and courtesy and honor was superimposed on the verbal bases in order to distinctly stratify the status of members of the royal court vis-à-vis other users/consumers of this language. Maithili was after all a language of kings and queens, of princes and princesses, of elites and courtiers, and of high priests and scholarly pundits. This perforce led to emergence of an immaculate form of language 'fit' to suit the royal purposes, while, at the same time, probably less dignified varieties, i.e. collopuial varieties of Maithili coexisted elsewhere in Nepal and India. (Yadav ed. 2011: 66-67)

चोट्टहि, ताहि सम्मेलनक एक आन सत्रमे, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्लीसँ आएल एकगोट बंगाली विद्वान भाषाशास्त्री मित्र, प्रो. डा. तन्मय भट्टाचार्य, अपन पत्र-वाचन कालमे नेपालमे कएल गेल हमर अनुसन्धानक निष्कर्षसँ निसृत अध्यर्थन वा सिद्धान्तक सन्दर्भ अनेकहु बेरि प्रस्तुत करैत तथा पूर्वमे बेर्लिन-न्यूयौर्कसँ प्रकाशित हमर मैथिली व्याकरणसँ (Yadav 1996) अनेकहु दृष्टान्त-वाक्य उद्धृत करैत एकगोट आन संभाव्य तथ्यदिसि सेहो संकेत कएलैन्हिः ओ ई जे संभवतः उत्तर-पूर्वी भारतक मुण्डा परिवारक भाषा, यथा खड़िया ओ सन्थाली आदि भाषासँ भूतकालमे मैथिली भाषाक सम्पर्क ओ सान्निध्यक कारणेँ ई आदरार्थीक संगहि आन-आन अवयवसभक आगमन भेल होअए। **एहिमादे हम भारतीय मैथिली-भाषावैज्ञानिक विद्वानसभकेँ खोजपूर्ण गवेषणा करबाक आग्रह करबैन्हि।** ततःपर गपसपक क्रमे इहो घमर्थन भेल जे युरोपिअन, विशेषतः जर्मन, आर्यभाषा-भाषावैज्ञानिकलोकनिक मतेँ मैथिलीक क्रियापदमे जटिल आदरार्थी आदि अवयवसभक आगमन संभवतः नेपालक तिब्बती-बर्मेली भाषा परिवारक, विशेषतः राइ-किराती भाषासभक, सम्पर्क ओ सान्निध्यक कारणेँ भेल होअए। निष्कर्ष ई जे वर्तमानमे एहि सतरहम अन्तर्राष्ट्रिय मैथिली सम्मेलनमे अपनेलोकनिक अभीप्सित इष्ट भलहि मैथिली भाषाक तथाकथित मानक अर्थात् ब्राह्मण-भाषिकाक जटिलता ओ ब्राह्मणेतर-भाषिकाक रूपिमगत विलक्षणतादिसि केन्द्रित होअओ, परञ्च विशुद्ध भाषावैज्ञानिकलोकनिक चिन्ताक/अनुसन्धानक मूल विषय थिक विद्यापति काल पश्चात् एकाएक ब्राह्मण-भाषिकाक क्रियापदमे जुटल प्रचुर एवम् बहुल आदरार्थी ओ सार्वनामिक अवयवसभक ऐतिहासिक व्युत्पत्तिक समाजभाषावैज्ञानिक कारण/व्याख्या ओ तकर संभावित सम्पर्क-काल ओ आगमन-काल निर्धारण।

आगमन-काल निर्धारणसँ मन पड़ैत अछि जे आइसँ 15 वर्ष पूर्वहि मैथिली भाषा-साहित्यक कुल 1100 वर्षक प्रकाशित/अप्रकाशित अभिलेखीय सामग्रीसभक सूक्ष्म गवेषणा पश्चात् हम ई निष्कर्ष निसृत करवामे समर्थ भेल छलहुँ जे आधुनिक मैथिलीक पूर्वकालिक क्रिया **-क'** (यथा *उठिक', हँसिक'*, आदि) प्रथम बेरि मैथिलीक लिखित साहित्यमे विद्यापतिक अवहट्ठ अपभ्रंशमे लिखित *कीर्त्तिलतामे -कहुँ* वा *-कहु* पूर्वरूपेँ ई. 1406मे प्रवेश कएलक– जँ रमानाथ झाक (Ramanath Jha 1972: 26) *कीर्त्तिलताक* रचना-कालनिर्धारण विश्वसनीय छैन्हि (देखू Yadav 2004, यादव 2005)।

आइ एतबहि। शेष सुधीजन बुझताह।

धन्यवाद।

सन्दर्भ सूची

झा, गोविन्द 2010 ''अन्हारमे ठाढ़ एकटा यूरोपिअन मैथिली भक्त,'' **मे**ः झा, गोविन्द (2010) *अनुचिन्तन*, पटनाः नवारंभ, पृ. 7-11।

झा, गोविन्द 2015 *सात रेखा सात रंग*, सरिसब-पाही-मधुबनीः साहित्यिकी।

झा, गोविन्द 2016a ''मैथिली क्रियापद-रूपावलीक मूलान्वेषण,'' *मिथिला-भारती* (पटना) 3: 1-4, पृ. 109-112।

झा, गोविन्द 2016b *वेद सँ लोक धरि*, झंझारपुर-मधुबनीः ब्राह्मी प्रकाशन।

झा, दीनबन्धु 1946 *मिथिला-भाषा विद्योतन*, दड़िभंगाः मैथिली साहित्य परिषद।

झा, दीनबन्धु 1950 *मिथिलाभाषाकोष*, इसहपुरः दीनबन्धु झा।

झा, शशिनाथ (सं. 1981) *लोचनकृता रागतरङ्गिणी*, पटनाः मैथिली अकादमी।

मुकुन्द झा 1924 *अमरमैथिलभाषाविवृति*, मधुबनीः मैथिली यन्त्रालय।

भाषा आयोग *2075 प्रदेश तथा स्थानीय तहको भाषिक तथ्याङ्क 2075*, काठमाडौं।

मिश्र, भव नाथ 1914 *मिथिला शब्द प्रकाश*:, काशीः श्री भूपालचन्द्र वन्दोपाध्याय।

यादव, रामावतार 1998 ''मैथिलीक भाषिक वैविध्यः औपभाषिक ओ मानक स्वरूप,'' *सयपत्री* (नेपाल राजकीय प्रज्ञा-प्रतिष्ठान): 4, पृ. 34-50। *जिज्ञासा* (रौंटी, मधुबनी) 4: 6, 1999, पृ. 73-89मे सेहो प्रकाशित।

यादव, रामावतार 2005 ''मैथिलीक पूर्वकालिक क्रियाः ऐतिहासिक-भाषावैज्ञानिक वर्णन-विश्लेषण,'' *आङन* (नेपाल राजकीय प्रज्ञा-प्रतिष्ठान): 1, 11-26। यादव (2016), पृ. 109-139मे सेहो प्रकाशित।

यादव, रामावतार 2016 *मैथिली आलेख सञ्चयन (1989-2015)*, जनकपुरधामः मैथिली विकास कोष।

यादव, रामावतार 2020 ''कखनहु आठ-अठटा कहारवाला पालकीमे बैसल त' कखनहु हौदा-कसल हाथीपर सवार एकगोट फिरिङ्गी मैथिली-सेवकः संक्षिप्त जीवनवृत्त,'' *अनुप्रास* (मधुबनी, बिहार, भारत) 2: 2, 3-6।

Buchanan, Francis 1810 *Comparative Vocabularies* (of Maithili and 8 other Languages). MSS EU G 16, India Office Records, British Library, London

Colebrooke, Henry Thomas 1801 'On the Sanscrit and Pracrit languages,' *Asiatick Researches:* 7, 199-231.

Colebrooke, Henry Thomas 1807 *APAC MSS IO/ San.156-157.* Asian, Pacific and African Collections, British Library, London, MS

Fallon, S. W. 1879 A New *Hindustani-English Dictionary with Illustrations from Hindustani Literature and Folklore*, Banaras & London: E. J. Lazarus & Truebner.

Grierson, George Abraham 1881a A *Handbook to the Kaithi Character*, Calcutta: Thacker, Spink & Co.

Grierson, George Abraham 1881b *An Introduction to the Maithili Language of North Bihar, Part I, 'Grammar'*, Calcutta: Asiatic Society of Bengal.

Jha, Hetukar (ed. 2007) *India: Some Crucial Questions,* Darbhanga: Maharajadhiraja Kameshwar Singh Memorial Lecture Series-2.

Jha, Ramanath 1972 *Vidyapati*, New Delhi: Sahitya Akademi.

Kværne, Per 1977 An *Anthology of Buddhist Tantric Songs: A Study of the Caryagiti*, Oslo-Bergen-Tromsø: Der Norske Videnskaps-Akademi. [Re-published by Orchid Press in Bangkok, Thailand in 2010]

Sen, Nilratan 1973 *Early Eastern New Indo-Aryan Versification:A Prosodical Study of Caryagitikosa*, Simla: Indian Institute of Advanced Study.

Sen, Nilratan (ed. 1977) *Caryagitikosa: Facsimile Edition,* Simla: Indian Institute of Advanced Study.

Stump, Gregory T. & Ramawatar Yadav 1988 "Maithili Verb agreement and the Control Agreement Principle," In: *Chica*go *Linguistic Society Parasession on Agreement in Grammatical Theory* (USA) 24: 2, 304-321.

Yadav, Ramawatar 1992 "The use of the mother tongue in primary education: The Nepalese context," *Contributions to Nepalese Studies* 19: 2, 177-190.

Yadav, Ramawatar 1996 *A Reference Grammar of Maithili* (Trends in Linguistics: Documentation 11), Berlin & New York: Mouton de Gruyter.
[An Indian edition was published by Munshiram Manoharlal in New Delhi In 1997]

Yadav, Ramawatar 2000 "Maithili linguistic research: State-of-the-art," *Contributions to Nepalese Studies 27:* 1, 71-87.
[Also published in Hetukar Jha (ed. 2007), pp. 179-200]

Yadav, Ramawatar 2003 "Maithili," In: Cardona, George & Dhanesh Jain (eds. 2003) *The Indo-Aryan Languages*, London & New York: Routledge, pp. 470-490.
[Also to be re-printed in Vibha Chauhan (ed. 2020) *The Languages of Bihar*, Delhi: Orient BlackSwan]

Yadav, Ramawatar 2004 "On diachronic origins of converbs in Maithili," *Contributions to Nepalese Studies*, Vol. 31: No. 2, pp. 215-241.

Yadav, Ramawatar (ed. 2011) *A Facsimile Edition of a Maithili Play: Bhupatindramalla's Parsuramopakhyana-nataka,* Kathmandu: India-Nepal B. P. Koirala Foundation.

Yadav, Ramawatar 2017 "A letter to pt. Govind Jha from Dr. Ramawatar Yadav on a[n] article published in *Mithila-Bharati*, Vol. 3," *Mithila-Bharati* (Patna) Vol. 4, No. 1-4, pp. 189-191.

Yadav, Ramawatar (ed. 2018) *Elegy Written in a Royal Courtyard: A Facsimile Edition of Jagatprakasamalla's Gitapancaka*, New Delhi: Adroit Publishers.

Yadav, Ramawatar (ed. 2021, **Forthcoming**) *Historiography of Maithili Lexicography & Francis Buchanan's* ***Comparative Vocabularies***: *Facsimile Edition of the British Library, London Manuscript*, Darbhanga: Maharajadhiraja Kameshwar Singh Kalyani Foundation, Kameshwar Singh Bihar Heritage Series-23.

•

तकनिकी कारणेँ डाइक्रिटिकल चिन्हक प्रयोग नहि कएल गेल अछि।
– सम्पादक

सुकान्त सोम

पटना, बिहार

प्रखर पत्रकार, कवि, समीक्षक, सम्पादक, गम्भीर वक्ता आ चिन्तकक रूपमे सुकान्त नागार्जुनक नाम मैथिली साहित्याकाशमे बहुत आदरक संग लेल जाइत अछि। निर्भीक पत्रकारिता ओ साहित्यकारिताक पक्षधर सुकान्त जी दूरदर्शी राजनीतिक विश्लेषक सेहो छलाह। साहित्यक संगहि समाज-पठनक विराट क्षितिज छलनि हुनक। मैथिलीक आधुनिक कविता आ आधुनिक मैथिली साहित्यक अनिवार्य नाम सुकान्त जी 'निज संवाददाता द्वारा' (कविता संग्रह) आ 'हरि कथा अनंता' (उपन्यास)क रचनाकार, विराट मिथिलाक आग्रही चिन्तक, मैथिलीक आधुनिक कवितामे जनपक्षक ख्यात कवि आब हमरा सभक बीच नहि छथि। मुदा हिनक रचना-संसार अछि जे सदति एकटा सार्थक दिशा देखबैत अछि।

दीप ना. अनुप्रासक मेल पर आलेख पठा देलहुँ अछि। पत्रिका छपि जाए तँ हमरा दू प्रति पठा देब— फोन परहक ओ स्वर एखनो कानमे गुंजि उठै-ए। अहाँक लेल श्रद्धाञ्जलि लिखब हमरा सामर्थ्यसँ बाहर अछि। एहि आलेखक माध्यमसँ हमर अंतिम प्रणाम स्वीकार करू...

अही बाट पर चलि बचतीह मैथिली

एकटा समाचार बाबू-भइया लोकनिमे खूबे चर्चामे आबि गेलए- पटना विश्वविद्यालयक कॉलेज सभकेँ मैथिली पढ़निहार छात्र नहि भेटि रहल छै। पटना विश्वविद्यालयक तीन गोट प्रमुख कॉलेज (पटना कॉलेज, बीएन कॉलेज आ मगध महिला कॉलेज)मे मैथिली प्रतिष्ठामे एहि बेर एक्कोटा नामंकन नहि भेलए। अर्थात् मैथिली पढ़ेवला छात्रक अभाव भ' गेल छै। सोशल मीडिया पर एकरा ल' क' किछु प्रबुद्ध बाबू-भइया लोकनि बेस कलम भाँजि रहल छथि— मैथिलीक एहि अभाग पर नोरे-झोरे कानि रहल छथि। मुदा ई पहिल घटना नहि थिकै, पहिनो ऐना भेलइए। परंच की ई स्थिति पटना विश्वविद्यालयटामे छै? एलएन मिथिला विवि, बीआरए बिहार विवि, बीएनमंडल विवि, टीएम भागलपुर विवि, मगध विवि, वीर कुँवर सिंह विवि,जयप्रकाश विवि सन पुरान आ पाटलिपुत्र विवि, पूर्णिया विवि ओ मुँगेर विवि सन नव विश्वविद्यालय सभकेँ अंडर ग्रेजुएट- विशेष रूपसँ प्रतिष्ठा- पाठ्यक्रममे मैथिलीक छात्र भेटि रहल छै की? की ओ सभ मैथिलीक एहि विपन्नतासँ मुक्त अछि? आ से अछि त' कोन स्तर धरि- आंशिक किंवा पूर्णतः? की प्रदेशक विवि सभमे स्नातकोत्तर शिक्षामे मैथिलीक स्थिति एहिसँ भिन्न छै? सोशल मीडिया पर एहि मादे कलम भजनिहार बाबू-भइया लोकनि किछु नहि कहि रहल छथि। वस्तुतः एहि प्रश्नक उतारामे सामान्यतः ई कहल जा सकइए जे गंगाक उत्तर स्थित विश्वविद्यालय सभमे जयप्रकश विवकेँ छोड़ि आन सभठामक हालत अपेक्षा त' नीके कहबै। मुदा गंगाक दक्षिणक स्थित विश्वविद्यालयसभमे यूजी मैथिली पाठ्यक्रममे किछु कॉलेजकेँ छोड़ि दी ते छात्रक उपलब्धता शून्ये जकाँ अछि। आ स्नातकोत्तर (पीजी)मे मैथिलीक स्थिति त' आरो खराब अछि। एहि लेल त' उत्तर बिहराक मिथिलाँचलक रूपमे दावा करएवला क्षेत्रसभमे स्थित विश्वविद्यालयसभमे सेहो छात्रक अभाव छै। व्यक्तिगत तौर पर किछु विविक मादे हमरा जानकारी अछि जत' एहि शताब्दीक आरंभिक वर्षहिसँ स्नातकोत्तरमे छात्र नहि उपलब्ध होइत रहलइए। ओना इहो तथ्य छै जे सभ विश्वविद्यालयमे भाषा-साहित्यक छात्रक अभाव रहलइए। जेना-जेना तकनीकी-व्यावसायिक शिक्षाक विकास आ विस्तार होइत गेलै, भाषा साहित्यक स्नातकोत्तर विभागसभमे छात्रक संख्या घटैत गेलइए। मुदा किछु भाषाकेँ छोड़ि दी त' यूजी कोर्समे भाषा साहित्य विषयमे छात्रक संख्या सामान्यतः शून्य त' नहिए रहइ छै। तैँ, मैथिलीक ई स्थिति विचारक अपेक्षा त' रखिते अछि। एहि मादे सोचल जएबाक चाही जे मैथिलीकेँ ल' क' कते-कते चूक होइत रहलइए। एकरा संग एहू पर विचार करबाक चाही जे स्थितिकेँ 'अर्थ' आ 'कर्म' सापेक्ष बनावे लेल की सभ कैल जयबाक चाही।

देश आ प्रदेशमे पछिला किछु दशकक अभ्यन्तर रोजगारमुखी शिक्षाक- तकनीकी आ व्यावसायिक शिक्षाक- विकास आ विस्तार भाषा साहित्यक शिक्षाकेँ गंभीर रूपसँ प्रभावित कएलकइए। से, दुनियाककसभ भाषा- साहित्य लेल चिन्ताक विषय छै। शिक्षण कार्यमे एक स्तर धरि भाषा ओ साहित्यक बेसिक आ जरूरी जानकारी मात्र क्यूरिकूलमक हिस्सा रहि गेलए। रोजगार-मुखी शिक्षाक विकास आ विस्तारसँ स्नातकोत्तरेटा नहि, यूजी स्तर पर सेहो भाषा-साहित्यक शिक्षण गंभीर रूपसँ प्रभावित भेलए। मुदा तइयो, यूजी पाठ्यक्रम धरि भाषा-साहित्यक शिक्षणक अपना उपयोगिता छै। कतोक रोजगार (नौकरी) लेल यूजी स्तर धरिक शिक्षा जरूरी मानल जाइ छै आ तकरामे नीक रिजल्टक सार्थकता त' छहिए। विभिन्न प्रतियोगिता परीक्षामे रैंकिंग निर्धारणमे से काज दइ छै। मैथिलीकेँ संविधानक भाषाक दर्जा भेटलाक बाद भारत सरकार ओ बिहार सरकारमे मैथिली भाषी छात्रक लेल रोजगारक उम्मीद खूबे जागलए। आ तैँ, यूजी स्तर धरिक शिक्षामे मैथिली भाषी छात्र लेल मैथिली नीक सोपान साबित भ' सकइए, भ' रहलए। एही बेगरतामे आबि नवतूरिया मैथिलीक सीढ़ीक उपयोगो करइए। विभिन्न सरकारी सेवाक प्रतियोगी परीक्षा सभमे मैथिली एकटा विषय रहै छै आ एकर लब्धांक ककरो रैंक दियाबेमे सहायक बनि जाइ छै। कतोक अखिल भारतीय आ प्रादेशिक सेवामे एकर उदाहरण ताकएमे कोनो परेशानी नहि हैत। एकर विपरीत पीजी स्तर पर भाषा साहित्यक डिग्री अहाँक पांडित्यकेँ जे प्रखरता दियै, रोजगारक संदर्भमे ओकर सीमा सर्वविदित अछि। तैँ, एहि बात पर जरूर ध्यान देबाक चाही जे यूजी स्तर धरिक शिक्षामे मैथिलीक उपयोगकेँ ल' क' मैथिल समाज कतेक

सतर्क अछि- जागरूक अछि। आ एही विन्दु पर आबि मोन झूस भ' जाइए। वस्तुतः यूजी स्तर धरि कोनो संविधानिक भाषाक लाभ- जकर संकेत ऊपर कैल गेलए- हासिल करबा लेल बहुमुखी जागरूकता आ सक्रियताक बेगरता छै। भाषा शिक्षाक लाभ लेबए लेल समाजकेँ सचेष्ट करब आ व्यवस्थाकेँ अपन बुद्धिसँ नचाबेवला नौकरशाहीकेँ सक्रिय बना भाषाक संविधानिक स्थितिक लाभ संबंधित समाजकेँ हासिल करैब, एहि जागरुकता ओ सक्रियताक मूल उद्देश्य हेबाक चाही। एहि लेल समाजक नेतृत्वकारी सामाजिक समूहमे जागरूकता आ ओकर सक्रियताक सभसँ बेसी जरूरी छै। मैथिलभाषी समाजमे एहि नेतृत्वकारी सामाजिक समूहकेँ रेखांकित करब कठिन नहि छै। मैथिलभाषी समाजक ई दुर्गति आजुक नहि छै- एकर आरंभ त' उनेसम शताब्दीक मध्यमे भेल रहै जहिया मिथिलामे हिन्दीकेँ वर्नाकूलर भाषा मानि लेल गेल रहै आ दरभंगाक महाराज हिन्दीमे काज नहि करेवला कर्मचारीकेँ दंडित करबाक फरमान जारी कएने छलाह। ई कहब जरूरी त' नहि हेबाक चाही जे ताहि समय महाराज लक्ष्मीश्वर सिंहक परामर्शदाताक समूहमे केहन बाबू-भइया सभ छलाह- कतेक मैथिल आ कतेक अमैथिल छलाह, कोन सामाजिक समूहक छलाह। इहो रेखांकित करब जरूरी नहि जे आइ मैथिलीक नाम पर मठो-माठ कोन समाज अछि। संगे इहो कहब जरूरी नहि जे उनेसम शताब्दीक मध्यसँ कोन समाज मैथिलीकेँ सुरक्षित रखलक आ आइयो कोन समाजक घर आंङनमे मैथिली बाजल जाइए, कोन कंठमे मैथिली सुरक्षित अछि।

मिथिला आ मैथिलीक वर्त्तमानक यैह इति-वृत्ति थिकै- जाहि कंठमे मैथिली सुरक्षित अछि जे त' निर्विवाद रूपसँ बाबू-भइयाक कंठ नहिए थिक। वस्तुतः संभ्रान्त मिथिला- प्रभु वर्ग आ आभिजात्य सामाजिक समूहक मिथिलासँ मैथिली बाहर अछि। मैथिल आ मैथिलीक प्रत्येक बुद्धिजीवीसँ पूछल जेबाक चाहीः संभ्रान्त मैथिलक लेल मैथिली आब जरूरी रहलै की? हमरा लोकनिक- अभिजन लोकक- घर आंङनमे मैथिली बाँचल रहलइए की? हमरा विश्वास अछि, इमानदारीसँ 'हाँ' कहएवला लोकक संख्या बहुमतमे त' नहिए हैत। साहित्य अकादमी सन प्रतिष्ठित पुरस्कार प्राप्त कुल साहित्याकरमेसँ आधासँ बेसी साहित्यकारक परिवारमे कतोक दशकसँ मैथिलीमे बाजब-भूकब समाप्त भ' गेलए। साहित्य अकादमीमे मैथिलीक प्रतिनिधिमेसँ कतोक साहित्याकरक परिवारिक भाषा हिन्दी छनि। मैथिली पढ़ाबे लागल कतोक सोड़हि प्राध्यापकक परिवारमे मैथिलीमे बाजब-भूकब निषिध्द छै। मैथिली पत्रिकाक संपादक लोकनिमेसँ अधिकाँश अपन दैनंदिन काजमे- परिवारमे मैथिलीक उपयोग नहि करइ छथि। हिन्दीकेँ पारिवारिक भाषा बनौनिहार कतोक मैथिली साहित्यकरक हिन्दीभाषी दोसरो पीढ़ीक प्रतिनिधि सुप्रतिष्ठित मैथिली साहित्यकार बनि गेल छथि। मैथिलीक स्थान पर हिन्दीकेँ प्रतिष्ठित करबाक व्यक्तिगत प्रयासक ई त' किछु नमूना मात्र थिकै। मैथिली विरोधी सामूहिक प्रयास देखबाक हो त' दरभंगा आ मधुबनिएक यात्र पर्याप्त हैत। सकरीसँ घोघरडीहा बैद्यनाथ मिश्र यात्रिक गाम-घरसँ जीवकान्तक गाम-घर धरिक यात्र पर्याप्त हैत। अप्रतिम मैथिली सेनानी काँचीनाथ झा किरण, बाबूसाहब चौधरी आ जयकान्त मिश्रक विरासतकेँ हुनके घर-आंङनमे हमरा लोकनि जोगाक' नहि राखि सकलहुँ। एहि बेजोड़ मैथिली 'चेतना'केँ करजोरि प्रणाम।

एहि 'ग्लोबल चेतना'क काल खंडमे मैथिलीक गप्प करब 'संभान्त मैथिल समाजक नितांत बौध्दिक समूहकेँ प्रत्यक्षतः किंवा परोक्षतः जेहन लागौक, मुदा ओहि बहुजन समाजक लेल जरूरी छै जे अदौ कालसँ मैथिलीकेँ जोगाक' रखने अछि- बिनु पाग-डोपटाक। आ तैँ, मैथिली लेल आ एहि बहुजन समाजकेँ मैथिलीक अधिकाधिक लाभ दियाबैक लेल कमसँ कम दू फ्रंट पर सक्रिय हैब नितांत जरूरी आ से बिनु विलम्ब कएने। एहि दुनू फ्रंट पर एक संग सक्रियताक बेगरता छै। एकटा फ्रंट त' ओ छै जाहिसँ मैथिलीकेँ अपन संविधान-सम्मत अधिकार भेटौक आ दोसर फ्रंट छै स्कूलसँ ल' क' कॉलेज धरि मैथिली शिक्षणक मजबूत नैँओ तैयार कैल जाए। संविधानक भाषा हेबाक कारणेँ मैथिलीकेँ राजकाजक भाषा बनबाक पूर्ण अधिकार छै। मुदा एहि लेल राजनीतिक सहयोग परम आवश्यक। आ से राजनीतिक दले सभक सहयोगसँ संभव अछि। एहि लेल मैथिलीकेँ राजनीतिक आधार देब जरूरी। चुनावमे मैथिलीकेँ राजनीतिक मुद्दा बिनु बनौने से संभव अछि की? कथमपि नहि। पौने दू वर्ष पहिने संसदीय चुनाव भेल रहै, डेढ़-पौने दू मास पहिने विधानसभा चुनाव सम्पन्न भेलए। एहि सभमे मैथिलीक अधिकारक विमर्श, मैथिल समाजकेँ भाषाइ सुविधा देबाक, मिथिलामे काज-रोजगारक विमर्श कतेक आ केहन भेल- से कहब कठिन। किछु मासक बाद पंचायत चुनाव हैत आ तकराबाद शहरी निकाय चुनाव। एहि पर विचार कैल जेबाक चाही जे हमरा लोकनि वोट खसाबए काल मैथिलीकेँ किंवा मिथिलाक विकासकेँ कोनो आधार बनबै छियै की? उत्तर फेर वैह- कथमपि नहि। ई उदाहरण भारतीय समाजमे मिथिलेमे भेटत जे अपन भाषा ओ मातृभूमिक अवहेलना, अनादर आ अपमान करएवला राजनीतिक विचार, राजनीतिक दल आ राजनेताकेँ हमरा लोकनि रिकॉर्ड वोटसँ जीतबै छियै वस्तुतः वोट खसबै कालमे हमरा लोकनि 'मैथिली-मिथिलासँ निरपेक्ष' भ' जाइ छी किंवा एहिसँ हमरा निरपेक्ष राखि धर्म, जाति सन प्रतिगामी विचार बसातमे बहा देबाक चक्र-चालि रचल जाइए। वस्तुतः यैह बुधिबधिया थिकै- हम मैथिल छी, मैथिलीभाषी छी तकर बोधे ने हमरा होअे देल जाइए। एहिसँ मुक्त होअे पड़त मैथिली लेल, मिथिला लेल, बहुजन मिथिलाक नवागत पीढ़ीक लेल। पंचायत सरकारसँ ल' बिहार सरकारक सचिवालय धरि मैथिलीमे सभ तरहक आवेदन देबाक, आवेदनक उतारा पयबाक, सरकारक कानूनकेँ कहय सभ तरहक आदेश-निर्देशक जानकारी अपन मैथिलीमे पयबाक हमरा संविधान-सम्मत अधिकार अछि। हमरा ई अधिकार भेटै। से जँ भेटत तँ मैथिली पढ़ल-लिखल लोककेँ काज-रोजगार भेटतै। एहि लेल मुखियासँ ल' क' सासंद धरिक सहयोग चाही। आ एहन जनप्रतिनिधि समूहकेँ एकरा लेल प्रेरित त' हमरे लोकनिकेँ करए पड़त। आ ताहि लेल समाजक सक्रियताक बेगरता छै। पंचायती राज आ शहरी निकायक जनप्रतिनिधि चाहथि त' अपना क्षेत्रमे से करबा सकै छथि। मुदा, अपने किए करताह? शिक्षक भर्त्तीक नव व्यवस्थामे पंचायत ओ शहरी निकाय शिक्षक नियोकता बनि गेलए। पंचायत ओ शहरी निकाय प्रतिनिधि चाहथि त' मैथिलीक शिक्षक नियुक्त हेताह, स्कूल सभमे मैथिलीक शिक्षण चलत ओ चलैत रहत। मुदा ओ ओना किए चाहताह? हिनका लोकनिकेँ समाज प्रेरित करतनि त' ओ सक्रिय हेएताह स्कूलसभमे मैथिलीक पठन-पाठन हैत। ई छात्र कॉलेजमे जा क' मैथिली पठन-पाठनक वातावरण बनौताह। तकराबाद कॉलेजमे यूजी स्तर पर हमरा लोकनिकेँ छात्रक कमीक अनुभव किनसाइत नहि हैत। ई समूह निश्चित रूपेँ बहुजन मिथिलाक प्रतिनिधि हैत- जकर घर आङनमे मैथिली हसँत-खेलाइत छथि। हमरा लोकनिकेँ एहि लेल सक्रिय हेबाक चाही, एहि दिशामे काज करबाक चाही- एही बाटे मैथिलीकेँ जियाकेँ राखि सकै छी, ओकरा आङन बाजारमे संजोगि सकै छी, समृद्ध क' सकै छी, अपन अगिला पीढ़ीक प्रति जिम्मेवारीक निर्वहन क' सकै छी। ●

ग्राम-पंचायतमे मैथिली

भैरव लाल दास

पटना, बिहार

संपर्क : 9430606724

भैरव लाल दास(1968) शिक्षा : एम.ए.(राजनीति शास्त्र), प्रबंधन एवं पत्रकारितामे पी. जी. डिप्लोमा, दूरसंचार विभाग भारत सरकारसँ नौकरीक आरम्भ केलनि। हिनक गोत्राध्याय, कैथी लिपि का इतिहास, विप्लवी बटुकेश्वर दत्त, गदर आंदोलन का इतिहास, राजकुमार शुक्ल की डायरी, चंपारणमे गांधी की सृजन यात्रा, तिनकठिया आदि पोथी प्रकाशित एवं चर्चित छनि। भरतीय संविधानक मैथिली अनुवाद एवं दू दर्जनसँ बेसी पोथीक सम्पादन कएने छथि। मिथिला भारती नामक शोध पत्रिकाक सह सम्पादक छथि।

ई कोनो वाद-विवादक विषय नहि अछि जे मातृभाषामे शिक्षा हेबाक चाही। जँ मातृभाषामे शिक्षाक व्यवस्था नहि होयत त' बच्चाक मानसिक विकास पर कुप्रभाव पड़त। मातृभाषाक परिवेशकेँ अकारण अशांत करबाक चेष्टा कएल जायत त' संपूर्ण शिक्षा व्यवस्था एहिसँ प्रभावित भ' सकैत अछि। एहिसँ खास भौगोलिक क्षेत्रमे बहुभाषाक परिवेशक निर्माण होयत आ व्यवस्था जटिलसँ जटिल होइत चलि जायत।

मातृभाषा मैथिलीमे प्राथमिक शिक्षाक व्यवस्थाक मांग बहुत दिनसँ भ' रहल अछि। सरकार द्वारा लेल गेल निर्णय, पटना उच्च न्यायालयक न्याय निर्णय, विषय विशेषज्ञक संस्तुति आदि पर चर्चा-परिचर्चा सेहो होइत रहल अछि। ई विषय शैक्षणिक कम आ राजनीतिक बेसी भ' गेल अछि। गोलैसी, विभिन्न मत-मतान्तर आदि, आदि। मुदा सर्वमान्य विचार अछि जे मिथिला क्षेत्रमे शिक्षाक माध्यम मातृभाषा मैथिली हेबाक चाही। कक्षा एकसँ दस धरि पाठ्यपुस्तकक निर्माण मैथिली भाषामे हेबाक चाही। संगहि एहि क्षेत्रक लेल शिक्षकक नियुक्तिमे सेहो मैथिली भाषीकेँ प्राथमिकता देल जाए। शिक्षा शास्त्रीगण एहि मतकेँ समर्थन करैत छथि, मुदा नीति निर्धारक लोकनि एहि दिस कम ध्यान द' रहल छथि।

वैश्विक परिवेश सेहो एहि मतकेँ समर्थन करैत अछि जे प्राथमिक शिक्षाक माध्यम मातृभाषा हेबाक चाही। जे बच्चा एखन धरि विद्यालय नहि पहुँचल छथि, हुनका लेल परिवेशक निर्माण सेहो मातृभाषामे हेबाक चाही। एहिसँ बच्चाक सामान्य मानसिक विकास होइत छैक। शिक्षा शास्त्री अपन ऑकड़ासँ विश्वक संपूर्ण नीति निर्धारककेँ बारम्बार बुझेबाक प्रयास क' रहल छथि जे ई अत्यंत महत्वपूर्ण अछि आ एहि दिस ध्यान देबाक चाही।

शिक्षाशास्त्री *ओस्टर साहेब*क मत छनि जे बच्चा की सीखि रहल अछि, ओकर लुरि कतेक समृद्ध भ' रहल छैक, अपना उमेरक अनुसार ओकरामे सामाजिक मूल्यक विकास भ' रहल छैक अथवा नहि, आदि विषय पर गंभीरतापूर्वक विचार हेबाक चाही। वयसक अनुसार बच्चामे नव लुरि, नव ज्ञान आ नव दृष्टिकोणमे कतेक सकारात्मक परिवर्तन भेलै, एहिसँ बच्चाक शैक्षणिक आ मानसिक विकासक पता चलैत छैक। शिक्षा शास्त्री *ब्लूम* महोदय संज्ञानात्मक (Cognitive) ज्ञानक अंतर्गत मानसिक निपुणता (Knowledge)केँ परिभाषित करैत लिखैत छथि जे बच्चाक बौद्धिक कौशलक (Intellectual skills) मापन अत्यंत आवश्यक अछि। बच्चा कोनो विशेष तथ्य आ प्रक्रियात्मक साँचकेँ कतेक धरि स्मरण राखि सकैत अछि, एहि पर सेहो ध्यान देबाक चाही। ओकर मनोभावना आ भावावेश (प्रेम, क्रोध, भय आदि)क प्रति दृष्टिकोणमे कतेक विकास भ' रहल अछि। भावनासँ जुड़ल आन चीज यथा मूल्य, प्रशंसा, उत्साह, प्रेरणा आदिमे कतेक सकारात्मक विकास भ' रहल छैक, ई सभ चीज सेहो महत्वपूर्ण अछि।

शिक्षा व्यवस्थामे मैथिली भाषाकेँ कोन रूपेँ समाहित कएल जाए, एकर निर्णय सरकार करत। एहि लेल जनप्रतिनिधिगण सहित हाकिम आ न्यायिक व्यवस्थामे पैरवी कएल जेबाक चाही। मुदा समस्त मैथिल समाजकेँ एहि लेल सेहो प्रयास करक चाही जे परिवेशसँ मातृभाषा मैथिली अलग नहि होए। मजाक-मजाकमे कहल जाइत अछि जे मैथिली आब मातृभाषा नहि रहि गेल, दादी माँक भाषा बनि क' रहि गेल अछि। कारण, जे एखन माए छथि हुनक बजबाक, लिखबाक, पढ़बाक आ सोचबाक भाषा मैथिली नहि रहि गेल छनि। मैथिलीक प्रति निरादरक भावसँ एहन स्थितिक निर्माण भेल जा रहल अछि। समस्या की अछि, एहि पर विमर्श होए, मुदा एकर समाधानक दिस प्रयत्न करबाक लेल सचेष्ट रहब आवश्यक।

मातृभाषा मैथिलीक प्रसार, विकास आ समुन्नतिक लेल आन भाषाक प्रति निरादरक भाव

अथवा न्यूनताक भावसँ ऊपर उठब आवश्यक अछि। मिथिला अदौसँ ज्ञानक क्षेत्र रहल अछि। संपूर्ण विश्वमे मिथिलाक प्रतिष्ठा ज्ञान आ विवेक ल' क' छैक। मनीषीक नमहर सूची अछि जिनक ई क्षेत्र रहल छनि। कहबाक तात्पर्य जे मिथिलामे संस्कृत शिक्षा अत्यंत विकसित स्वरूपमे रहल अछि। एमहर, मैथिली संगे संस्कृतकेँ जोड़ि राजनीतिक शतरंजक गोटी भाँजल जा रहल अछि। लिखबामे कोनो संकोच नहि जे संस्कृत भाषा मात्र मिथिला क्षेत्रक भाषा नहि छल, अपितु सम्पूर्ण भारत वा भारतवर्षक परिक्षेत्रसँ आगा जा' क' संस्कृतक समादर छल। मिथिलामे संस्कृतक संगहि मैथिली (पूर्व स्वरूपमे) सेहो छल। कोनो सभ्य आ विकसित समाजक लेल शास्त्रीयता एकटा अनिवार्य तत्व अछि। आ एहि शास्त्रीयताक लेल संस्कृतक अनुसरण सेहो आवश्यक अछि। मैथिलीकेँ जँ संस्कृतसँ भिन्न क' देल जाय त' एकर स्थितिक मात्र कल्पना कएल जा सकैत अछि। मुदा इहो कटु सत्य अछि जे कोनो कालखंडमे संस्कृत आम जनक भाषा नहि बनि सकल अपितु प्रबुद्धजनक भाषा बनल रहल। आम जन साक्षर आ शिक्षित बनल त' संस्कृतक इतर लोकभाषाक प्रयोग आ उपयोगसँ। महाकवि विद्यापति सेहो 'लोकभाषा' मैथिलीक वकालत करैत 'सबजन मिट्ठा'क चर्च करैत छथि। नीति निर्मातागणकेँ एहि दिस ध्यान देबाक चाही जे शिक्षामे मातृभाषाक उपयोग जतेक अनिवार्य तत्व छैक, परिवेशक शास्त्रीयता बरकरार रहए, एहि लेल प्रयास सेहो ओतबे आवश्यक छैक। जँ एहि दिस ध्यान नहि देल जाय त' आम जन मैथिलीसँ एहिना विरक्त हेता जेना कहियो संस्कृतसँ विरक्ति भेल छलनि। ओहि कालखंडक कल्पना मात्र भय उत्पन्न करैत अछि। शिक्षा व्यवस्थाक उपयोग मानव मात्रकेँ शिक्षित करबाक अछि, जेकर चर्च ऊपर कएल जा चुकल अछि। जँ मातृभाषा मैथिलीक उपयोग प्राथमिक शिक्षामे नहि हेतैक त' मिथिलाक ज्ञान-प्रतिष्ठा पर विपरीत प्रभाव पड़तैक।

कोनो संदेह नहि जे मिथिलाक भूमि नमहर हाकिम गढ़ने जा रहल अछि, मिथिलाक यशस्वी वैज्ञानिक लोकनि अपन ज्ञानक धुजा-पताका विश्वक आन देशमे सेहो फहरा रहल छथि। तर्क भ' सकैत अछि जे बिनु अंग्रेजी पढ़ने एहन प्रतिष्ठा नहि भेटि सकैत छलनि। आ एहि ठाम एकटा विवाद सेहो ठाढ़ होइत छैक जे मैथिली पढ़ि क' की होयत आ अंग्रेजी पढ़ि क' की भ' सकैत अछि। तर्क इहो गढ़ल जा सकैत छैक जे फलां-चिलां जँ मैथिली पढ़ने रहितथि त' ई गौरव नहि भेटितनि? मुदा ई सभ तर्क मैथिली आ मिथिलाकेँ न्यून करबाक लेल देल जा रहल छथि। भारत बहुसांस्कृतिक देश अछि। सरकार द्वारा त्रिभाषा फॉर्मूला लागू कएल गेल छैक। राष्ट्रभाषा हिन्दी पढ़ब सब छात्रक लेल अनिवार्य अछि। एहिना, विज्ञान, गणित, समाजशास्त्र, भूगोल आदि विषय सेहो छात्रलोकनिकेँ पढ़बाक छनि। बच्चा जँ मैथिलीमे शिक्षा ग्रहण करत त' एकर मतलब ई नहि जे ओ विज्ञान नहि पढ़त अथवा भूगोल नहि पढ़त। हम सिर्फ एतबहि कहैत छी जे जँ ओ बच्चा विज्ञान पढ़त आ अपन मातृभाषामे पढ़त त' जल्दी सीखत, तेज बनत आ विषय वस्तुक ज्ञान ओ नीक जकाँ प्राप्त करत। कारण ओकर परिवेशमे मैथिली छैक।

मातृभाषा मैथिलीक लेल परिवेशकेँ सेहो कमजोर कएल जा रहल छैक। घरमे मैथिली नहि बजबाक लेल आलोचना कएल जाइत अछि। घरक भाषा की रहए, एहि लेल सरकारक कोनो आदेशक खगता नहि रहैत छैक, घरक लोक निश्चय करैत छथि जे घरमे की बाजल जाए। हमर तर्क एतबे अछि जे जँ घरमे भाषाक अनुशासन रहत त' बच्चाकेँ भाषाक एकटा विकसित परिवेश भेटतैक। कोनो बच्चा अपना घरमे बाबा-दादी, माए-पितिआइन आदिसँ कमसँ कम 1600 शब्द ग्रहण क' सकैत छथि। कल्पना करू जे माए अंग्रेजी नहि पढ़ल छथि त' ओ अपना बच्चाकेँ कतेक दूर धरि पढ़ा सकैत छथि। जँ घरक भाषा ओ आस-पड़ोसमे सेहो प्राप्त करत त' आर तेजीसँ सीखत आ जँ विद्यालय आ खेलक मैदानमे सेहो ओकरा वैह भाषा भेटतैक त' ओ अत्यंत तेजीसँ सीखत। प्रत्येक बच्चाकेँ सीखबाक एकटा उमेर होइत छैक। जेना-जेना बच्चाक उमेरमे वृद्धि होइत छैक, ओकर सीखबाक स्तरमे परिवर्तन सेहो होइत छैक। जँ बच्चा कनेक बेसी उमेर प्राप्त क' लेलक, तहन ओकरा मातृभाषाक अतिरिक्त आन भाषाक ज्ञान देब आवश्यक। मिथिला परिक्षेत्रमे मैथिली संग हिन्दी जुटल अछि। संस्कृत, अंग्रेजी, उर्दू आदि विषयक ज्ञान जँ बच्चा प्राप्त क' लिअ' त अत्युत्तम। मुदा जँ अल्प उमेरमे बहुभाषी वातावरणमे ओकरा शिक्षा भेटलैक त' एकर विपरीत प्रभाव सेहो पड़ि सकैत अछि। दोसर दिस, किछु शिक्षाशास्त्रीक मंतव्य छनि जे बच्चा मानसिक रूपसँ बहुत तेज होइत अछि आ ओकरा मे सार्मथ्य छैक जे एक संगे कतेको भाषा सीखि सकैत अछि। मुदा एहिमे मातृभाषा सबसँ बेसी महत्वपूर्ण अछि।

भाषागत दृष्टिए परिवेश निर्माणक लेल बहुत रास चीजमे मातृभाषाक संयोग हेबाक चाही। एकटा उदाहरण पंचायती व्यवस्थामे मातृभाषा मैथिलीक प्रयोग अछि। हमरा जनतबे एखन मिथिला क्षेत्रक कोनोटा पंचायतमे मैथिली भाषामे ग्राम पंचायतक बैसारक कार्यवाही तैयार नहि होइत अछि। एहिमे सरकारक कोनो आदेशक आवश्यकता नहि छैक। कानूनी रूपसँ सरकार एहि लेल मना नहि क' सकैत अछि जे ग्राम पंचायतक भाषा मैथिली किएक अछि। मैथिली क्षेत्र घोषित अछि आ मैथिली क्षेत्रमे मैथिली भाषामे बजबाक, लिखबाक आ सोचबाक स्वतंत्रता छैक। जँ मैथिलीमे कार्यवाही तैयार होएत त' एकर सकारात्मक प्रभाव पड़त। आम जनता, विशेष रूपसँ कम पढ़ल-लिखल लोक मातृभाषामे अपन विचार व्यक्त करबामे अथवा व्यक्त कएल गेल विचारकेँ बुझबामे समर्थ हेता।

मुदा एहिमे तरद्दुत सेहो छैक। पंचायती व्यवस्थाक जुड़ाव सरकारक विभिन्न विभागसँ छैक। ग्राम पंचायत, पंचायत समिति अथवा जिला परिषद्क बैसारमे सदस्यक अतिरिक्त सरकारक प्रतिनिधि सेहो भाग लैत छथि। कल्पना करू जे कोनो दक्षिण भारतीय उप विकास आयुक्त महोदय छथि आ हुनका सँ भेंट करबाक लेल पंचायती

व्यवस्थाक कोनो जनप्रतिनिधि जाइत छथि। जनप्रतिनिधि मैथिलीमे बजैत छथि, हाकिम नहि बुझि सकैत छथिन्हि। केहन स्थिति हेतैक? की-की विकल्प भ' सकैत छैक? परिवेशक निर्माणक लेल ग्राम पंचायतक कार्यवाही मैथिलीमे तैयार करबाक लेल जनचेतनाक निर्माण आवश्यक अछि। आ ई मैथिलीक विकासक लेल एकटा सशक्त डेग होयत। आ एहि पर कनेक टिकल रहबाक खगता सेहो छैक।

बिहार मे दू तरहक हाकिम छथि-एकटा संघ लोक सेवा आयोगसँ चयनित आ दोसर राज्य लोक सेवासँ चयनित। न्यायिक व्यवस्थाक एखन चर्च नहि करैत छी। दुनू तरहक हाकिमक लेल प्रशिक्षणक व्यवस्था छैक। मसूरीमे आइ.ए.एस. हाकिम सबहक प्रशिक्षण होइत छन्हि जत' भाषा अध्ययनक लेल विशेष व्यवस्था कएल गेल छैक। मिथिला वा बिहारक कोनो युवकक चयन जँ आइ.ए.एस.मे होइत छनि आ जँ हुनका केरल, तमिलनाडु, कर्नाटक वा उड़ीसा कैडर भेटैत छनि त' सबसँ पहिने हुनका ओहि राज्यक भाषाक अभ्यास मसूरीमे कर' पड़ैत छनि। प्रशिक्षण कालमे प्रवीण भ' जाइत छथि आ जखन ओहि राज्यमे हुनक पोस्टिंग होइत छनि त' काज करबामे, लोकसँ संवाद करबामे कोनो दिक्कत नहि होइत छनि। मुदा मिथिला क्षेत्रक लेल ई व्यवस्था नहि छैक। मिथिलामे पोस्टिंगसँ पहिने हुनका मैथिली भाषामे पारंगत नहि बनाओल जाइत छनि। जँ भाषासँ जुड़ाव नहि हेतैन्हि त' एहि माटि-पानिसँ कोना जुड़ाव हेतैन्हि। कोनो संस्था एकर मांग नहि करैत अछि जे मिथिला क्षेत्रमे पोस्टिंगसँ पहिने हाकिम सबकेँ मैथिली सीखब अनिवार्य कएल जाए। तखन ने ओ ग्राम पंचायतक कार्यवाही पढ़ि सकता आ आम जनसँ सीधा साक्षात्कार आ संवाद करबामे सफल हेता। अन्यथा, आइ जे संवाद भ' रहल अछि से जनतांत्रिक व्यवस्थाक संवाद नहि अछि। संवाद जँ मातृभाषामे नहि भेल त' ओहिमे मिठास नहि रहतैक। लोक अपन मोनक उद्‌गार, अपन कष्ट, अपन सुख-दुख नहि कहत। एहिसँ शैक्षणिक परिवेश पर सेहो कुप्रभाव पड़तैक। लोक हाकिमक भाषा सीखबाक प्रयास करत। जखन मुगल शासन छलैक त' शासन व्यवस्थाक भाषा फारसी छलैक। जखन अंग्रेज आयल त' अंग्रेजी भ' गेलै। आब देश स्वतंत्र भेलैक मुदा भाषागत क्षेत्रमे एखनहु मिथिला परतंत्र छथि। अपन भाषाकेँ मिथिला एखनो निरादर क' रहल अछि। मैथिली ने विद्यालयक भाषा छैक, ने पंचायतक भाषा छैक आ ने सरकारी कार्यालयक भाषा छैक। हमरा बुझने, सरकारी कार्यालयमे मैथिलीमे आवेदन देबाक परिपाटी एखन धरि शुरू नहि भेल अछि। मैथिलीक स्थान घरमे नहि अछि, दलान पर सेहो नहि, गाछी-बिरछीमे सेहो नहि आ हाट-बजारमे सेहो नहि। एकर कुप्रभाव समाज देख रहल अछि। जे मिथिला कहियो ज्ञान परंपराक लेल विश्व विख्यात छल, आइ पैघ 'श्रमिक बजार' बनि क' रहि गेल अछि। राष्ट्रीय राजमार्ग पर दिल्ली आ हरियाणा नंबर वाली बस दौड़ि रहल अछि। दिल्ली, मुम्बइ आ अमृतसर नहि गोवा आ त्रिवेन्द्रम जाय बला ट्रेन मे रिजर्वेशन भेटब मोश्किल अछि। श्रमिकक खोजमे कम्पनी सब मिथिला अबैत छथि। रोजगारक दृष्टिए बेजाय नहि। मुदा मिथिलाकेँ फेरसँ ज्ञानक धरती बनेबाक अछि त' मातृभाषामे शिक्षा अत्यंत आवश्यक अछि। संगहि परिवेशक निर्माणसँ मैथिलीक प्रति समादरक भाव सेहो उत्पन्न होयत।

भाषाइ परिवेश निर्माणमे मीडियाक महत्वपूर्ण भूमिका होइत अछि। मैथिली भाषाक मादे एकर स्थिति सेहो संतोषजनक नहि। इलेक्ट्रॉनिक मीडियामे 'सौभाग्य मिथिला' चैनल जखन आरंभ भेल छल त' मिथिलाक लेल हर्षक विषय छल। मुदा किछुए समयक बाद चैनल बंद भ' गेल। सोशल मीडियामे जतेक पोस्ट मैथिलीमे होइत अछि, एहिसँ बेसी अन्य भाषामे मैथिल लोकनि पोस्ट करैत छथि। प्रिंट मीडियाक मादे कहल जाए त' मैथिली भाषामे अखबार आ पत्र-पत्रिकाक स्थिति सेहो संतोषजनक नहि। मैथिलीमे अखबारक कारोबार आरंभ होइत अछि, सरकारक सहयोग नहि भेटबाक कारणेँ बंद भ' जाइत अछि। सरकारक सहयोग किएक नहि भेटैत छैक, समस्या जगजाहिर अछि। जाहि दिन सरकारक प्रोत्साहन आरंभ भ' जायत, अखबार, टी.वी. चैनल, पत्र-पत्रिकादि सुचारू रूपसँ संचालित होम' लागत। पारिवारिक समूह, प्रोफेशनल समूह अथवा अन्य जगह पर कतेक लोक मैथिली बजैत छथि, ई सेहो महत्वपूर्ण अछि। जँ कोनो भाषाक एतेक दयनीय स्थिति हो, तहन आम जनसँ अपेक्षा करब जे ओ शुद्ध आ मानक मैथिलीक प्रयोग करथि, अनसोहांत अछि।

अंतमे, जखन जनप्रतिनिधिगण बिहार विधान सभा, लोकसभा अथवा सरकारक मंत्रिमंडलमे मातृभाषा मैथिलीमे शपथ ग्रहण करैत छथि त' एहिसँ मैथिल समाजकेँ गौरवक बोध होइत छैक। सोशल मीडियासँ ल' क' सामान्य मीडियामे एकर चर्च होइत छैक। मिथिला चित्रकलासँ चित्रित पाग आ अंगवस्त्र पहिरने हुनक फोटो सार्वजनिक होइते साधारण मैथिलमे हर्ष पसरि जाइत छैक। मुदा जखन संसद अथवा विधान मंडलक कार्यवाहीमे मैथिली तकैत छी त' नहि भेटैत अछि। कारण अत्यंत साधारण अछि। संसद अथवा विधान मंडलक भाषाक रूपमे एखन धरि मैथिलीकेँ मान्यता नहि भेटल छैक आ ताधरि मैथिलीमे कार्यवाही नहि तैयार कएल जायत। ताबत धरि मैथिलीक लेल विशेष अनुमतिक खगता हेतै। जँ जनप्रतिनिधिगण एहि लेल प्रयास करथि त' संसद आ विधानमंडलमे मैथिली प्रतिष्ठित हेतीह।

साहित्य अकादेमी पुरस्कार(२०२०)क लेल...

डॉ. कमल कान्त झाकेँ हुनक कथा संग्रह *'गाछ रुसल अछि'*, सियाराम झा सरसकेँ गीत संग्रह *'सोनहुल इजोतबला खिड़की'क* लेल साहित्य अकादेमी बाल पुरस्कार एवं सोनू कुमार झाकेँ कथा संग्रह *'गस्सा'क* लेल युवा पुरस्कार देल जएबाक घोषणा भेल अछि।

हिनका लोकनिकेँ अनुप्रास समूह दिससँ हार्दिक बधाइ एवं शुभकामना।

मिथिलाक नारी : अतीत, वर्त्तमान आ भविष्य

डा. निक्की प्रियदर्शिनी

महिषी, सहरसा
सम्पर्क : 9162504781

डा. निक्की प्रियदर्शिनी समकालीन मैथिली साहित्यक एकटा चिर-परिचित युवा रचनाकार छथि। ई आलोचनात्मक लेखनसँ मैथिलीमे प्रवेश कए कथा आ कविताक संग सेहो उपस्थित होइत रहलीह अछि। भागलपुर विश्वविद्यालयसँ अंग्रेजी एवम् मैथिली (लब्ध स्वर्णपदक) विषयमे एम ए आ नेट (जे आर एफ) डा. प्रियदर्शिनी मैथिलीमे *अनुवाद साहित्यक विश्लेषणात्मक अध्ययन* विषय पर शोध-कार्य सेहो कए चुकल छथि। अद्यावधि हिनक दूटा पोथी— *देखल जा सकैछ* (आलोचना) आ *समय-सापेक्ष* (कविता-संग्रह) प्रकाशित अछि एवं मैथिली अनुवादः सिद्धान्त ओ विवेचन, प्रकाशनाधीन अछि। सम्प्रति डा. निक्की प्रियदर्शिनी श्री उग्रतारा भारती मण्डन संस्कृत महाविद्यालय (का सिं द संस्कृत विश्वविद्यालय, दरभंगा)मे मैथिली विषयक सहायक प्राध्यापक छथि।

मिथिलाक सांस्कृतिक परम्परा सभ्यता ओ संस्कृतिक संग अविरल मिथिकीय व्यंग्य-उपहासक बीच सरल-स्वच्छ, निर्मल-पवित्र, पापहरिणी बहैत गंगा सदृश्य स्त्री अपन अधिकार हेतु आदिकालसँ संघर्षशील रहलीह अछि। आरम्भिककालसँ आइ धरि विश्वक शास्त्रज्ञ, विचारक, दार्शनिक, रचनाकार ओ समाजक प्रतिनिधिलोकनि संसारमे व्याप्त आर्थिक वैमनस्य, सामाजिक दुष्परिणाम, उत्कर्षक पराधीनता, अन्याय, अशान्ति, उत्पीड़न ओ शोषणकेँ समाप्त कए मानवीय संवेदनासँ समन्वित सुखी-समृद्ध संसारक निर्माणक लेल अपन चिन्तनकेँ लेखनीक माध्यमसँ स्थापित करबाक प्रयास करैत रहल छथि। मुदा संसारक आधा-आबादीरूप स्त्रीक पारिवारिक, सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक परिस्थितिसभक आकलनक संग ओकर मुक्तिक संदर्भमे हुनक चिन्ता ओ विचारक प्रखरता वर्त्तमानमे हमरा विस्मित करैत अछि। प्राचीन कालक मातृसत्तात्मक समाजमे स्वतंत्र ओ सबल स्त्री-स्वरूपक उल्लेख हमरा प्राप्त होइत अछि मुदा ओहि समयक चिन्तकक मनःस्थिति स्त्री-संबंधी विमर्शमे अधिकांशतः अनुदारता, संकीर्णता, पूर्वाग्रहसँ ग्रसित मनःस्थितिक झलक देखबामे अबैत अछि।

एहिठाम प्राचीनकालक अनेक शास्त्रमे स्त्री-स्वरूपक वर्णन बोली-वाणी, व्यवहार, रहन-सहनमे लगभग समान रूपसँ प्राप्त होइत अछि। मुदा, मनुस्मृति जकरा हमरा लोकनि ध र्मसंहिता मानैत छी, ताहिमे प्रथम मनु द्वारा रचित मनुष्यक प्रणिति विधि-विधानक निरूपण प्राप्त होइत अछि, तकर चर्चा एहिठाम करब उचित बुझि पड़ैत अछि। ओना मनु चौदह मानल जाइत छथि ताहिमे सातम मनु 'वैवस्वत मनु'क चर्चा करब जाहिमे मानव जातिकेँ प्रजापति बुझल गेल आओर भारतीय वाङ्मयमे सृष्टिक आदिमे स्वयंभूव 'स्वयंभू' अथवा मानव समुदायक कल्पना कएल गेल छल आओर इएह मानव समुदाय भारतीय परम्पराक प्रथम ऐतिहासिक पुरुष 'मनु' कहल गेलाह आ श्रेष्ठ मानल गेलाह। एहन अवधारणाक बीच इहो प्रचलित छल जे प्रत्येक स्त्रीमे प्रजनन शक्ति छल आओर ताहि शक्ति द्वारा ओ समय अयला पर स्वयं सन्तान उत्पन्न कए लैत छलीह। आदिमकालमे स्त्री-पुरुषक भेद लोक जनैत छल आओर स्त्रीक स्थान उच्च छल। मातृसत्तात्मक विकास पारिवारसँ मानल जाइत अछि जकर प्रमाण हमरालोकनिकेँ भारतीय साहित्यमे यत्र-तत्र भेटैत अछि आ मायक नाम पर वंशक नाम चलैत छल, जकर स्वरूप एखनो मध्य आओर दक्षिण भारतक अनेक जातिमे एहि परम्पराक प्रचलन पाओल जाइत अछि। तेँ एहिमे कोनो सन्देह नहि जे भारतीय समाजक विकासक मातृसत्तात्मक परिवारसँ भेल अछि। एहिमे परिवारक स्त्री वयोवृद्ध महिलाकेँ परिवारक मुखिया मानल जाइत छल। स्त्री-पुरुष समाजक सामूहिक सम्पत्ति छल, विलासिता सम्बन्धी पूर्ण स्वच्छन्दता छल, मायक प्रभाव छल, भरण-पोषणक भार हुनके पर रहैत छल तथा परिवारक प्रत्येक सन्तान मायकेँ सर्वोपरि मानैत छल, तेँ मायकेँ सबसँ पैघ देवता मानल गेल। 'मातृ देवो भवः' पर्यन्त कहल गेल। एहिठाम देवत्ववाचक शब्द 'देवता' मूलतः स्त्रीवाचक अछि। एहि युगक समाज मातृपूजक छल आओर माताकेँ सबसँ पैघ देवी-शक्ति मानैत छल। तत्कालीन मानव-समाज जाति-वर्ण विहिन छल जकर वर्णन 'महाभारत'मे एहि प्रकारेँ प्राप्त होइत अछि—

न विशेषोऽस्ति वर्णानां सर्वं ब्राह्ममिदं जगत्।
ब्रह्मणा पूर्व सृष्टं हि कर्मभिवर्णतांगत्।।

एकर अर्थ अछि— पहिने वर्णमे कोनो भेद नहि होइत छल ब्रह्मासँ उत्पन्न भेलाक कारणेँ सम्पूर्ण जगत् अर्थात मानव-समाज 'ब्रह्मण' छल। कालान्तरमे विभिन्न कर्मक कारणेँ वर्णभेद भ' गेल, एहि प्रकारेँ स्त्री-पुरुषकेँ समान अधिकार प्राप्त छल। मुदा स्त्रीकेँ समाजमे

विशेष सम्मान छलैक आ देल जाइत छलैक। समय बीतैत गेल कालान्तरमे पुरुष-समाज स्त्रीसँ बहुत रास अधिकार छीन लेलक आओर क्रमशः स्त्रीकेँ पुरुषक रक्षणीय सम्पत्ति मानल जाए लागल। एहि रक्षणीय सम्पत्तिकेँ पुरुष अपन पराक्रमक बलेँ परिवारमे मुखिया बनि गेल आओर मानव समाजमे पितृसत्तात्मक परिवारक नींव सुदृढ़ भेल। एहि प्रकारक परम्पराक प्रचलन स्थायी रूप ग्रहण क' लेलक। प्राचीन ऋषि-महात्मा एहि परम्पराकेँ आदर्श मानलनि आ मानव समुदायमे ई प्रथा प्रचलित भेल, परिवारमे पुरुषक प्रधानता बढ़ल, सुरक्षा, जीवकोपार्जन, चिकित्सा, न्याय-विधान, प्रशासन, अधिकार, कर्त्तव्य आदि प्रमुख अपना हाथमे लेलक। एकपत्नी ब्रतक आदर्श अपनाओल गेल आ स्त्रीक हेतु व्यवस्था देल गेल—

'पिता रक्षति कौमारे भर्ता रक्षति यौवने।
रक्षन्ति स्थविरे पुत्रा न स्त्री स्वान्त्र्यमर्हति।।'

अर्थात् नारीकेँ वाल्यावस्थामे पिता, युवामे पति एवं वृद्धावस्थामे पुत्र रक्षा करत। स्त्री कखनो स्वतंत्र रहबाक योग्य नहि छथि। एहिठाम एहि प्रकारक बन्धन पुरुषप्रधान समाजमे संकीर्ण सोचक परिणाम थिक। स्त्रीकेँ स्वेच्छाचारिणी नहि बना पुरुषक नियंत्रणमे राखि हरदम आज्ञाकारी बनाएब आदि समाजक मानसिक विकृतिसँ भरल मनुष्यक सोच रहल अछि। एहि प्रकारेँ अतीतमे नारीक स्थितिक सम्बन्धमे सम्मानक दृष्टि सेहो अपनाओल गेल अछि। ई त' ध्रुवसत्य अछि जे स्त्री ओ पुरुष जीवनरूपी गाड़ीक दूटा समान पहिया अछि। एहिमे कोनो एकटाकेँ छोट-पैघ रहलापर गाड़ी आगू नहि बढ़ि सकैत अछि। एहि दुनूक समानतामे स्त्रीक भूमिका बहुआयामी अछि, जकर अनेक सार्थकरूप हमरालोकनिकेँ देखबा मे अबैत अछि। माता, बहिन, पत्नी, पुत्री, भाउजि, पीउसि, ननदि, सासु, दादी, नानी आदि अनेक रूपक भूमिकाक सार्थक निर्वहन करए पड़ैत छैक। हम एना कहि सकैत छी, जे स्त्री अपन सार्थक बहुविधिरूपमे पुरुषक जीवनकेँ उच्च आओर प्रगतिशील बनबैत अछि। स्त्रीक कार्यक्षेत्र अत्यन्त व्यापक रहल अछि—

कार्येषु मंत्री, करणेषु दासी, भोज्येषु माता, शयनेषु रम्भा।
मनोनुकुलाः क्षमा धरित्री षड्गुण युक्ता त्वीह

तेँ षड्गुणसँ युक्त धर्मपत्नी स्त्री अपन पतिक कल्याणार्थ सभ काज सम्पन्न करैत छथि आओर सहज शक्ति, सामर्थ्य ओ परोपरकारक जीवनकेँ महत्व दैत सर्वोच्च स्थान प्राप्त करैत देखल गेल छथि। दोसराक लेल अपन जीवन अर्पित करबाली स्त्री 'मनुस्मृति'मे देवीस्वरूपा ओ आराध्या मानल गेल छथि—

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः।
यत्रं तास्तु न पूज्यन्ते सवांस्त्राफला क्रियाः।।

अर्थ अछि— जाहि कुलमे स्त्री पूजित सम्मानित होइत अछि कुलक देवता प्रसन्न होइत अछि, जाहिठाम स्त्री अपमानित होइत छथि, ताहिठाम यज्ञादि सबकर्म बेकार भ' जाइत अछि।

मार्कण्डेय पुराणक देवी महात्म्यक (दुर्गा सप्तशती) प्रायः प्रत्येक श्लोकमे नारीकेँ भगवतीक रूपमे सम्मानक दृष्टिसँ देखल गेल अछि।

'मातृरूपेण संस्थिता, शक्तिरूपेण संस्थिता' आदि-आदि।

एहि प्रकारक नारीक प्रत्येक रूप ओ असीम गुणक कारणेँ नारीकेँ विद्या, शक्ति आओर पवित्रताक प्रतीक कहल गेल अछि। एहि विषयपर 'दुर्गा सप्तशती'क एगारहम अध्यायमे कहल गेल अछि—

'विद्याः समस्तास्तव देवी भेदाः,
स्त्रीयः समस्ताः सकला जगत्सु।।'

एहि श्लोकक माध्यमसँ नारीक अतीतक पता चलैत अछि जे नारी कोन सम्मानक योग्य अछि आओर एकर स्तुति कोन प्रकारसँ कएल जाए। एहि कालमे नारीक स्थिति जाहि गतिसँ बढ़ैत देखल गेल ताहि गतिसँ घटैत सेहो देखल गेल अछि।

वेद, पुराण, ब्राह्मण आदि ग्रन्थ एवं कवि मनीषीलोकनि द्वारा सम्मानित नारी अनेकानेक अलंकारसँ युक्त— भद्रा, रौद्रा, नित्या, गौरी, धात्री, कृष्णा, धूमरा, देवी आदि नाम आ रूपसँ गौरवान्वित कएल जाइत छलीह। प्रकृतिक प्रत्येक अंशमे विद्यमान नारी कतौ शक्ति, कतौ चेतना, कतौ लज्जा, कतौ प्रतिष्ठा, कतौ निद्रा, कतौ श्रद्धा आदि अनेक नामसँ देवीक रूपमे स्तुत्य आओर सुसज्जित कएल गेल छथि। ओना नारी शब्दक सर्वप्रथम संकेत 'पास्कर गृह्यसूत्र' एवं 'अर्थववेद'मे प्राप्त होइत अछि। विवाह, कन्यादान, पाणिग्रहण कालमे सबसँ पहिने नारी द्वारा 'नारी' शब्दक उच्चारणक प्रयोग भेल अछि। किएक तँ नरसँ ओकर सम्बन्ध पूर्वमे नहि छलैक। (पास्कर गृह्य सूत्र 1/6/2, अर्थववेद 14/2/63)

नारी अतीतक इतिहासक परिप्रेक्ष्यमे यदि हम नारीक स्थानक विशलेषण करैत छी त' परम्परागत दृष्टिकोणमे ओकर स्थान सम्मानीय रहल छल, ओकर पूजा होइत छलैक जाहिठाम देवता वास करैत छलाह। एहि प्रकारक धारणा एवं उक्ति बारम्बार दोहराओल जाइत रहल अछि। प्राचीन कालमे नारी विदुषी छलीह आ समाजमे हुनका उच्च स्थान प्राप्त छलनि। मिथिलामे एखनो बूढ़-पुरानक मुँहसँ सुनल जा सकैछ जे एहि पंचकन्या- अहिल्या, द्रौपदी, तारा, कुन्ती, मन्दोदरीकेँ प्रातः स्मरण ओ प्रतिदिन नाम लेला पर महापातक नाश होइत अछि।

विदेह जनपद प्राचीनकालमे अति प्रसिद्ध जनपद रहल अछि जाहिठाम विदेह राजा छलाह। ई जनपद मिथिला नगरीक रूपमे प्रसिद्ध छल, जकर सभ्यता, संस्कृति आ संस्कारक उदाहरण एखन धरि देल जाइत अछि। अतीतकालीन नारीमे सीता, भारती, भामती, गार्गी, मैत्रेयी, लोपामुद्रा आदिक नाम अत्यन्त गर्वसँ लेल जाइत अछि। सीता सन कुलीन आ संस्कारी बेटीक धारणा आइयो मिथिलाक बेटीसँ जुड़ल अछि। मिथिलामे धोती, पाग, माछ, पान, मखान, कला, बोली आ विद्वान अति प्रसिद्ध रहल अछि। अतः मिथिलाक अतीतकालीन नारीक छवि अपराजेय, सबला, निर्मला, सती, व्यवहार कुशला, समय ओ परिस्थितिक अनुकूल अपन शक्तिक परिचय देमएबाली विवेकशीला, विदुषी आदिक रूपमे रहल अछि। सतयुग, त्रेता, द्वापर एवं कलियुगमे नारी पुरुषकेँ शक्ति दैत रहलीह अछि आ नारी पुरुष-शक्तिक स्त्रोत सेहो रहल छथि। नारी एक समयमे अनेक रूप ग्रहण कए सकैत अछि

आओर जीवनकेँ अनेक व्यवहारमे आनि स्वतंत्र भूमिकाक निर्वहन क' सकैत छथि। ई बात सर्वविदित अछि, सभ जनैत अछि, तखनहुँ आइ समाजकेँ एकर स्थिति पर विमर्श करबाक आवश्यकता पड़ि गेल छैक।

आजुक स्त्री वर्त्तमान सन्दर्भमे मात्र 'संकल्पना' नहि रहि, एहि संकल्पनाक मजबूत घेराकेँ तोड़ि कए बाहर निकलि रहल छथि। मध्यवर्गीय मिथिलाक परिवारमे एखनहुँ धरि सम्बन्धक केन्द्र स्त्री वा पुरुष नहि रहि माता-पिताबला स्त्री-पुरुष छथि। एहि प्रकारक सम्बन्ध विराट अतीतक सभ्यतामूलक अन्तर्विकास ओ इतिहासक उपजा थिक। मुदा ई ध्रुवसत्य अछि जे माता-पिताक भूमिकामे स्त्री एक सबल शक्तिक रूपमे सोझां आबि रहल अछि। एहि सबल नारी-शक्तिक ज्ञात इतिहास एवं तथ्यक लेखा-जोखा कएलापर मिथिलाक सामाजिक जीवनमे पितृ-सत्तात्मक व्यवस्थाक आधिपत्य रहल अछि आ भविष्योमे बहुत दूर धरि एहि सत्ताक साम्राज्य रहबाक संभावना छैक। पितृसत्ताक स्थापित आधिपत्यमे पुरुषक भागीदारी अधिक होइत अछि ताहिसँ कृषिमूलक सभ्यता आ कार्य-पद्धतिमे पुरुषक भागीदारी बढ़ल देखल जा सकैत अछि आओर एहि प्रकारक भागीदारीसँ पुरुष समाजक मानसिक संरचना सुदृढ़ भेल अछि जाहिसँ ओ नारी मानसिकतामे हस्तक्षेप करैत देखल गेल छथि। मैथिली साहित्यमे एहि प्रकारक विषय-वस्तुक विश्लेषण-विवेचन हमरा बाध्य क' दैत अछि जे नारीक स्थिति आधुनिककालमे कोन प्रकारक छल। मिथिलामे पालवंशक आधिपत्यक पश्चात कर्णाट सामाज्यक स्थापना राजा नान्यदेवक शासन-व्यवस्थासँ आधुनिक मिथिलाक आरम्भ हम मानि सकैत छी। तेरहम-चौदहम शताब्दीक कर्णाटवंशक अन्तिम राजा हरसिंहदेवक शासनकालमे कविशेखराचार्य ज्योतिरीश्वर ठाकुरक आर्विभाव प्राप्त हेइत छैक। हुनक लिखल प्राचीन पूर्वांचलीय साहित्यक एक मात्र गद्य 'वर्णरत्नाकर' उपलब्ध भेल अछि। ताहिमे तत्कालीन मिथिलाक समाजिक जीवनक विविध रूपक चित्रण अति विशिष्ट रूपेँ कएल गेल अछि। एहि ग्रन्थक तृतीय कल्लोल (अध्याय)मे 'अन्धकार वर्णना' कएल गेल अछि से अति विशिष्ट विवरणक संग प्रस्तुत अछि। मुदा एकर वर्णन जाहि प्रकारेँ तलनात्मक रूपेँ कएल गेल अछि— 'स्त्रीक चरित्र अइसन दुर्लक्ष्य' से आपत्तिजनक अछि। संगहि चतुर्थ कल्लोलमे 'कुट्टनी वर्णन' 'मार्कण्डेय सहोदर जेठ बहिन अइसन, लोभक बेटी अइसन, बुद्धिक मौसी अइसन, कुटिल मति, नारदक सहोदर अइसन घटक आदि तुलनात्मक अभिव्यक्ति तत्कालीन समाजिक जीवनमे व्याप्त नारीक प्रति अवधारणाक द्योतक अछि। हम मानैत छी जे कुट्टनीक लक्षणमे कविशेखराचार्यक अभिप्राय कोनो गलत नहि होएतनि। तथापि मानवीय आस्थाकेँ डाइन, जोगिन कहि प्रताड़ित कएल जाइत छैक तकरा लेल मानवाधिकार आयोग आपत्ति प्रकट करैत अछि। एहि प्रकारक अवधारणा मिथिलामे वर्त्तमान नारीक स्थितिक अवलोकन करबैत अछि। नारीक सम्बन्धमे एहि प्रकारक मानसिकता मात्र मिथिले समाजक नहि थिक। लगभग संसारक प्रत्येक सभ्यता ओ धर्ममे नारी-जातिक प्रति लगभग एहि प्रकार रवैया रहल अछि। नारी दमनक सैकड़ो रूप देखल जा सकैत अछि जकरा समाज मे नारीक लेल हितकर कहि प्रस्तुत कएल गेल अछि। 1326 ई.मे महाराज हरसिंहदेव द्वारा मिथिलामे पंजी-प्रबन्धक स्थापना कएल गेल जाहिमे मिथिलाक उच्च-मध्यवर्गीय समाजक वैवाहिक व्यवस्थाकेँ पंजीकृत कए सुनिश्चित कएल गेल। एहिमे पुरूषवर्गक सात एवं स्त्रीवर्गक पाँच पीढ़ीक अन्तराल अतिदृढ़तासँ खोज कए सम्बन्ध स्थापित कराओल जाइत अछि। एहू पंजी-प्रबन्धक नेपथ्यमे एक जन लोककथा प्रसिद्ध अछि जाहिमे स्त्रीपर आरोप एंव प्रश्नचिन्ह लगाओल गेल जे ओ चाण्डाल-गामिनी छलीह। हुनका गर्म लोहसँ दागि कए परीक्षा लेल गेल जाहिमे ओ असफल भेलीह आ हुनका चाण्डाल-गामिनी घोषित कएल गेल। मुदा समाजक किछु वर्ग एहि तथ्यकेँ विश्वासक परिधिमे आनि पड़ताल कएलक त' निष्कर्ष छल जे ई चाण्डाल-गामिनि नहि छथि आओर हिनकामे पीढ़ीक अन्तरमे सम्बन्ध स्थापित छल। मिथिलामे पंजी-व्यवस्था स्थापित भेल, खूब जोर-शोरसँ एहि व्यवस्थाक अन्तर्गत योजना, व्यवहार ओ परम्पराक निर्वहन कुशलतापूर्वक होमए लागल, दुष्परिणाम भेल जे मिथिलामे तत्कालीन सामाजिक जीवन दुष्कर भ' गेल। बालविवाह, वृद्धविवाह, बहुविवाह, अनमेल विवाह एवं काटर प्रथा अपन पएर जमौलक। समाज विकृत होमए लागल। हरसिंहदेवी प्रथाक दुष्परिणाम समाजकेँ झकझोरि देलक। मिथिलाक सांस्कृतिक परम्पराक नींवकेँ हिला देलक आओर समाजिक व्यवस्था चरमरा गेल। कुलीन, उच्चवर्गीय जातिमे जयबाक-अयबाक हेतु एक गोटा अनेक विवाह कएल, अत्यन्त वृद्ध सेहो नवयौवना कन्यासँ विवाह कएल। छोट बालिकाक विवाह कुलीन वृद्धसँ कएल जाए लागल। एक गोटा दू-चारि-आठ-दस विवाह कएलनि। दुष्परिणाम भेल जे मिथिलामे नारीक स्थिति अत्यन्त दुखद ओ पीड़ादायक भए गेल।

महाकवि विद्यापतिक युग मैथिली साहित्यक लेल स्वर्णयुग रहल अछि। कविपति विद्यापति महान पंडित छलाह। संस्कृत, प्राकृत शब्दक मर्मज्ञ विद्वान रत्न 'देसिल बयना'क खोज कए जन-मानसमे ओकरा स्थापित कएलनि। एहि देसिल बयनामे कविक अनेक रचना मिथिलाक तत्कालीन नारीक व्यक्तित्व ओ स्थितिकेँ उजागर कएलक अछि। एहिठाम किछु पंक्ति प्रस्तुत करब जाहिमे कवि अत्यन्त सहज, सुलभ ढंगसँ नारीक स्थितिक बखान कएलनि अछि—

पिया मोर बालक हम तरूनी गे।
कोन तप चुकलहुँ भेलहुँ जननी गे।।

दोसर,

हमे युवती पति गेलाह विदेश
सासु ननद किछुओ नहि जान
आँखि रतोँधी सुनए न कान।।

तेसर,

जनम होअए जनु जओ पुनू होइ

जुवती भए जनमए जनु कोइ
होइह जुवति जनु हो रसमन्ती
रसओ बुझए जनु हो कुलमन्ती।।

चारिम,

जुग-जुग जीबथु बसथु लाख कोश।
हमर अभाग हुनक नहि दोस।। आदि।

अनेक प्रकारेँ नारीक दुःख, लज्जा, सहनशीलता, स्थिति, मान, सम्मान, दमन, उत्पीड़न, शोषण आदि विविध रूपक वर्णन कवि कएलनि अछि। आश्चर्य तँ तखन होइत अछि जखन सब प्रकारक प्रतिबन्ध लगेलाक बादो पुरूष मानसिकता नारीक दोषपर आश्रित, आधारित रहि ओकरा दोषी ठहरबैत अछि। प्रत्येक धर्म, वर्ग ओ सभ्यताक पुरूष जानि बुझि कए नारीकेँ नहि बुझल रहस्य आओर अनिष्टकारी तत्व कहल अछि। यात्राकालमे विधवा नारीक दर्शन, माथ पर खाली घैल लेने नारी आदि तत्व नारीकेँ दोषी सिद्ध करैत अछि आओर पुरूष अपन पुरूषार्थ, शक्ति, अहंकार, दम्भसँ भरल-सिद्धान्तक बखान करैत अछि। भर्तृहरि कहने अछि– 'त्रिया चरित्रं पुरूषस्य भाग्यं दैवो न जानाति कुतो मनुष्यः।' अंग्रेजीमे सेहो शेक्सपीयर अपन नाटक 'हेमलेट' मे कहने छथि– 'फेल्टी दाय नेम ईज वोमेन'।

मैथिली साहित्यमे विधापतिक पश्चात् उमापति, हर्षनाथ, मनबोध, चन्दा झा आदि कविक रचनामे नारीक विविध रूपक वर्णन भेटल अछि। कविवर सीताराम झाक कवितामे मिथिलाक नारीक विविध रूपक वर्णन व्यंग्यात्मक ढंगसँ प्रस्तुत कएल गेल अछि। किरणजी, भुवनजी, मधुपजी आदिक कविता आधि, व्याधि, उपाधि, जड़ताक क्षय करएबलाक स्वरुप ओ तकर उद्घोषणा करैत अछि। ईशनाथ झाक कविता–*मारि कुमारी देखल एहि ठामे,/भागलि कोन अभागलि वामे,/मोदित जननी जनकसँ,/शिव केर भार्या विदित भवानी,*

यात्रीक रचनामे तत्कालीन सामाजिक स्त्रीक चित्रण, अतीत, वर्त्तमान आ भविष्यकेँ एकदम स्पष्ट कएलक अछि। 'चित्रा'क अनेक कविताक संगहि 'पत्रहीन नग्न गाछ'क अनेक रचनामे नारीक वैविध्य-विषयक वर्णन कएल गेल अछि। एतबे नहि मैथिलीक कथा-उपन्यासमे नारीक स्थितिक सांगोपांग वर्णन प्राप्त भेल अछि। राजकमल चौधरीक 'मुक्ति प्रसंग', हरे कृष्ण झाक 'एना त' नहि जे', अजित आजादक 'अनभुआर होइत समय', शारदा झाक 'बीति जयबाक क्रम मे'क संगहि नव-नव लेखक-लेखिकालोकनिक लेखनी एहि दिस बढ़ि रहल अछि।

समाज आ साहित्य दुनू एक-दोसराक पूरक अछि। साहित्यमे मानव मनक अतिसूक्ष्म अनुभूतिक अभिव्यक्ति होइत अछि जाहिमे रचनाकारक विराट एवं विशाल हृदयक अनुभूति घटित घटनाकेँ साकार कए सरोकारमे बदलि दैत अछि। अन्तर्मनक प्रवृत्ति बाहरमे होइत कठोरतम व्यवहारसँ टकरा कए खूजए लगैत अछि। तखन ओकरा लेल एक दुर्लभ क्षण अबैत अछि, जकर उपयोग ओ करए लगैत अछि। एहि प्रकारक आन्तरिक सन्दर्भ चेतना-प्रकृतिक ओहि विशाल सौन्दर्यसँ मिलैत अछि आओर अन्यायकेँ न्यायमे परिवर्तित करबाक सामर्थ्य रखैत अछि। मनुष्य पितृसत्ताकेँ प्रकृतिक संग संसाधनीकरण ओ पूँजीवादी स्वरूपसँ बाहर निकालि कए, अभिशापसँ मुक्त कए नारीकेँ अन्यद्वयमता, दासी, अमानवीय भयावहतासँ बाहर कए मिथिलाक धरती पर स्थापित करबाक प्रयासमे सतत लागल अछि। मुदा वर्त्तमान परिदृश्यमे एकाएक स्त्रीक विमर्श लहलहाय लागल अछि। चारू दिस नारी, नारी, नारीकेँ देख' सुनए आ अनुभव करबाक लेल उन्मुक्त भए रहल छथि जेना कि नारीक दर्शने नहि भेल हो। सत्ता उपभोगक्तावादी प्रवृत्तिक विकास चेतना समाजमे बदलैत स्थितिकेँ शीर्ष पर पहुँचेबाक लेल नव कार्यशैली सत्तात्मक व्यवस्था दिस अग्रसर भए रहल अछि। एहिसँ अंततः मध्यवर्गीय नारी-चरित्रक मानसिकता बन्द मुट्ठीसँ निकलि विमर्शमूलक साझेदारीमे भाग लेत। तखने असलमे वर्त्तमान नारीक भविष्य रूपायित ओ साबित भ' सकत। एहिठाम निराश होयबाक मामला नहि बनैत अछि। किएक वर्त्तमान ओ भविष्यक स्थितिक हालत एक ठोस रूप लए निश्चित रूपसँ आगू बढ़त, जे नारी प्रक्रियाकेँ रूपान्तरित कए बाट भटकल चौबटिया पर ठाढ़ स्त्रीक पहिचानकेँ स्पष्ट करत आओर सशक्तिकरणक प्रवृत्तिकेँ आगू बढ़ओत।

नारीक सबसँ पैध त्रासदी इएह अछि जे ओ अपन भूमिका स्वयं तय नहि कए, ताकतवर पुरूष-व्यवस्था पर आश्रित रहल अछि, जाहिसँ असुरक्षित आ परतंत्र अनुभव करैत रहैत अछि। समय अछि एहि त्रासदीसँ त्राण, परम्परागत बन्धनसँ मुक्ति, शिक्षा, सुरक्षा, सत्ता, शासन आदिमे अपन आवश्यकतानुसार भूमिकाक निर्वहन करए, अधिकार हेतु स्वर मुखरित करए, अन्याय, अत्याचारक शिकार नहि भए शिकारीक शिकार करए, परिस्थितिसँ लड़ए, औकातक हिसाब-किताब करए, दुष्टकेँ अस्वीकार करए, दानवीय प्रवृत्तिक तिरस्कार करए, चुनौतीक सामना करए, भयकेँ भयानक नहि बनाबए, उपेक्षाक दर्दकेँ दर्ज नहि करए, दम्भ ओ धमण्डक खिलाफ लड़ाई लड़ए, जानल-बुझल मायाजाल, चमक-दमक, आधुनिकतम व्यवस्थाक विरोध करए, अनावश्यक दखलन्दाजीकेँ अन्दाजीसँ नहि लए, नारीक निजी जीवनमे अपना हेतु समय, किछु करबाक इच्छा, किछु करबाक स्वप्न, दोसराक लेल जीवन उत्सर्ग आओर अपन हितक रक्षाक कर्त्तव्यकेँ सर्वोपरि मानए। ई त' मानल जाइत अछि जे मिथिलाक बेटी नेनहि सँ बुधियारि होइत अछि। एहन स्थितिमे स्त्री-पुरूषक मणिकांचन योग मात्रकेँ कल्पनाक उड़ान धरि नहि सीमित राखि वर्त्तमान समाजमे नारीक भविष्य दिस अग्रसर होयबाक चाही। एहिमे मात्र पुरूषक कल्याण नहि सम्पूर्ण मानव जातिक कल्याण निहित रहत। कतबो किछु भ' जाए मुदा प्रवृत्ति, मानसिकता ओ दृष्टिमे परिवर्त्तन करए पड़तनि। एहिठाम महाकवि पंक्ति प्रासंगिक थिक–

मर्मक वेदन वाण समान।
आनक दुःख आन नहि जान।

•

गति

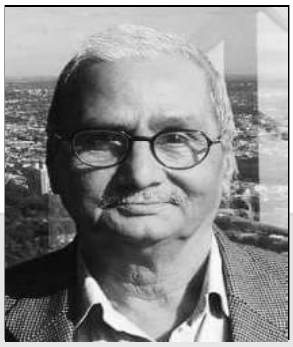

सुभाष चन्द्र यादव

प्रोफेसर्स कॉलोनी, सहरसा

सम्पर्क : 9006740092

कथाकार, समीक्षक एवं अनुवादकक रूपमे ख्यात नाम सुभाष चन्द्र यादवक घरदेखिया, बनैत बिगड़ैत(मैथिली कथा संग्रह) हाली(अंग्रेजीसँ मैथिली अनुवाद) बिहाड़ि आउ (बंगलासँ मैथिली अनुवाद) आदि चर्चित पोथी छनि। साहित्य अकादेमी परामर्श मंडल, मैथिली अकादमी कार्य समिति, बिहार सरकारक सांस्कृतिक नीति निर्धारण समिति एवं जीआइए, भारतीय भाषा संस्थान, मैसूरक भूतपूर्व सदस्य श्री सुभाष चन्द्र यादव प्रबोध साहित्य सम्मानसँ सम्मानित छथि।

ओ गुजरि गेलीह। जे पचासो बरस सुख-दुखमे संग रहलीह से आब कतहु नहि छथि। साल लाग' चललै। ओ चल गेलीह अछि। नहि जानि कतय भरिसक तरंग बनि ब्रह्मंडमे विलीन भ' गेल होथि।

खाली हुनक स्मृति रहि गेल अछि। हुनक हँसैत-बोलैत मुँह कतहु नहि अछि जकरा देखि सकी, छूबि सकी, प्रेम क' सकी।

हुनक हाड़-माँसक ढाँचा तिरोहित भ' गेल अछि। मगर पूरापूरी नहि। पँजराकेँ एगो जरल टुकड़ी अछिए। अवशिष्ट पदार्थकेँ रूपमे ओ जीवित अछि। हुनक अस्थि कांसाकेँ बरतनमे कोठलीकेँ कोनमे राखल अछि।

ओहि कलशकेँ देखि लगैत रहैत अछि जेना ओ छथिहे। अंश रूपमे जीवित छथि। जरि गेलाक बादो ओ अस्थि कोनो पदार्थ जकाँ हवा, नमी आ अंधकार संगे प्रतिक्रिया करैत रहत। तैँ होइत अछि जेना ओ संग-संग जीवि रहल छथि। खाली चेतनामे नहि, भौतिको रूपमे।

हुनक अस्थि गंगामे प्रवाहित भ' चुकल अछि। जेठ बालक विधानपूर्वक ई कर्म बहुत पहिनहि सम्पन्न क' चुकल छथि। ई अवशेष समाधिक लेल संरक्षित छल। लेकिन समाधिक नेआर टरैत गेल। आब त' पहिल छाया लगचि आयल अछि। अस्थि-कलशकेँ एतेक दिन घरमे राखब ठीक नहि अछि। से जेठ बालक कहैत छथि।

मगर ओहि पात्रसँ हमरा कहियो घिन्न नहि भेल। ने कहियो डर भेल। ने अनिष्टकेँ आशंका। ओहिसँ पत्नीक छायाभास होइत रहल। बुझाइत रहल जेना ओ लगेमे छथि।

लेकिन एना कतेक दिन चलत! किछु कर' पड़तैक। सद्गति दिअ पड़तैक। गतिए जीवन थिक, गतिए मृत्यु थिक।

हुनक अंतिम संस्कार बहिलबा पोखरि पर भेल छलनि। पोखरिक महार पर बनल मसानमे। छहरदेवालीसँ घेरल आ लोहाकेँ गेट लागल मसान। आगूमे खूब गंहीर आ विशाल पोखरि। चारू बगल पक्काकेँ घाट। उतरबरिया महार पर पैघ मंदिर। अनेक तरहक झमटगर गाछ-बिरिछ। तीन बगल बसल लोकवेद। ओ मसान नहि, कोनो स्मारक सन लगैत अछि। सोहाओन आ दर्शनीय।

भेल जे हुनक अवशेष ओत्तहि द' अबियनि। हुनका जलमे बिसर्जित क' दियनि। सब जल एक्के होइत अछि। गंगा के हो या पोखरि के। जल त' जले अछि। प्राणदायी जल। हुनक अंश जलक्रीड़ा करैत रहतनि। ओ जलजीवमे मीलि जेतीह। नित नव रूप ग्रहण करतीह।

शुरू सितम्बरकेँ बरसाती गुमकी अछि। साँझकेँ पाँच बजल अछि। झोरामे कलश ल' क' विदा होइ छी। फुल्ला त' फुच्चे हल्लुक अछि, मगर आवरण भारी। हाथ बदलैत रहैत छी। घाम पोछइ छी। हुनक संग ई हमर अंतिम यात्रा अछि। फेर ओ एकांकी आ अनंत भ' जेतीह।

महार पर तीन गोटय अछि। तीनू अलग आ दूर-दूर बैसल अछि। हवा लगा रहल अछि।

पुबरिया महारकेँ घाट बेसी साफ छैक। असमसानो ओम्हरे छैक। मसानकेँ गेट लागल छैक। भीतरमे बकरी सभ चरि रहल छैक।

गेट लग ठाढ़ भ' क' हम हुनक अछिया ठेकनाबै छी। ओकर रूप बदलि गेल छैक। आब ओ समतल नहि अछि। उभड़-खाभड़ भ' गेल अछि। ओहि पर घास जनमि गेल छैक।

हम नीचाँ उतरैत छी। सभसँ निचला सीढ़ी पर बैसि क' सुस्ताइ छी। कने कालमे सूर्य अस्त भ' जायत।

अस्थिकेँ कलशसँ निकालि हम ओकर अंतिम दर्शनर करैत छी। रंग हाड़ सन नहि रहलै। आब ओ मैलछाह भस्म भ' गेल अछि। विसर्जित कयला पर ओ डूबैत नहि अछि। हेलैत रहैत अछि। पानिक छिट्टा देला पर गोता लगबैत दूर जा रहल अछि। पानि पर हेलैत आन-आन चीजमे मिज्झर भ' जाइत अछि। आब ओ देखाइत नहि अछि। अदृश्य भ' गेल।

नाथो के घर महारे पर छैक। अछिया वएह खुनने छल। कलश ओकरे देबाक चाही। एहि पात्रक उचित अधिकारी वएह अछि। नाथो घर पर नहि छल। कतहु जनमे गेल अछि। ओ बरतन हम ओकर पुतौहकेँ सौंप दैत छी।

सूर्यास्त भ' गेल छैक। असमसानमे चरैत बकरी सभ गेट लग जमा भ' गेल अछि। गेट बंद छैक। ओ सभ बाहर निकल' लेल आफत तोड़ने अछि। भें-भेंकेँ स्वरमे किलोल क' रहल अछि। बकरी सभक कौलैत देखि हठात कश्मीर मोन पड़ैत अछि। होइए कश्मीरकेँ लोक अखन ठीक बकरिए सन हएत। तीन सौ सत्तर के फाँसमे फड़फड़ाइत।

लगइ-ए जेना पत्निओ कहैत होथि— हमरा एतयस्न निकालू, घर ल' चलू।

की ई संभव छैक? आइधरि क्यो असंभवके संभव बना कसल अछि? दुनिया कतेक बेबस, कतेक निस्सहाय अछि!

साँझ उदास लगैत अछि। मन पर अवसाद पसरल जा रहल अछि। एकाकी, असहाय, निरावलम्ब हेबाक अनुभूति गछाड़ने जाइ-ए।

मोन पड़ैत अछि ओ अपन छोटकी बहीनकेँ कहने गेल छलीह— हिनको देखिहैक।

सोचैत रहैत छी अपन बहीनसँ ओ हमरा लेल की अपेक्षा करैत छलीह? हुनका त' बुझले रहनि एहि मतलबी दुनियामे क्यो ककरो नहि अछि। तखन ई आशा किएक? लगैत अछि हमरा प्रति हुनक जे प्रेम छलनि तकर ई अभिव्यक्ति मात्र छल। हुनक बहीन खाली आलम्बन छलखिन।

आब ओ जल, थल आ व्योममे विलीन भ' गेलीह अछि। प्रकृतिमे व्याप्त भ' विराट बनि गेल छथि। ओ कण-कणमे समाहित भ' जेतीह। एकसँ अनेक भ' जेतीह। सब चीजमे हुनके प्रतिरूप देखाइत रहत। ओ खिलैत फूलमे बिहुँसतीह, कोइली संगे कुहुकतीह, कोनो बहिनामे अपन आभास देतीह।

उतरबरिया महारपर बनल मंदिरमे स्त्रीगणक जुटान भ' रहल अछि। देव-दर्शन आ संध्या-विहार। धीयापूता खेल रहल अछि।

बड़क विशाल गाछ पर चिड़ै-चुनमुनी अनघोल मचेने अछि। हजारक हजार चिड़ै चुनचुन करैत फुदकि क' एतय, फुदकि क' ओतय जा रहल अछि। भरिसक सभसँ नीक विश्राम-स्थलक खोजमे अछि। खिस्सा सुनने छी जे किछु एहनो लोक होइत छल जे चिड़ै-चुनमुनीक बोली बूझि जाइत रहय। हमहूँ अँटकर लगबैत छी। होइ-ए सभ अपन-अपन समांगकेँ खोज-खबरि लइ खातिर एतेक घोल-फचक्का करैत हएत। भरिसक एहि हिंसक कालमे सुरक्षित घर घूरि अयबाक उत्सव मना रहल अछि।

पछबरिया महार पर एकटा बहुत सुन्दर हवेली अछि। हवेलीक आगाँ कुर्सी पर एकटा महिला बड़ी कालसँ बैसल छलीह। अन्हार भ' गेलैक। ओ कुर्सी ल' क' भीतर जा रहलि छथि। ओ हमरा मसान साधिका सन लगैत छथि। आब वएह पत्नीकेँ लग रहतीह, अंतरंग सखी जकाँ।

सब किछु सियाह भेल जाइत अछि, अंधकारमे डूबल जा रहल अछि। चिड़ैकेँ कलरब मंद पड़ि गेल छैक। मसान शांत, निर्विकार आ निस्पृह लगैत अछि। पता नहि हम कोन मोहमे पड़ल ठाढ़ छी। बुझाइ-ए जेना पत्नी अंतलमे प्रविष्ट भ' कहैत होथि— आब त' अन्हार भ' गेलै। घर जाउ ने!

लगइ-ए ओ मौन रहितो सदैव एहिना चेतबैत रहतीह।

●

लघुकथा

सुमतिया

अरुण लाल दास

बैंगलोर, सम्पर्कः +91 9973937303

सुमतिया आ दिनमा जरे जरे सात किलास तक पढलकै। गोर नारि सुमतियाक नाक तँ पिचले रहैक मुदा चढंत जुआनीमे ओ आरो निखरि क' नीमन एक टा माउग नियर लगैत छलै। लौकी सन पोछल-पोछल बाँहि धप-धप गोर सुमतियाकेँ देखिते दिनमाक मनमे प्रेमक हिलकोर उठ' लगलै।

सात-आठ बरखक बाद दुनूकेँ एक दोसरासँ भरिपोख बतियेबाक मौका लागल रहैक।

दिनमाकेँ समरथ सकरथ देखि सुमतियाकेँ मनमे लड्डू फूटय लगलै। छट्ठा-सतमा किलासक बात ओकर स्मृति पटल पर नाचि जाइत छलै। ओ सोचय लगैत छलि— 'केहेन उकड़ी रहय दिनमा। मजाल छलै ओकरा आगू सुमतियाकेँ किओ आँखि उठा क' देखि सकै छलै।'

दुनूकेँ आमक गाछीमे भेट भेलै तँ भरि मोन बतियाइते बतियाइते प्रेम परबान चढि गेलै। दिनमा ओकरा मोनमे बैस गेलै।

एक राति दिनमाकेँ मोबाइलसँ मैसेज पढिक' सुमतियाक मोनमे सेहो लड्डू फूटय लगलै। ओकरा बिसबासे ने होइ जे दिनमा ओकरा एहेन नकपिच्चीसँ बियाहक प्रस्ताव रखतै।

सब गप्प तय भ' गेलै। एक प्लानकेँ तहत अधरतियाक बाद सुमतिया कठपूला लग ठाढ छलै। दुनू गोटे पैदले रमि देलकै बाबा कपलेश्वर स्थान।

मंदिरमे भोरे-भोर पहूँच क' जयकारा लगबैत दिनमा एक चुटकी सेनुरसँ सुमतियाक सीथ लाल करैत बाजि रहल छलै,—'हे बाबा हमरा दुनूकेँ जनम-जनम धरि लौक लगौने रहू।

लौकडाउनमे दुनू गोटे एक दोसरसँ जीवन भरिक लेल बन्हा गेल छल।

●

अशोक

लोहना, मधुबनी(बिहार)

सम्पर्क : 8986269001

मैथिलीक प्रसिद्ध कथाकार अशोक जीक त्रिकोण (सहयोगी प्रकाशन),ओहि रातिक भोर, मातबर आ डैडीगाम कथा-संग्रह प्रकाशित छनि। मैथिल आँखि, बात-विचार, कथाक उपन्यासः उपन्यासक कथा हिनक आलोचनाक पोथी थिक। आँखिमे बसल मास्को यात्राक कथा अछि। साहित्य अकादेमीसँ हिनक राज मोहन झा विनिबन्ध प्रकाशित भेल अछि। अशोक जी बिहार सहकारिता सेवाक सेवानिवृत्त पदाधिकारी छथि।

राहत

अकस्मात् मोबाइलक घंटी बाज' लागल। देखलहुँ रामसोहाओन मण्डल रहथि। बक्सरक हमर मित्र। ओत' हम सभ संगे काज करैत रही। आब रिटायर भ' क' जमशेदपुरमे रहैत छथि। रामसोहाओन बाबू हालचाल पुछलनि— 'की सुनील बाबू, की हालचाल? बाहर नहि ने निकलैत छी? घरेमे रहब।'

'हँ, कत्त' जायब। बाहर निकलै बला समय छै? ई कोरोनाकाल कहुना बीति जाय।' हम कहलियनि। 'बीति त' जेबै करतै। जीवनमे एहिना छोट-पैघ आफद सभ अबैत छैक। ओहिसँ राहत सेहो भेटैत छैक।' हम सभ बड़ीकाल धरि आत्मीयतापूर्वक गपियाइत रहलहुँ।

बक्सरमे हम पहिले-पहिल सरकारी नोकरी शुरू केने रही। पच्चीस-छब्बीस बरसक एक वेफिक्र युवक। उन्मुक्त ठहक्का लगबै बला ओहि युवककेँ मोन पाड़ैत छी त' एखनो हुलास भरि जाइये। एहि उदास आ एकरस कोरोनाकालमे एक हँसैत-खिलखिलाइत युवककेँ मोन पड़ि जँ किछुक्षण लेल प्रसन्न भ' जाइ त' की हर्ज? त' ओहि युवककेँ दोस्तो सभ रहै ओहने ठहक्का लगबै बला सभ। एहन मस्त जीव सभ जे अपन काज चुटकीमे निपटा लिअय। कोनो, केहनो समस्या सोझाँ अबै, हँसैत-खेलाइत सोझरा लिअय। चारि-पाँचटा एहन नोकरिहारा सभक एक मण्डली बनि गेल रहै। एहिमे सभसँ सीनियर रहथि शिवदयाल सिंह। हुनकर ठहक्का नामी रहय। खिस्सा सुनेबामे माहिर कोनो खिस्सा सुना क' ठहक्का लगबैत अपन बगलमे बैसल लोककेँ जाँघ पर एक चाट लगा देथि। ताश खेलेबाक हुनका बड़ स'ख रहनि। साँझमे बेसीकाल हुनके ओहिठाम जुटान होइ। एहि जुटानमे हम त' रहबे करी। जयनाथ राम, चिन्तामणि चौबे, रामसोहाओन मण्डल आ मोहम्मद असलम सेहो रहथि। सभक बएस पच्चीससँ चालीसक भीतर रहय। ताशकेँ संग रंग-विरंगक गप चलै। लोकक अदगोइ-बदगोइ होइ। शिवदयाल बाबू ओत' दस बरखसँ विभिन्न पद पर पदस्थापित रहथि। चारिटा एस.डी.ओ सभक संग ओ काज केने रहथि। बक्सर ओहि समय अनुमण्डल छल, जिला नहि भेल रहय। सभसँ पैघ हाकिम एस.डी.ओ. होइ। बेसीकाल आइ.ए.एस. बला एस.डी.ओ. आबै। ओकर सभक बहुतो गप-सप सुनाबथि शिवदयाल बाबू।

एहि ताशखेलीमे कहियो क' हुनका ओहिठाम लिट्टी सेहो लगै। हुनकर क्वार्टरमे एकटा गाछ रहनि आम के। ओही आमक गाछक तरमे लिट्टी लगैत छल गोइठाकेँ सैंति क' ओहिमे आगि लगाओल जाय। ओहि आगिमे लिट्टी पकय। आलू, भट्टा आ टमाटर पकाओल जाय। ओकर चोखा बनय। लिट्टीकेँ निकालि क' गमछामे राखि ओकरा झोलल जाय। एहि प्रक्रियामे लिट्टी लागल छाउर निकलि जाइ। साफ भ' जाइ। फेर लिट्टीकेँ घीमे डुबाओल जाइ। हास-परिहासक संग लिट्टी-चोखाक भोजनमे भोजपुरक अपूर्व सुगन्धि पसरि जाय। ओ मोद-मण्डली आ ओ भोजपुरिया सौरभ आइयो एहि उबाउ जीवनमे रस बरसाब' लगैत अछि। आब एहि पटना शहरमे रहैत फ्लैटसँ बाहर निकलब सेहो माससँ उपर भ' गेल। जहियासँ उपरबला फ्लैटमे शर्माजीकेँ कोरोना भेलनि अछि तहियासँ अपन फ्लैटसँ बाहर नहि निकलैत अछि। चारूकात मृत्युकेँ तांडव अछि। एहनामे देह खाली अस्पताल जाइये अथवा घरमे कोरोनासँ बचबाक चेष्टामे लागल रहए। मुदा मोनकेँ त' रोकल नहि जा सकैए। मोन त' टहलि रहय अछि बक्सरमे। बक्सरमे त' बेसीकाल घुमिते रही। आफिसकेँ काजकेँ अतिरिक्त क्षेत्रमे सेहो भ्रमण कर' पड़य। रंग-विरंगक लोक सभसँ भेंट हुअय। लोक सभ सोझ-साझ छल, बेसी पेंचियल नहि रहय। एही संग कखनो चुनाओ त' कखनो विधि-व्यवस्थामे त' कखनो क' कोनो घटना-दुर्घटनामे हमरा सभकेँ ड्यूटी सेहो बजाब' पड़य। कोनो-कोनो कर्त्तव्य पालन मोनकेँ दर्द आ देहकेँ थकानसँ भरि दिअय। एक बेर ठोरा नदीमे जे नाव दुर्घटना भेलैक त' हमरा आ

जयनाथ बाबूकेँ ड्यूटी लागि गेल। जयनाथ राम हरदम एकटा बैगमे पनबट्टी राखथि। पानक हुनका बड़ स'ख। भुट्ट-खाँट कने धोधियल रहथि। गजबकेँ हाजिर जबाबी। हम दुनू गोटा जखन नदीक किन्हेरमे पहुँचलहुँ त' ओह, बड़ हृदय विदारक दृश्य रहैक। नाव पर सवार सोलह लोक मरि गेल रहैक। स्त्री-पुरुष, बच्चा सभक लाशकेँ नदीसँ निकालल गेलै। चारू दिस क्रन्दन, हाहाकार। दू दिन धरि ओहि काजमे लागल रह' पड़ल। काज खतम भेलाक बादो तीन-चारि दिन तक ओ दृश्य सोझाँमे नचैत रहल। जयनाथ बाबू त' ओहि अवधिमे बैरासँ पनबट्टी निकालबाक सुधि सेहो बिसरि गेल। ने खायल-पीयल हुअय ने कोनो काजमे मोन लागय। मुदा, जेना होइ छै, ओहो समय बीत गेल फेर क्रमशः हम सभ अपन प्रकृतिमे आबि रहल छलहुँ। बरखाकेँ समय आबि गेल छल। बरखा शुरू भेलै त' किछु दिनक बाद गंगा नदीमे बाढ़ि आबि गेलै। नदी कातक दिअर इलाकामे लोक सभ ओहि बाढ़िमे फंसि गेल छल। एक दिन आदेश भेटल जे ओहि दिअर इलाकामे फँयन लोक सभकेँ राहत सामग्री बटबाक छैक। शिवदयाल बाबूक नेतृत्वमे मोद मण्डलीक सभ सदस्यकेँ ड्यूटी भेटल रहै। ओ एस.डी.ओ. के कहि क' हमरे सभकेँ ड्यूटी लगबा देलनि। एस.डी.ओ. संग सभक बैसक भेलै भोरमे निकलबाक रहै। आठ बजे भोरमे हम सभ गंगामे लागल जहाज पर चढ़लहुँ। ओहि जहाजमे चारिटा नाव बान्हल छल। नावमे राहत सामग्री सभ राखल छलैक। योजना रहै जे एक-एकटा नाव संग चारि अधिकारीकेँ चारिठाम रिलीफ बँटबाक छैक। जहाज विदा भेल। जहाजकेँ नियत स्थान सभ पर पहुँचबामे दू घंटा समय लगबाक छलै। ताबत हम सभ जलखै केलहुँ। चाह पीलहुँ। सभटा इंतजाम रहै। गप-सरक्का होइत रहल। रमन-चमन चलैत रहल। तखने एकटा दिअर दृष्टिगोचर भेल। कनेक आर लग गेलहुँ त' देखलहुँ लोक सभ हाथ हिला रहल अछि। एखन किन्हेर दूर छल। दूरीक कारण लोक सभ बहुत छोट-छोट देखाय। शिव दयाल बाबू कहलनि— 'सुनील जी, आब अहाँ तैयार भ' जाउ। पहिल स्पाट पर अहींकेँ जेबाक अछि। फेर जहाज चारि बजे धरि घुरि क' आओत। सामग्री वितरण क' केँ अहाँ तैयार रहब।' हम उठि क' तैयार भेलहुँ। कागज-पत्र संगमे रहबे करय। वितरण सम्बन्धी सभ निर्देश एस.डी.ओ. संग भेल बैसकमे कहि देल गेल रहय। सभ संगी सभ गुडलक कहलनि। जहाज किन्हेरसँ करीब आधा कि.मी. पहिने रूकि गेल। ओत'सँ नाव पर जेबाक छल। नाव पर मलाह छल। ओ नावकेँ किन्हेर तक ल' गेल। किन्हेर पर बहुते लोक— बूढ़, जवान, बच्चा सभ गुलगुल क' रहल रहय। हम उतरि क' हुनका सभकेँ कहलियनि जे सरकार दिससँ जे राहत सामग्री आयल अछि, से सभकेँ सुविधापूर्वक बँटि जाय, ताहिमे अहाँ सभ मदति करू। सभ काज अहीँ सभकेँ करबाक अछि। एहि बात पर थोड़ेक काल फेर गुलगुल शुरू भेल। हम तीन-चारिटा युवक सभकेँ एकठाम गोलियाएल देखि, हुनका सभकेँ लग बजेलहुँ। कहलियनि— 'अहाँ सभ ई काज अपना हाथमे लिअ'। नाव पर चना, सत्तू, दियासलाइ, मोमबत्ती, किरासन तेल अछि। कत्ते अछि से देखि रहल छी। एहि दिअर पर कत्ते परिवार, कत्ते लोक हैब अहाँ सभ?' एक युवक कहलनि— 'सर, पचासटासँ बेसी परिवार नहि हेतै। सभटा मिला क' दू सएसँ कमे लोक छै।'

— ठीक छै। सभ लोककेँ एक किलो सत्तू, एक किलो चना आ एक लीटरकेँ किरासन तेल भ' जेतै। एक पैकेटकेँ मोमबत्ती आ दू टा के दियासलाइ द' दिऔ। बटिखारा आ तराजू मंगबा लिअ'। एक गोटा एहि कागज पर परिवारक मुखियाक नाम, परिवारमे कुल व्यक्तिक संख्या लीखि क' दस्तखत वा औंठा निशान करबा लिअ'।' हम कहलियनि। त' ओहिमेसँ एक गोटा पूछि देलनि, सर, आ बच्चा सभकेँ?'

—'बच्चो सभकेँ एक्के रंग। बच्चा, सिआन सभ बराबर' हम मुसकुराइत कहलियनि। थोड़ेक काल समय लगलै। दूटा तराजु आबि गेलै। किरासन लेल वर्त्तन आ नपना आबि गेले। एक युवक कागज अपन हाथमे लेलनि। एक गोटे चना, दोसर गोटे सत्तू जोख' लगला। राहत वितरण सुचारू रूपसँ चल' लागल। किरासन सेहो कनेक कालक बाद नपनासँ नापि क' बँटाय लागल। कखनहुँ के कियो व्यग्र भ' कए उग्र भ' जाय। ललक' लागय। ओकरा शांत कर' पड़य। किरासन बँटबामे पहिने दिक्कत भेलै। लोक सभ डिब्बा, बोतल आदि अनलक तखन काज शुरू भेल। एहि सभ प्रक्रियामे करीब चारि घंटा लागि गेल छल। काज खतम नहि भेल रहय। हम जल्दी काज खतम करबा पर जोर द' रहल छलहुँ। जहाज अयबाक बेर भेल जाइत छलैक। आकि अकस्मात् जोरसँ गोंगियाइत चल अबैत, भयंकर तूफान पर नजरि गेल। किछु गोटा तूफानकेँ अबैत देख लेने रहै। हल्ला कर' लागल छल। आगूमे गंगा नदीक एहन चौड़गर विस्तार छल जे एहि पारसँ ओहि पार देखब कठिन रहै। तूफान बुझायल जेना गंगाक लहरि पर नचैत जोरसँ एम्हर आबि रहल अछि। तखने जहाज देखाइ देलक, ओ हमर आगू बला स्पाट पर मंडल जीकेँ लेबा लेल बढ़ि रहल छल। मंडल जी सेहो नाव पर सवार भ' क' किन्हेर छोड़ि देने रहथि। आहि रे बा, देखलियै नाव सुंइसँ पलक झपकैत बिला गेल। जहाज सेहो दृष्टिगोचर नहि भ' रहल छल। तखने एत्ते जोरसँ तूफान पहुँचल जे कियो ठाढ़ नहि रहि सकल। सभ जान बचा क' पड़ायल के कत' गेल किछु पता नहि चलल। सभ पड़ा रहल छल। हमहूँ पड़ाय लगलहुँ। हवा एत्ते तेज छल जे भागल नहि होइत छल। बालु आ धूरा उड़ि क' आँखिक आगू अन्हार केने छल। होइ छल जे खसि पड़ब। कहुनाकेँ अपनाकेँ सम्हारैत बढ़ैत रहलहुँ। गन्तव्य नहि बूझल छल। कत' जायब? कोना बाँचव एहि प्रलयसँ। तखने बुझायल जे अकस्मात् कियो हमर हाथ पकड़बाक चेष्टा क' रहल अछि। ओ व्यक्ति हमर हाथ पकड़ने किछु कालक बाद एक पलानीमे ढुकि गेल। तूफानकेँ संग आब पानि सेहो बरिस' लागल रहै। ओहि पलानीमे एक चौकी पर केथरी बिछल रहै। ओ व्यक्ति कहलनि— 'अहाँ एत' बैसू आरामसँ। हम थोड़ेक कालमे

अबैत छी। ई पलानी बहुत मजबूत छै। बहुतो आँधी-तूफान आ बरिसात देखने छैक।' ओ कनेक काल बैसि क' दम लेलनि। हमहूँ अपन साँसकेँ स्थिर क' रहल छलहुँ। कलेजा धौंकनी जकाँ चलि रहल छल। कनेकालक बाद ओ व्यक्ति चल गेला। हम चौकी पर बैसल नहि रहि सकलहुँ। एकदम चितंग पड़ि रहलहुँ। थोड़ेक भीजो गेल रही। तूफान वेग आब जेना थोड़े कम भ' रहल छलैक। तैयो पलानीमे टकरा क' चर्र-चरै-साँय-साँयकेँ ध्वनि क' रहल छलैक। तूफान आ बरखाक ओहि उद्दाम अनघोलके बीच गंगाकातक दिअरमे हम एक पलानीम चितंग पड़ल छलहुँ। करीब आधा घंटाकेँ बाद जखन तूफान आ बरखाक वेग आर कम भेलैक त' ओ व्यक्ति दोशाला ओढ़ने एक अंगपोछा आ सलगाकेँ कहुना नुका क' पलानीमे दौड़ि क' ढुकला। अंगपोछा आ सलगा दैत हमरा कहलनि– 'देह-हाथ पोछि लिअ' साहेब। समय बहुत बिकराल छैक। हम सभ त' हफ्ता दिनसँ एत' घेरायल छी। कत्तौ जा आबि नहि सकैत छी।' हम आब ध्यानसँ ओहि व्यक्तिकेँ देख' लगलहुँ। पचाससँ बेसी बएसकेँ ओ व्यक्ति हमरा जेना देवदूत सन लागि रहल छला। हमरा मोनमे भेल जे हिनकर नाम पुछियनि मुदा नहि, पुछलियनि। ओ अपने कहलनि,

'हमर नाम मंगला यादव छी। एहन सममे अहाँ अएलहुँ जे की स्वागत-सत्कार करू। अंगनामे कहलियैए जल्दीए भोजन तैयार करबा लेल। भूखो लाल हैत।' हम हुनकर चेहरा पर कातर भावकेँ देखि कहलियनि– 'कोनो तरबदुत करबाक काज नहि छै। जे घरमे उपलब्ध हअए सैह हमरा लेल अमृत हैत। अहाँ त' आइ हमर जान बचा देलहुँ। आब चिन्ता लागल अछि जे हमर संगी सभकेँ की भेल हेतनि।'

–'भगवान सभटा नीके करथिन साहेब। अपने निश्चिन्त रहू। आराम करियौ, हम फेर अबैत छी थोड़े कालमे खेनाइ ल' क'। कहि क' मंगला यादव फेर चल गेला। पलानी पर एखनो पानि आ हवा तड़-तड़ कड़कड़ केँ आवाज क' रहल छल। हम आब सलगाकेँ ओढ़ि लेने छलहुँ। एखनो स्थितिमे तनाओ आ थकान अपन असरि देखाब' लागल छल। ओंघाए लागल रही।

अकस्मात् आतिथेयकेँ आवाजसँ भक्क टूटल। देखलहुँ ओ लालटेन ल' क' ठाढ़ छथि। हुनक पाछूमे एक नवयुवती थाड़ी लेने ठाढ़ि रहय। ओ हरा दिस ताकि रहल छल। हम उठि क' बैसि गेलहुँ। लगले ओ नवयुवती थाड़ीकेँ हमरा लगमे राखि देलक। फेर लोटामे पानि आनि क' रखलक आ चल गेल। मंगला यादव लालटेन राखि क' कहलनि– 'साहेब जे रूख-सुख छै से ग्रहण कयल जाओ।' देखलहुँ तूफान थम्हल अछि, झींसी पड़ि रहल अछि। मंगला यादव एक दिस बैसल छला। थाड़ी दिस नजरि गेल त' देखलहुँ चारि आंगुर ठाढ़ कान बला थाड़ीमे भात, दालि आ आमक फाँड़ा अंचार परसल अछि। भुखायल त' रहबे करी, खाय लगलहुँ। ठीके अमृत छल। ओहेन राहड़िक दालि, ओ भात आ तकर संग ओ अंचारक स्वाद जीह पर आइयो विराजमान अछि।

आइ जखन मोन पाड़ैत छी त' मोन पड़ैत अछि जे ओहि भयंकर रातिमे सूतैत-जरौत कोनो भोर भेल से कहल नहि जा सकैए। रातियामे कखनो जोरसँ मेघ ढनढना उठय। बिजली कड़कि उठय। लालटेन मिझा गल रहय। सौंसे अन्हारमे बिजलीक चमकसँ कहुखनकेँ इजोत हुअय। होइ नहि छल जे ई भयंकर राति बीतत। मुदा जेना होइ छै ओहो राति बीतल। भोर भेल। जहाज आयल। मंगला यादवकेँ प्रति आभार व्यक्त क' जहाज पर चढ़लहुँ। कखन ओ मलाह आयल, कखन नाव पर चढ़ि जहाज धरि अयलहुँ, किछु विवरण आब मोन नहि अछि। भोरक दू-तीन घंटाक समय कोना बीतल छटपट करैत से की कहल जाय। मोन अछि जे मण्डलजी के देखि भरि पाँजकेँ हुनका पकड़ि लेलहुँ। भरि राति एहि चिन्तामे रही जे मण्डलजीकेँ की भेलनि। जीवित छथि कि नहि। हुनका जीवित देखि मोन आनन्दसँ भरि उठल रहय। देखलहुँ डेक पर ओ सभ व्यक्ति मौजूद छथि जे संगे आयल छला। सभक चेहरा पर भय आ यंत्रणासँ बाहर निकलबाक उसांस जेना देखाइ द' रहल छल। जहाज विदा भेल। विपरीत धाराक कारणेँ धीरे-धीरे आगू बढ़ैत रहय। भरि राति किछु लोक गंगामे जहाज पर आ किछु लोक गंगाकातक दिअर पर आसन्न मृत्युसँ संघर्ष केने रही। मुदा आब हम सभ एक-दोसराकेँ देखि मुसकुराय लागल छलहुँ...। ●

अप्पन मिथिला

चंदना दत्त
राँटी, मधुबनी
सम्पर्कः 8544224341

अछि प्राचीन नगर अप्पन मिथिला
सौभाग्य हमर हम वासी मिथिला

अनेक तीर्थस्थलसँ परिपूर्ण
गामेगाम विराजथि देव जतय

जँ घुमि सगरो हम प्रसार करी
पर्यटन स्थल रूपेँ विकास करी

लागत धर्रोहि तीर्थयात्रीकेँ
नहि हाथ पसारब मुम्बइ-दिल्ली

हे माय भक्त वत्सला ज्वालामुखी
सुनु अरजी हमर सहज सुमुखी

भागय ई काल हुअए नवका विहान
बनाबी हम मैथिल नवका पहिचान

●

रा. ना. सुधाकर

विराटनगर, नेपाल
सम्पर्क : +977 9804051724

रा. ना. सुधाकरकेँ नामसँ प्रख्यात मैथिलीक मूर्धन्य साहित्यकार राम नारायण सुधाकरक जन्म विक्रम संवत 2002(1946 ई.)मे वीरगंज, कलैयामे गाममे भेलनि। अपाठ्य मैथिली अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार, मैथिली विकास अभियान पुरस्कार, श्याम कला मैथिली सेवा पुरस्कार आदिसँ पुरस्कृत हिनक दियरि नामक कथा संग्रह प्रेसमे छनि। सम्प्रति मोरंग विराटनगरमे रहि साहित्य साधना करैत छथि।

झखड़ल फूलक गाछ

फुलिया आब एतबे सोचि रहलि अछि जे अइ उछिलल जुआरिक तोरकेँ बन्न कोना करबाक चाही? ओ जे आइ देखलक गोहाली घरमे... से वगेनो एक दिनक हेल-मेलसँ सम्भव नहि छैक। खनजनियाँक बकार बन्न छलैक आ फुलियाक झोंटा... आँचर सभ उधिया रहल छलैक– 'ई सपरतीब... हमरे साँय हिनका भेटलैन?... एतबे आगि धधकैत रहौ त' हमरासँ कहितेँ' ...हम अपन भायसँ... आ बापसँ सम्बन्ध करा दितियौ... छिनरि नहि तन... सतभत्तरी. ..' आइयो फुलिया ओइ दुनूकेँ सेंध पर नहि पकड़ैत त' लोककेँ थोड़बे जनतब होइतै जे... फुलियाक पारा आर उपर चहरि गेलै– 'भरछूही अनकर पारस... अनकर भोग चटैत काल मोन कनियों नहि धुकधुकयलौ? ने भगवनक लेहाज ने लोकक डर...' तावत् जीवछ... ओकर मरद मुँहमे पान गिलोठने... हिचकैत आयल घरवालीक चण्डी रूप देखि क' ओकर माथा ठनकलै– 'आइ ई कोन नव बात हइ?' आश्चर्य भेलै आन-आन दिन त' फुलिया ओसारा पर बैसलि खनजनियाँक माथाकेँ ढील-लिख बिछैत रहैत छलि कि ओकर पैर दबैत रहैत छलि... ने त' जाँतमे मरुआ पिसैत... मस्तीमे वगेनो गीत गुनगुनाइत रहैत छलि। मुदा आइ त' जेना ओकर गाल फुलल होइक। घरवालाकेँ देखिते फुलिया आगू डेग बढ़ौलकि...

'मर कहाँ जाइ हइ? ...एक गिलास पानि लबौ त'...'

'हम जाइ हती पँच हियाँ...' जीवछाक गट्टा धरैत ओ अपना दिस तनलकि– 'चलौ इहो... उहें फरिछबै...'

मायक सोंझामे जीवछाक गट्टा ओकर घरवाली ध' लेलकै से ओकरा कोना दन लगलै ओ गट्टा छोड़बैत कने रंजो भेल– 'छोड़... छोड़... छोड़ गट्टा छोड़ बाजौ ने की भेलैक एकरा... पँच हियाँ की हैक?'

'मरदबा पुछै हइ की भेलौ बलू...' फुलिया गट्टा धेनहि जीवछासँ पुछलकै– 'अयँ हे! ई तोहर के?' ...ओ खजनियाँ दिस आँगुर देखोलकै।

'मर बहिं... आइ तोरा की भेलौक गे? माय हइ से तो नहि चिन्हैत छही?'

'माइ हइ!... माइ हइ त' माइ लग मर्द सुतै हइ कि... मर्द अपना बहु लग सुतै हइ?'

तड़ाक... तड़ाक... जीवछाक समधानल चमेटासँ फुलियाक देह आ दिमाग घिरनी जकाँ नाचि उठलै, ओ गाल हँसोथति लुत्ति जकाँ घर दिस पड़ायलि। जीवछा सेहो चार परसँ एकटा चेरा झिकैत ओम्हरे लपकल– 'आइ तोहर सब भुत हम झारि देबौ...'

फुलिया घरमे आबि क' अपन पढ़िया नुँआमे गिल्लट बला पाजेब आ टिनही छिपा लपेट क' काँख तर दबलकि– 'किछु करौ, मुदा आँखिसँ देखली से झुठ?... बाजौ, गोहाली घरमे तुँ दुनू गोटे तरे-उपर... की झूठ हइ?... हम घास लेने अबैत रही... कनियो लाज लेहाज नै होइ गेल'...'

'चुप्प... बदजात'

साँझ एक पहर बीत गेलै फुलिया आइ कोनो घरमे दिया नै जरोलकि जीवछा उठल आ अन्हारे घरमे टो-टा करैत अछि कतहु माचिस भेट जाइ त' दीप जरा देतै... अनायास ओकर हाथ कोठी पर राखल चिक्कसक पथियामे पड़ैत छैक... ओ हाथ आगू बढ़बैत अछि त' केहुनी पथियामे लगलैक आ भरलो पथिया चिक्कस भूँइयाँमे उझिला गेलै– 'खस सार! सबकेँ दिमागे उलटल है...' बड़बड़ाइते छल कि चूँ-चूँ... चूँ-चूँ करैत छुछुनर ओकरा पैर परसँ होइत बाहर दिस

भागि जाइत छैक।

फेर फुलिये दीप जरबैत अछि। दिनमे त' अट्टेबज्जर खसल रहै से ओ चिक्कसक पथिया नेने चुल्हि तर आसन बासन लगोलकि। चिक्कस सनितो छल आ सिसकितो छलि। ओकरा आउरमे अइ बात सभकेँ कोनो खास महत्त्व कोइ नै देत छलैक... मुदा फुलियाकेँ ई सभ घिनाओन लगैत छै। आ जकरा ओ आइ धरि सासु बुझैत आयल छल से सरिपहुँ ओकर सौतिन ठहरि गेलैक से ई बात ओकरा खैंक जकाँ गरैत छैक...। ताहुसँ बेसी ओकर आइ धरिक विश्वास जे एना जकाँ बुकनी-बुकनी भ' गेल छलै से ओ नहि समेटि पबैत अछि... जखन दुनूकेँ मोन मिलले छलैक त' अइ घरमे फुलियाक कोन बेगरता? आ ओकरे की भेलैए? कोन जुआनी गेल छैक? कैकटा संबंध ओ अखन क' सकैत अछि... मुदा नहि? फुलिया बिचारैत अछि... एकरा सभ जकाँ अइ वासन, ओइ वासनमे हम मुँह नहि कारी करब... आ एकरो सबकेँ एना खुलि क' खाय-खेलाय नहि देबै... मौगिएकेँ अइठामसँ कात करी... आ ओ त'ब मेंहक रोटीकेँ जोरसँ उनटा दैत अछि... एक बून्नकेँ बेटी हम होइ... ओ घर नहि छोड़त।

रातिमे जीवछ अपना बातमे फुलियाकेँ बान्हैक कतेक कोशिश केलक। मुदा फुलिया छिटकि जाइत रहलै। जीवछा ओकरा पटिया रहल अछि जे कहुना ई कल्ला जाँति क' रहोअ आ फुलिया बिचारैत अछि कोना ई नकलोल कसिमे आओत?

'है, एना जे ई अट्टाबज्जर खसौने हइ से कि हम ओकरा फाँसी चढ़ा दियौक?'

'इह... बियहुआले' दरेगे नहि... ओकराले' दरद!'

'देखौ जे भेलै से बिसरि जाउ...'

'की छैक?'... जाउ ने अपना... लग...' आ ओ बिछान पर उठि क' बैस रहल 'हम के?'

'ई त' हमर फुलो हइ... आब चुप्प होतै से निमन कि... कोनो अप्पन माइ है?'

'छिया! छिया!!... अपन माय रहौक कि सतमाय... सरधा कोना क' होइ गेल'...'

'इहे बजौ ने... कोइ छिपा परोसि क' आगू देतै त' लोक गरहन नै करतै?'

'आ हमहूँ जँ छिपा परोसि क' ककरो देबै त' तोरा मंजुर होत'?'

'की बोललेँ'... बोल त' फेनो... एके दबियामे हम...'

'वाह रे पानिबला मरद! आ फुलिया जिवछक पैर छानि लेलकि 'हमरा मारि दैह... हम मरि जैब... तों भुखले-नँगटे राख'... हम रहि लेब... तोरा पर हम अपन बयस गारि देब... हमरा सभ कबूल है... मुदा ई सौतिन नहि... एकरा हटा दहक अइठाँसँ...' आ ओकरा आँखिसँ दहो-बहो नोर बहैत रहलै।

फुलियाकेँ आब अन्हरगरे उठ' पड़ैत छैक। ओहि दिना खनजनियाँ नहि जानि अपन नूआँ-वस्त्र ल' क' कत बहरा गेलै। बुढ़िया रहैत छलैक त' सभ काज वैह करैत छलै... भोरे उठि क' गाय-बकरीकेँ बाहर करब... गोबर काठी करब... पानि उघब... बरतन-बासन... फेर साँझमे माल-जाल घर करब... दुरा-दरबज्जा खड़रब... सभ तरहक हुच्ची-फुच्ची... फुलिया त' महरानी बनल राज करैत छली मुदा तइसँ की? आब ओ अपने सभ काज क' लेत... फुलिया सोंचैत अछि... आ गोबरो पथैत अछि... खनजनियाँकेँ गेना तीन-चारि दिन भ' गेलै मुदा जीवछा आ ओकर सासु दुनू मिल क' जे खैंक फुलियाक करेजमे गरौने छलैक... इस्स... ओ खैंक त' रहि-रहि क' ताजिनगी ओकरा गरैत रहतैक आब— 'के हे?' घुर... घुर' फुलियाकेँ लगलै जेना कोनो कुकुर-बिलाइ आँगनमे पैसलैए? ओ गोहाली घरसँ मूड़ी नमरोलकि— 'है के गेल हय अँगना' जबाव नहि भेटलै त' ओ गोबरहे हाथे ड्योढ़ी पर आयलि— 'के है?' ...सुन्न आँगनमे के पैसल हय?...' आँगन आबि क' जे देखलक त' ओकरा ठकमूड़गी लागि गेलैक। फुलियाक भीतर फेर जेना ओ खैंक गरलैक ओ तरुछि उठलि— 'फेनो की लेब' अयलै ई अइठाँ... आँय?'

ओ खजनियाँ छली। जीवछाक माय। ओकरा गड़ाबकोर लागि गेलै— 'मोन नहि मानलक हमर... बौआ बिना सभ सुन बुझाइत छल, अहीठाम तोरा सभक कोनो काज क' देबौ त' हमरा संतोख भेटत... ममता नहि छुटल फुलिया... ओकरे सप्पत जँ फेनो एहन कर्म करी त' सातो जनम अहिना रही... हमरा जीवछासँ दूर नहि करै... कोनो कोनमे हम पड़ल रहब। हम कल जोड़ै छियौ फुलिया...'

'बड़ दरेग होइ हइ त' पड़ल रहोअ कोनो कातमे...' आ फुलिया मुँह घुमा क' चल गेलि। रातिमे खा-पी क' बुढ़िया उठलि आ जीवछा बला केथड़ी... सिरहाना... आ गोनरि ल' क' ओकर बिछान करय विदा भेलि बहारि सोहारि क' गोनरि बिछाओलकि आ केथड़ी ओछबिते छली कि फुलिया हनहनाइते अयलैक आ हाथसँ केथड़ी-सिरहना लूझि क' अंगनामे फेक देलकै— 'तोरा हम कहने छलियौक कि नहि जे ओकर कोनो काज नै करैले'... फेर ई सभ की है? ...बेलज्जी... अखन त' हम छिते छी...' ओ गुम्हरलि।

खनजनियाँ बुढ़ियाकेँ लगलै जेना जीअक' जे-जे सहारा ओइ केथड़ी आ गोनरिमे लेपटायल छल से ओ झखड़ल गेल फूलक गाछ जकाँ फुलिया बड़ा बेदर्दीसँ उखाड़ि क' आँगनमे फेक देलकैए... जड़िसँ उखड़ल... एकात ...अनेरुआ ...ओकरा गड़ाबकोर लागि गेलै।

●

अपनेक जीवन समाज आ परिवारक लेल बेसी महत्वपूर्ण अछि...
कृपया मास्कक उपयोग करी आ आवश्यक सोशल दूरीक धियान राखी।

नेपथ्य कथाक मंचन

डा. अभिलाषा

सीतामढ़ी, बिहार

सम्पर्क : 8409408123

नवीनतम पीढ़ीक डा. अभिलाषा, मैथिली कथाक लेल एक नव अध्याय थिक। हिनक लेखनी अन्हारक विरुद्ध लड़ैत एकटा किरिनक कथा कहैत अछि। गृह जिला सीतामढ़ीसँ अबैत हिनक एखन धरि 'पह', आ 'ओ छौंड़ी' कथा संग्रह तथा समीक्षा पुस्तक 'पोथी-पाठ' प्रकाशित छनि। एकर अतिरिक्त विभिन्न पत्रिकादिमे कथा एवं समीक्षात्मक आलेख आदि निरंतर प्रकाशित होइत रहैत अछि। अभिलाषा जीकेँ एखन धरि 'ज्योत्स्ना सम्मान' तथा 'डा. गणपति मिश्र साहित्य सम्मान'सँ सम्मानित कएल जा चुकल अछि। सम्प्रति एसिस्टेंट प्रोफेसर, मैथिली विभाग, चंद्रधारी मिथिला महाविद्यालय, दरभंगामे कार्यरत छथि।

शहरक ठीक बीचो-बीच नदी बहैत छै। लखनदेइ। तेँ बान्ह सेहो शहरक बीचेमे छै। बान्हक दुबगली कचरा ढेरी लागल आ हवाक प्रतापे जकर गंध शहरक अंदर धरि पहुँचब एकर स्थायी स्वभाव छै। आ जत' लावारिस मवेशी सभ ओहिसँ अपन रुचिक अनुसार खाद्य सामग्री ताकि-ताकि खाइत रहैत अछि।

ओना तँ ई बस्ती बान्हसँ कनी सन हटि क' छै, मुदा ई मूल बस्ती छै । बस्तीमे गोट तीसेक घनगर परिवार छै। ओत' बूढ़ सन एक पीपरक गाछ सेहो छै। गाछ एहि बस्तीक लोक लेल खाली समयमे उपयोगमे अबैत छै।

एहि बस्तीक अन्तिम छोर पर छै संध्याक दू कोठरीक कौलिक घर। पति शहरे कतहु कमाइत छै। एखन धरि घरमे बच्चा नहि छै। सासु-ससुर सेहो नहि छै।

कि तखने संध्या घरसँ निकललि। लगलै जेना मौसमक मोन देख' निकललि हो! ओ पहिने तँ आकाश दिस गरदनि उठौलकै। पूरा आकाश नील-नील रहै। बीच-बीचमे धूसर रंग मेघक टुकड़ी सभ रसे-रसे करियाइत, फेर उड़ियाइत रहै...

ओ अपन नजरि पीपरक गाछ पर ल' गेलि। ओत' जाक' लगलै जेना सूर्यक अस्तित्व पीपरक डाढ़ि पर अँटकल हो! किछु काल तँ ओ ओकरे निहारैत रहलि। फेर नजरि मेघक टुकड़ी सब पर ल' गेलि, जे किरिनक सुसुम धाह पाबि एहन लागि रहल छलै जेना कोनो नव सन दुलहिनक ललायल गाल होइ, आ जे अपन पतिक कोमल स्पर्शसँ मीठ-मीठ आँचमे सेका रहल होअय! सएह सभ सोचैत संध्याकेँ अपन पति दीपकक स्पर्श मोन पड़ि गेलै, आ ओ डरे सिहरि उठलि!

दीपकक ख्याल अबिते ओ अपन नजरि ओहि सुंदर दृश्यसँ हटा, यथार्थ पर आनि लेलक। चट द' अंदर घरमे ढुकलि, आ पटिया निकालि तकरा आगू द' जाइत रस्ताक कातमे ओछा लेलक। फेर अन्दर गेलि, आ दोबारा बहरायलि तँ हाथमे सिंगारक पेटारी छलै। दीपकक अयबाक समय भेल जाइत रहै। ओ अपन दुलहिनकेँ अस्त-व्यस्त सन देखि माहुर भ' जाइत छै...

कि तखने ओकर नजरि हरकठबा बाली चाची पर पड़ि गेलै, जे पटिया पर आबि बैसि गेल रहै! ओ संध्याक हाथमे सिंगारक पेटारी देखिते सहसा अपन केशकेँ जोर-जोरसँ नोच' लगलै। संध्या फक्, मुदा बुढ़ियाक मनोभाव धरि बूझि गेलै। आ ओ बैसैत देरी पहिने बुढ़ियेक खोंता भेल केशकेँ कंघी झाड़' लगलै।

बुढ़िया मोने-मोन दुलहिनक एहि व्यवहारपर खुश भ' उठलि। मुदा बाजलि किछु नहि। जेना ओकर सोचब होइक जे बेटी-पुतोहुकेँ मुँहपर प्रशंसा कएलासँ ओ दूरि भ' जाइत छै!

संध्या जखन ओकर चोटी गूहय लगलै, बुढ़िया ललकी फीता दैत बजलै 'आइ फेन जनू असमान साफे लेखा लगैत हइ! खाली मेघ, ढनढन। बरसतै नहियें!' संध्या ओकर बात पर 'हँ'मे मूड़ी हिलबैत टा, मुदा अपन काजमे लागलि रहलै।

पर बुढ़िया अपन हाथक लहठीकेँ घुमबैत कतहु हेरायलि बजिते रहलै 'घोर कलजुग आ गेल हइ हे! सेठबाक हियाँ जे सुनली...! एह, एतना न पाप बढ़ गेलै ह' जे इहे सब न होतै! से ठीके न, कहू त' जे अइ भरल सौन-भादोमे कहूँ अइसन रौदी होइत हइ ! जुलुम्मे न करै हइ! हे सुरुज भगमान!...'

बुढ़ियाक गप सुनि संध्याक ठोरपर एक सरल रेखा घिचा गेलै। ओ जुट्टीकेँ खोपा बनबैत पूछि देलकै 'चाची आइ कथी लागी एतना धार्मिक बनल हता जे पाप-पुन्नकेँ तरजू ले के...'

– 'ऊँह, हम कथी लागी तरजू ले के जोखम! ई हबे-बयार तेहन उड़ैत हइ जे...'

– '...जे की!' बुढ़ियासँ फरक्कति पाबि गेल संध्या अपन ओझरायल केशकेँ कंघीसँ सोझ करितो, मुदा उत्कंठित पूछि देलकै। फेर की भेलै जे आँखिक कोनियाँसँ बुढ़िया दिस ताकहु लगलै। जेना

अपन आँखिसँ बुढ़ियाक मोनकेँ पढ़बाक चेष्टा करैत होइ!

मुदा किछु स्पष्ट नहि बुझयलै। तेँ अंतमे नहियेँ रहल गेलै 'हे चाची, आब कोन अइसन हबा-बयार उठलै ह' जे हिनी ओइ चिंतामे...'

– 'की कहियो हे दुलहिन, अइसन न खबर देबो कि अचरज से...'

– 'अच्छा !'

– 'हँ हे! ई आइजकेँ बच्चा-बुतरू सब जे-जे न गुल खिलाबे! बड़ अजगुत बात सब हो रहलै ह'...'

संध्या अपन कंघीमे फँसल केशकेँ छोड़बैत, आ कनी रुकैत बजलै– '...हइ बुढ़िया, सफ्फा बात बोलू न! कि खाली तखनी से बुझौअले बुझा रहल छी !...'

– 'हे साँचो न बोलै छियो! से, ऊ सब सुन के लगै हय जे आय दा भल्ले न हमर बुतरू सब पढ़लक-लिखलक! ई सब बेमारी बेसी पढ़लके-लिखलके घरमे पहिले अबै हइ, कलजुगमे छेद...'

संध्या गप सुनितो मुदा फेर कतहु आन दिस ओझरा गेलि। केशमे कंघी कर' लागलि। नहि जानि किएक, एखन कंघी करैत नीक लागि रहल छलै। लगैत रहै जेना अपन माथमे सूतल ऊर्जाकेँ धीरे-धीरे उठा रहल हो। दीपकक सोझा एकरा एकदमसँ 'फिट' रहबाक रहैत छै। किए कि दीपक एकर बसियायल सूरत देखते माहुर भ' जाइत छै...

तकरो कारण छै। संध्या अपन आलसी स्वभावक कारणेँ एहि छोट सन गृहस्थीयोमे काज करैत थाकि जाइत छै, आ जाहिसँ दीपक तमसा जाइत छै! तेँ एहनामे ई कंघी एकर रामवाण बनैत छै। ई कंघी एकरामे टटकापन अनैत छै...

अपन सासुर पक्षमे बस संध्ये टा थोड़ेक सन पढ़ल-लिखल रहय। बाँकी सब तँ बुझू करिया अच्छर भँइस बराबर। से ककरो कोनो हिसाब-किताब होइ, झट संध्या लग पहुँचि जाय।

मुदा ई तँ खुश होयबाक बदलामे डरा गेल करय। ई लोककेँ कोना कहो जे अहाँ सब महींस छी, तँ हम सेहो हाथीक दाँतसँ कम नहि छी!

अठमा तकक सर्टिफिकेट सेहो तँ हाथीक दाँते छलै न! ओ तँ घरक बगलक स्कूल रहै, जे कहियो ड्रेस लेल, तँ कहियो साइकिल लेल चलि गेल करय। आ जत' चपरासीसँ ल' क' सर आ मिस सभक आ ओ खिचड़ी बनब' वाली तकक अरदल्ली बनलि रहय...

से संध्याक जखन बियाहक चरचा चल' लगलै तँ अपन चलाकी देखबैत एक दिन एकर बाप स्कूलसँ एक सर्टिफिकेट ल' अनलकै, आ लड़ला वलाकेँ ई कहैत जे 'हम पइसा-कउड़ी कहमा से गिनम!', दीपक सन अनपढ़-गमारसँ फोकटमे संध्याकेँ बियाहि लेलकै!

से संध्या हिसाब-किताब कप्पार सिखैत, हँ मिस आ सरक आशीर्वाद सँ 'क-ट-प' केर ज्ञान जरूर भ' गेल रहै। अक्षर जोड़ब, जोड़ि क' पढ़ब, एत' धरि कहू जे ठीकसँ नामो लिखल नहि होइ छलै शुरूमे...

...जाह, किदन-कहाँदनक सोहमे संध्याकेँ ओ नयका हबा-बयार वला गप सोहे परसँ जेना उतरि गेल रहै! ओ चट द' अपन अतीतसँ उतरि वर्तमानमे आबि गेलि। फेर बुढ़ियाकेँ कनडेरिये देखलक। ओ अपन चेहरा पर वएह घिन-भावकेँ सहेजने हाथक लहठी नचा रहल छलै। ई टोकि देलकै 'हँ त' चाची, ऊ जे कहैत रहथिन नयका हबा-बयार वला बात !...'

बुढ़ियाक सेहो जेना भकू टुटलैक, संध्याक आँखिमे जिज्ञासा-भाव देखि ओ अपन छवि-छटाक संग साफ-साफ बाजब शुरू कयलकै 'हे आइ डागदर भगत न हइ, उनके हियाँ गेल रहियो न, से ओजे जे सुनलियो...'

– 'कथी!'

– 'इहे बिदेसी बात!'

– 'धत् बुढ़िया, कथी से बोलथिन न!' संध्याक जिज्ञासा तखन वास्तवमे काफी अधीर बनि चुकल रहै।

– 'इहे जे कहाँदुन अब शादी करे लागी, चाहे जौरे रहे के लागी, मरदबा के रहनाइ कोनो जरूरी न रहलै!'

– 'मतलब?' संध्या चौंकि उठलै।

– 'हे..., तू त' अपने पढ़ल-लिखल हता! आ पढ़ल-लिखल के ई किरदानी न बूझल होतो जे हमरे से...'

– 'भकू चाची! हिनी बोलथिन न। हम कोन पढ़ल...'

बुढ़िया अगराइत बजलै 'हे, तहूँ केना बुरबक नाही..., हे अब मौगी-मौगी सेहो जौरे रह-जी सकैत हय! अब कोनो हल्ला-गुल्ला न! से आब मरदबा से शादी करे के भी कोनो जरूरत न रहलै! मरजी हय त' करू, आ न मरजी हय त' न करू!'

– 'अछा, से!...'

– 'हँ! कहाँदोन ई पहिले बिदेसिये सबमे चलन रहै। से आब हूआँ रह रहल पढ़ल-लिखल लोक सब अपनो देसमे ले अनलकै!'

संध्या गुम, अचंभित! मुदा बुढ़िया ओहिना गुनैत रहलै– 'आ तेहने ई अपन कपरजरुआ सरकार! ओकरा धड़-पकड़ क' के रोकतिऐ त' से न, अरुरी उन्टे पोन ठेले पर बिर्त हइ...'

– 'अच्छा!'

– 'हँ हे, साँचो न कहै छियो! अब त' कहाँदोन अपन सरकार सेहो ओकरा कानूनमे ले लेलकै! से अब तू देखिहा जे नयकी छौंड़ी-मौगी सब अउरी लंगटे नचैत घुरतो! तः, से सफ्फा से उलट रहलै ह' ई दुनियाँ...'

आ बजैत बुढ़िया थोड़ेक चिंतित, मुदा बजैत-बजैत रुकि गेलै। फेर संध्याक चोटीक गुहनकेँ एकटक देख' लगलै।

संध्याक ध्यान गेलै। ओकरा बुझा गेलै, बुढ़ियाक नजरि भले हमर चोटी पर छै, किंतु मन कतहु आने ठाम छै।

ओना संध्या बुढ़ियाक गप सुनि क' स्वयं हरान भ' गेलि रहय। से ओ अपनेसँ बतियाइत जेना विचार' लागलि रहय जे ई कोन खराब छै! चाची तँ स्वयं एक टा स्त्री छै, से मरदक गुलामीसँ मुक्त किए ने होब' चाहैत छै! आ ने अपन बेटी-पुतोहुकेँ होब' देब' चाहैत छै! की अपन पसिन्न आकि नापसिन्न, चाहे अपना स्वतंत्र हस्तीक लेल मूड़ी उठायब नंगटे नाचब भेलै! एह, हय रे सासू जी!...

किंतु संध्या अपना मोनकेँ दबैत, शब्दशः बाजलि– 'चाची, त' अहाँ कयला एतना चिंतामे छी! आ बेकारमे ऊलजूल सोचे लगै छी !...'

कि चाची अपन स्मृतिक चद्दरिसँ स्वयंकेँ निकालैत बाजि उठलै– 'अरे न, ऊ छोड़' न, अभी एक दोसरे बात याद आ गेल...'

– 'से कोन बात!'

– 'हे नाहर चौक वला इसकुलबामे काम करित रहिऐ न !...'

– 'हँ!'

– 'तहिया तोहर बियाह न न भेल रहो। दिपकबा आठे-नओ बरस के रहल होतै...'

– 'त'?'

– 'त' एक दिन इसकुलबा के हेड मिसटरनी कहलकै जे, ई कागत हय! से एकरा एडम्मी मैडम के हियाँ दे आबो!'

– 'हूँ!'

– 'गेली देबे त' गेटबा खुलले रहै, हम सीधे भितरीये चल गेली। केबरियो न ढकढकयलिऐ...'

– 'एह, ढकढकाबे न चाही...'

– 'हँ हँ, तोरा बाप के हियाँ केबारी होतो, त' तोहनी के आदत होतो! हमनी त' न लहिरे देखली, आ न ससुरे...'

संध्या सोचलक, बुढ़ियाकेँ बुझाबे से अच्छा चुप्पे रहल जाय, न त' अखुन्ते उखले लागत लहिरा के। से बातकेँ टारैत बाजलि– 'अछा, अगारी के बात बोलथिन न झप-झप! हमर 'हिनी' के आबे के बेला हो रहलै हन...'

– 'हँ त', ओइ कोठरीमे केकरो न देखली त' सीधे भितरी बढ़ैत चल गेली! से... हे...' बोलैत-बोलैत चाची के जइसे आँखे उनट गेलै!'

से बुढ़ियाक इहए खूबी छै। कोनो टा बातमे चहटगर मशाला मिलायब नहि छोड़ैत छै।

एमहर ओकर आँखिक रूप देखि संध्याक जिज्ञासा जेना आर तेज भ' गेलै– 'हँ, तब हिनी की देखलथिन!'

– 'अरे एडम्मी मैडम एगो मउगीये के जौरे बिछौना पर खेलाइत रहै! से बुझा कि हम त' धक्क हो गेली!'

– 'अच्छा!' संध्याक मुँहसँ बहरा गेलै। फेर मोनमे अयलै जे पूछै कि, की खेलाइत रहै! मुदा बुढ़ियाक मिजाज देखि चुप्पे रहलि।

कि ताबतेमे बुढ़िया स्वयं बाजि उठलै– 'आ हे जनै हता कनियाँ, ऊ दुन्नू कच्छड़ जुआन! कयला तनको लजायत, दुन्नू साँप लेखा लेपटायल...'

आ कहैत बुढ़िया जेना ओहि क्षणकेँ आँखिक कैमरासँ सामने निकालि फेरसँ देख' लागलि रहै! जेना-जेना ओ दृश्य आँखिक सामनेसँ गुजरैत जा रहल रहै, तेना-तेना ओकर मुँह, घृणासँ भरैत जा रहल रहै...

आ फेर ओ अपन बामा दिस मुँह घुमा जोरसँ एक लोइया थूक फेकलकै। फेर अँचरासँ ठोर पोछैत बाजब शुरू क' देलकै– 'आ हे, दोसरकी जे रण्डीया रहे, तनिको न लजयलो! हमर एडम्मी मैडम जे हड़बड़ा के उठहू चाहलकै, ऊ धोंछिया ओकरा अपन बँहियामे आर कसैत बोलि उठलै...' आ कहैत बुढ़िया चुप भ' गेलै!

– 'कथी बोललै से?' संध्या सेहो आवेगमे आबि पूछि देलकै।

– '...जे डीयर, अरे तूँ काहे लागी उठता हय, उसको भी बोला लो न! उसे भी मजा आयगा!...'

– 'अछा!'

– 'हँ त'! हम तँ सन्न रह गेली!'

– 'त' ई की बोललथिन?'

– 'धौर की बोलितीऐ, बोललिऐ– 'गे मँगजरौनी, हमरा की कोनो भतार न हबे जे...'

– 'अइसे बोइल देलथिन!'

– 'हँ त', हम त' एनाहिते गारी दे के बोललिअइ!'

ओहि काल बुढ़ियाक चेहरा गौरवसँ दीपित भ' गेल रहै। आ संध्या स्थिर भावसँ ओकरा देखि रहल रहै। अभिनव रूप रहै ओकर।

...कि बुढ़िया फेर एकबेर थुकलकै आ बाजि उठलै– 'कहा त' हे, मरद वला सुख कहीं मौगी से...'

फेर तँ संध्या देखलक, अगिले पल बुढ़ियाक मुखमंडल पर विजयी मुस्कान पसरि गेलै– 'एह, से की कहियो दुलहिन, ओइ दिनमा एडम्मी मैडम हमरा ढेउआ, चकलेट, कप-पिलेट... किदोन-कहाँदोन बड्डे समान सब देलको..'

– 'अछा! से कयला?'

– 'कहलकै जे बलू हमरा आर तो लस्बियन हैं! हम सब एनाहिते रहता है। से, तुम ई सब किसू को मत बताना!...'

– 'ओहो!'

– 'हँ हे, कहलको, तिसको जे भी काम हो कभी, हमको सीधे कहना!'

– 'ओ!'

– 'हँ त'! से ऊहे न बेर-बखतमे अभियो ढेउआ आर से काम चला दै हइ! से सत कहबो, हमहूँ हरमपनी न कयलिऐ। आइ पहिले-पहिले तोरे बोललियो। हे, से अपन पुतहुआ कि तोहर ससुरो तक के न बूझे देलिऐ!'

– 'से ठीके न कइलथिन!'

– 'पर अब त' बोललो से कोनो फरक न पड़तै, गोरमिंटे ओडर दे देलकै! महज...'

– 'महज की चाची?'

– 'महज धोंछिया सब के अइसे न न करे के चाही!'

फेर कनी रुकि संध्यासँ पुछलकै– 'की, तूँ की सोचै छहो?'

किंतु संध्या चाचीक एहि बात पर 'हँ-नै' किछु नहि बाजि सकलि। मुदा बुढ़िया धरि उमेद करैत रहलै जे दुलहिन एकर बातक समर्थन करतै! मुदा संध्या तँ बुधियारि बनि गेलि आ हाथमे अयना ल' बिंदी लगब' लागलि।

बुढ़िया मुदा शान्त नहि रहि सकलै। ओ संध्याक भाव-भंगिमा देखि फेर पूछि उठलै– 'आँय हे दुलहिन, जब मौगी-मौगी अपना मे अइसे करै जाइ हइ, त' मरदबो आर...'

– 'हँ चाची, हो सकैत हइ! काहे न!' संध्याक मुँहसँ बहरा गेलै।

मुदा एहन उत्तर सुनि क' बुढ़ियाक तीत मुँह आर तीत भ' गेलै। मने संध्याक 'नै' कहि देने तितायल मुँह थोड़ेक कम भ' जैतै! से ओ अपन जीह पर चढ़ल तितपनकेँ उगिलैत फेर बाजि उठलै– 'ई सब कुछ जोनडाही मौगीये आर के कारण त' होइत होतै!'

– 'से कयला चाची?'

– 'जब मौगी सब मौगीयेमे मिलल रहतै त' मरद बेचारा की करतै! तभिये त' मजबूरन ओहो...'

– 'की!'

मुदा बुढ़िया तँ अपने धुनमे रहै– 'से की बोलियो दुलहिन,ई आइ-काल के बापो-मतारी भी तेहने हइ! उमेर बितला पर बेटी के शादी

करतो! की त' हमर बेटी अभी पढ़िते हय। कहू त' जे पढ़ैत से बूढ़ न होतै! तब ठीके न, अइसन अनर्थ सब गाउँ-समाज भोगतै, देखतै!'

– 'सब समय करबै हइ चाची!'

बुढ़िया संध्याक बोलीकेँ छिनैत कहलकै– 'से हमनी आर के समय की न रहै! हमर सब के मतारी-बाप की बुड़बक रहै जे दस चढ़ते-चढ़ते सब बाल-बुतरू के शादी कर देलकै! से जौनी हमनी सब बड़ भेली-भेली, ताले मरद आर के सुख मिले लगल ! पर अब त'...'

कि तखने पोताक आवाज सुनि बुढ़ियाक चिंतन पर जेना बज्र खसि पड़लै। ओ उठि गेलि आ भन-भन करैत अपन अंगना दिस विदा भ' गेलि।

मुदा संध्या तँ सिंगारक पेटारी बंद करितो ओतहि बैसल रहलि, आ चाचीक सोच पर चिंता करिते रहलि...

चाचीक बात एतबहि कालमे जेना ओकर अंदरमे गेरुली मारि क' बैसि गेलै। आ ओकर कानमे बुढ़ियाक एक्कहि टा अचरज, प्रश्न बनि क' डाकनि दैत रहलै– 'कहो त' हे, मरदबा के सुख कहीं मौगी मे...'

आ से एही क्रममे होइत-हवाइत ओकर स्मृतिमे किछु चेहरा आबि गेलै, आ जाहिमे जे पहिल चेहरा अयलै, ओ चेहरा सिम्मीक रहै। सिम्मी, माने ओकर अप्पन फूआक बेटी! दुनू एकबतारिये रहय।

मोन पड़लै, फूआ जखन फूफाक कथुक ऑपरेशन करब' लेल मुजफ्फरपुर ल' जाय लगलै, तँ संध्याकेँ नैहरासँ अना लेलकै। सिम्मीकेँ भरिसक बूढ़ दादी लग असगर नहि छोड़' चाहैत रहै। फूफा सेहो कहने होइ, ठीक नहि होतै।

संध्याकेँ मोन पड़लै, ओ दुनू संगे उठब-बैसब, खायब-पियब, सुतब करय। आ सिम्मी अपन दादीक लाख बजौलो पर ओकरा लग सूत' नहि जाय।

दुनू अकेले, मुदा जौरे रहय। से, दुनू बहिनियाँमे दोस्ती तँ पहिनहिसँ रहबे करै, प्रेम सेहो अंकुरित होब' लगलै। आ जे क्रमशः बढ़िते गेलै...

से सहसा मोन पड़लै! एह, ओहि दिनका मौसम सेहो की कम मादक रहै! कोना क' झमाझम बरसि रहल छलै मेघ! आ दुनू चौकी पर पड़ल-बैसल अंगनामे तकरा कोना निहारि रहल छलै! पानिक बुंद ऊपरसँ धरती पर खसै आ बुलबुल्ला बनि फुटि जाइ...

कि तखने की भेलै, सिम्मी ओकर हाथकेँ पकड़ने अँगना दिस भाग' लगलै। सोहमे एकरो हाथ जेना आप-सँ-आप ढील होब' लगलै...

फेर तँ दुनू खूबे भीजलि। कनी देर तँ पानिक मोट-मोट बुंद पर सिहरैत रहलि। फेर जखन एहि सबसँ मोन भरि गेलै तँ ओतहि ओहिना दुनू अँगनामे पसरि गेलि चित्ते। आह, तखनुक वर्षा-बुंदक चोट...

तहिया संध्याक बियाह नहि भेल रहै। मुदा किशोरावस्थाक देहरी लग तँ ठाढ़ि भैये गेल रहय! से मोने छै, भीजल कपड़ामे दुनूक शारीरिक बनाबट केहन निखरि रहल छलै! अमृत सन वर्षा-जल दूनूक ठोर पर जमि क' मस्ती से क' रहल छलै...

कि अरे, कोना-ने-कोना, कखन ई दुनू एक-दोसरकेँ अपनामे समेटि लेलक आ..., बरसैत पानिमे लगै तैयो दुनू लहकि रहलि अछि!

स्मृतिमे रमलि संध्याकेँ मोन पड़ि रहल छलै एक दिस झमाझम वर्षाक संगीत पूरा वातावरणमे पसरल रहै, तँ दोसर दिस एक दोसर अपरिचित संगीत एकर दुनूक अंदर सेहो पसरैत जा रहल छलै। आ तकर संग ठोरक चपलता...

से बादमे तँ ई सब आप-सँ-आप एकर दुनूक दिनचर्यामे शामिल भ' गेल रहै। लगै जेना संसारमे जँ अंतिम कोनो सत्य छै, तँ से इएह छै, स्त्री-स्त्रीक मिलन!

आ से एहिना, एहने सन कोनो पलमे दुनू अपन अमूर्त-अनाम देवतासँ वचन सेहो ल' लेने रहय कि ई सत्य अटूट रहय।

से जाहि दिन संध्याक बाबू एकरा आन' गेल रहै, ओहने वर्षा ओकरा दुनूक आँखिसँ सेहो झहरल रहै, जेहन ओहि पहिल आरंभ दिन झहरल रहै। मुदा ताहिसँ अरोस-परोसक लोककेँ की, ओ सब तँ अचरजसँ एकर दुनूक कानब देखैत मजा ल' रहल छलै।

से तहिया संध्याकेँ कहाँ बुझल रहै जे आइ-काल्हि ओही मिलनकेँ 'लस्बियन' कहैत छै! एह, केहन तँ कोमल स्पर्श रहै ओ! नहि तँ कोनो बातक भय, ने ककरो डर, ने कोनो उपराग...

से निम्न-आय-वर्गमे जनमल संध्याकेँ ई स्पर्श तँ नेनहिमे भेटि गेल रहै। बस, नामाकरण टा नहि बुझल रहै। से मोनमे अयलै जे दौगल चाची लग चलि जाय आ सुना आबय अपन ओहि किशोर-मोनक स्पर्श, जाहि ल' क' ओ बेचैन रहै...

किन्तु एखन तँ संध्याक तामस रहै मरद जातिकेँ ल' क'! से मरदक चर्चेसँ दीपकक पहिल स्पर्श मोन पड़ि अयलै। ओह, केहन डर आ कतेक पीड़ादायी रहै ओ स्पर्श! जेना कोनो भुखायल शेरकेँ अनायास माँसक लोथड़ा भेटि गेल होइ!

से तखन ओकरा प्रेमक परिभाषा बदलल-बदलल सन लागल रहै। बादोमे ताहिमे सुधार कहाँ देखलक। तेँ तँ सब खन सोचैत रहलि जे पतिकेँ पत्नीक प्रति आत्मिक प्रेमसँ बेसी दैहिक प्रेम रहै छै!

फेर तँ ओ मोने-मोन, मुदा अपनामे बजैत सन लागलि– 'बहुत अंतर होइत हइ मरद-मौगी आ मौगी-मौगीकेँ प्रेममे! हमर त' एतना तक कहब हइ कि मरदकेँ प्रेम कठोरते से शुरू भ' के कठोरते पर जा के अंत करैत हइ, आ जइमे सम्मान नाम के कोनो बात न रहैत हइ! मरद के प्रेम त' शुद्ध क' के स्वारथ वला प्रेम होइत हइ...'

से संध्याकेँ लस्बियन-कानून नीक लागल रहै ठीके त', सबकेँ अपना ढंगे जीये के हक मिलने चाही! मेहरारू आर के जिनगी, मरदक दासी हो के जीये लागी थोड़के बनल हइ!...'

कि तखने ककरो टोक पर ओकर भक् टुटलै, आ सहसा कल्पनाक आकाशसँ धराम द' धरतीक यथार्थ पर खसलि! देखलक तँ सोझाँमे पति महोदय रहथिन, जे साइकिलकेँ स्टेंड पर ठाढ़ करैत बाजि रहल छलथिन– 'की हइ जे एइ बेला ले, एजुने बैठल हता! कथी करैत हता इहाँ पे बैठल? काम-धाम की तोहर मतारी क' रहलौ ह'! चल हाली सुन, आ पहिले चाइ बनो!...'

संध्या तँ अवाक्! मुदा तुरंतेमे की फुड़लै, ओ हाली-हाली अपन जुट्टी खोल' लागलि। फेर एक नजरि सिंगारक पेटारीमे राखल बिंदी, लिपिस्टिक, पाउडर सब पर देलक। फेर, चटपटमे सब किछुकेँ ओतहि नालामे फेकि, आ बिनु किम्हरो तकैत अंगना दिस चलि पड़लि...

●

कीर्ति नारायण मिश्रक दूटा कविता

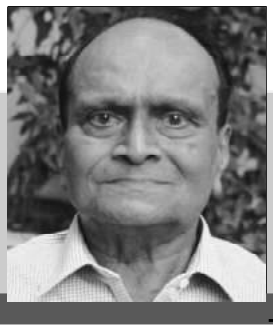

साहित्य अकादेमी पुरस्कार, प्रबोध साहित्य सम्मान, विश्वम्भर मैथिली साहित्य सम्मानसँ सम्मानित श्री कीर्ति नारायण मिश्रक सीमान्त, महानगर, हम स्तवन नहि लिखब, ध्वस्त होइत शान्ति स्तूप, आदमीकेँ जोहैत (मैथिली कविता संग्रह), अकेला मैं, शिखर पर साँझ, विराट वट वृक्षकेँ प्रतिवादमे, जेठ की तप्त शिला(हिन्दी संग्रह) एवं बंगला, उड़िया आ तेलगुमे अनुवादित। मैथिली साहित्यमे हिनक अतुलनीय योगदान छनि। सम्प्रति पूर्णकालिक लेखन करैत छथि।

यंत्रयोग

किछुए कालक बाद
ओ असितत्वविहीन भ' गेलाह
आ मुइलाक बाद भेलनि जे
कहियो जीवित छलाह

स्पंदन अहंकार उत्थान पराजय
चाक्रिक गतिसँ चलैत रहलनि
जन्मसँ मृत्यु धरि जे बनौलनि रस्ता
तकर दुनू कात ऐश्वर्यक ताड़ बढ़ैत रहलनि

सभ किछुकेँ करतलगत बनयबाक क्रममे
स्वयं प्रक्षेपित होइत रहलाह
वैभव-पर्यंक पर
दंश-बोध करैत रहलाह

तोड़ैत बड़का-बड़का पाथर
छानैत बाध-वन, नगर-महानगर
रहि गेलाह स्पर्श-सुलभ सुखक लेल
आजीवन अपस्याँत
ध्वंसकुशल द्वेदीप्त बुद्धि
बनौने रहलनि
आपादमस्तक अशान्त
सांकल्पिक ओजकेँ गीड़ि गेलनि
पश्चाताप-पीड़ित सुविधाभोग
सौंसे जिनगी लागल रहलनि
यंत्रयोग।

ओहि दिन ओतय...

ओहि दिन ओतय आयल छलाह ओ
कह' लगलाह
धुर छिः
अहाँ रहि गेलहुँ दक्षिणाह
मैथिलीकेर कवि भ' क' हिन्दीमे लिखैत छी
मातृभाषाकेँ छोड़ि आन भाषा पर मरैत छी
देश-कोस माटि-पानिक
कनियों नहि अछि ज्ञान
जे लिखैत छी कियो नहि
बुझैत अछि
अपन स्थितिकेर नहि
अछि अहाँकेँ भान

आदतिक अनुसार एहन प्रश्नपर
चुप रहि जैतहुँ
आरोप आक्षेप उपेक्षाकेँ निलवरोध सहि जैतहुँ
मुदा भेल जे मैथिलीसेवी कर एहि लांछनमे
पाठकक आक्रोश त' नहि
सम्पूर्ण विवादक जड़िमे अपने दोष त' नहि

अपन स्वभावक प्रतिकूल
अतिरिक्त विनम्रता आनि कहलियनि
अपनेसभ सत्ते कहल
हमरो सन लेखक अपनेकेँ मोन रहल
हमर परम सौभाग्य

हमरा अपन औदरिक स्थितिक लेल
कयल जाय क्षमा
आ राखल नहि जाय
साहित्यसँ भूगोलक आशा
भावना पुछिक' नहि बीछैत छैक भाषा

मनुक्ख आ प्रकृति दुनू बनौने अछि मुग्ध
साहित्य लिखैत छी
भाषासँ नहि करैत छी युद्ध
जँ लेखनो सेवा छैक
तँ हमहूँ छी मातृमन्दिरक एकटा सेवक
सूर्य तँ नहि उतारि सकलहुँ

मुदा बिहाड़िमे जरौने छी दीपक
भय आ बन्धनसँ रहि निलवकार
अपन स्थापनाक लेल नहि
मूलत बनयबाक लेल करैत छी
पाथरपर प्रहार

विधिज्ञान, स्तवन, ग्रन्थिक संकल्पसँ भरल पूजा
नहि कर' चाहैत छलहुँ, नहि कयलहुँ
अशुद्धो भाषामे आस्थायुक्त प्रार्थना तँ भेल
व्याकरण, भूगोलक मंत्रोच्चार
नहि क' सकलहुँ
विद्रोह-स्निग्ध-सर्जना
आ सहज भावसँ
मैथिली केर आराधना तँ भेल।

•

सम्पर्क : 9709396299

कविता संवाद

भीमनाथ झा आ उदय चन्द्र झा 'विनोद'

भीमनाथ झाक नाम

– उदय चन्द्र झा 'विनोद'

सहेसहे समेटि रहल छी अपनाकेँ
डेरायल रहैत छी
बाधो बोन जायब छोड़ल
सिनेहसँ नोतैत कतेको वन्धुकेँ
घुरा दैत छी
माछ मधुर नहि नीक लगैए
शुभ अशुभ कालक ग्रामीण बैसारसँ
सेहो अपनाकेँ कात क' रहल छी
आब कोनो गति मे नहि छी भाइ।

हुनका चलि गेलाक बाद
अपनो घर मे अनठीया भेल जाइत छी
लोकसँ पडाइत छी
विचारैत रहैत छी जे अनेरे
तेसर तल्ला पर रहब शुरू कैल
सीढी चढैत घमा जाइत छी
अपना मतिमे नहि छी भाइ।

पत्नी चल गेली
पिता सेहो एहि उमेरमे गेल रहथि
एकटा अनुज हालेमे चल गेल
माय तँ असमये गेले रहथि
काकी काका सेहो चल गेलाह
आब कतेक देखब अधलाह
हम अखखज खुट्टा ठोक अटकल छी
पूरापूरी भंगठल छी भाइ।

आब कोनो फरमाइशी निबन्धादि
नहि लिखि पबैत छी
प्रेमलता सान्ध्य गोष्ठी खातिर
उषा किरण पर लिखबाक लेल
कहियासँ कहैत छली
नहि लिखल भेल
बकलेल जकाँ कविता लिखैत रहैत छी
कोनो काज नहि उजिआइए भाइ।

पंचानन मिश्र मरि गेलाह
जीवकान्तक देहान्त भ' गेल
राजमोहने जी नहि मोहन भारद्वाजो
छोड़ि क' चल गेलाह
भरि मोन फोनो पर ककरासँ बतिआयब
केओ नहि अभरैत छथि भाइ।

भरोसक बात एतबे जे आब
हमरा सभक भरोसे
कोनो काज नहि ठेमायल अछि
मैथिलीक पालकीकेँ नव तूर उठा लेलनि
रहिका चौक नहि आब विद्यापति चौक पर
विद्यापतिक भव्य मंडप देखि लेल
अहाँ ने कोइलख त्यागि दरभंगा पकड़ल
हम तँ भरि जीवन
दुलहा रहिका करैत रहल छी
ठीके हम बेकहल छी भाइ।

हँ, अठहत्तरि मे चलि रहल छी
बहुत रास बात बिसरि रहल छी
समर्थन विरोध आब एकरंगाहे लगैए
सदति मोन व्यथित रहैए
अन्दर हबेलीक बात सेहो आब
नहि बूझि पबैत छी
सत्ते महायात्र पर निकलि पड़बाक
मोन करैए भाइ।

विनोदजीक प्रति

– भीमनाथ झा

अहाँ के छी अपनाकेँ समटनिहार?
ई पसार जे अहाँक नामपर भेल अछि
अहाँ बुझै छी जे अहाँ कयने छी?
अहाँ अपना मने जन्म लेने छी?
ई जे अठहत्तरि साल अहाँक बीतल अछि
ताहिमे अहाँ अप्पन पैरुख बुझै छी?
जीयब अहाँक वशमे अछि?
मरब अहाँक सक अछि?
की हम अहाँकेँ बुझाबी जे
'दर्शन' थिक एहि आँखियें देखब,
'दर्शनशास्त्र' थिक आँखि मुनिक' देखब।
अहाँ तँ तकरे पंडित छी, कहू–
ईश्वर कोनो जीवकेँ पलो भरि ले'
चयनक विकल्प दैत छथिन?

जनिक 'बेगार' थिकियनि हम सभगोटे
तनिके इशारापर नाच' पड़त।
नाचू ,नचैत रहू चाक जकाँ ,
चाके छी सभ गोटे।
बनबैत तँ छी अपनहि
मुदा कोन बासन बनैत अछि
से कुम्हारक आंगुरेटा जनैत छनि।
अहाँक हीसक थुम्हा बिना सधने
कुम्हार उठत नहि
अहाँकेँ नचबिते रहत।

'अंदर हबेली'क बात बुझबाक
बेगरते किएक?
आब तँ अहाँक 'हबेली'
अहाँक 'अंदरे'मे आबि गेल छथि
हुनका तँ खोधिते रहै छियनि
बरमहल,
आब आर कोन अहाँक अंदर हबेली भाइ!
छोडू ई सभ।

राजमोहन जीवकांत मोहन भारद्वाज
पंचानन तँ मन पड़ला
मुदा गोविन्द बाबू अमरजी कीर्ति भाइ
रामदेव बाबू ने किए देखाइ छथि
जे हमरा-अहाँसँ बेसी चरफर छथि।
हम तँ कहिया ने थस ल' लेलहुँ
अहाँ एखनो टेक रखने छी,
एना ब्रेक नहि दियौ तकरा।

'दर्शन'क एक रहस्य हम कहै छी
गीरह बान्हि लिय' तकरा--
एहि चंद्रक एखन उदये भेलनि अछि !

विद्यानंद झाक किछु कविता

विद्यानंद झा चारि दशकसँ मैथिलीमे कविता लिखैत छथि आ मात्र मैथिलीए टामे। दू टा संग्रह प्रकाशित छन्हि। पराती जकाँ आ बिछड़ल कोनो पिरीत जकाँ। किछु कथा आ किछु आलोचनात्मक लेख सेहो प्रकाशित छन्हि। मैथिलीसँ अंग्रेजीमे किछु अनुवाद सेहो कएने छथि आ अन्यान्य भाषा सबसँ मैथिलीमे अनुवाद सेहो। भारतीयभाषा परिषदक पुरस्कार आ यात्री पुरस्कार कविता लेल आ कथा पुरस्कार अनुवादक लेल भेटल छन्हि। जीवन आ ओकर विविध आयामक पिरितिया कवि छथि विद्यानंद।

एक

बुझाइत अछि अनभुआर
आइकाल्हि
दुनियाक तेला बेला
कविते
बुझाइत अछि सोझरायल

बुझाइत अछि छुछुआन
आइ काल्हि
दुनियाक बजार रंग बिरही
कविते
बुझाइत अछि कल्पवृक्ष

फिफियाइत रहै छी
कननमुँह भेल
दुनियामे
आइकाल्हि
कवितेमे
हँसैत छी
भभा भभा क'

सुखायल जाइत अछि
अंतःसलिला बहैत
दरेगक धार
हमरा सबहक आँखिमे
मनमे हमरा सबहक
आइकाल्हि
कवितेमे
रहैत अछि बाँचल
करुणा अपना लेल
आन लेल

चमत्कारो अछि कविता
पूरैत अछि मनोकामना
जुड़बैत अछि हिय

कवितेमे ओ सब होइत अछि
जे नहि द' पबैत अछि
दुनिया ई हमरा।

दू

हमर कवितामे
गामक भोजमे
सबसँ पहिने
पाँती लगैत अछि
दाइ माइक
जनाना स्त्रिगनक
बुच्ची बेदरीक
पुतहु आ बेटीक

आ सबजना भोजक
अंत भेलाक बाद
थारी आकि चंगेरामे
नहि पठाओल जाइत अछि
अरूआयल भात
पनिये दालिक सिठ्ठी
अगबे झोर डालनाक
उमड़ुमाइत कोनो आलूक टुकड़ी संग
आ मिज्झर चटनी ओहिमे
घरे घर
नहि औंघाइत
खसैत रहैत छथि
टोलक स्त्रिगन
खैक आकि उपातिक प्रतीक्षामे

हमर कवितामे
दलान पर
पहिले तोरमे बैसि
सुआदि सुआदि क'
तप्पत तप्पत भात
गढ़गर राहड़िक दाल
चहटगर डलना
चटनी धात्रिड.क
खाइत छथि
स्त्रिगनक गामक
पुतहु सब गामक

ई हमर कविते टामे होइत अछि।

तीन

हमर कवितामे
अंतिम गिलास दूधक
घरक बुच्ची पिबैत अछि

नीक निकुत
सबसँ पहिने
सबसँ बेसी
बुच्चियेकेँ भेटैत अछि

खरची जँ नहि जुड़ै
सब लेल
बेसी नीकठाम बुचिच्ये
पढ़ैत अछि
ओकरे पर बेसी खर्च
होइत अछि

ई मात्र हमर कविते टामे होइत अछि।

चारि

हमर कवितामे
नहि दौड़ल फिरैत अछि
भाइ के हत' लेल भाइ

पड़ोसियाकेँ हत' लेल पड़ोसिया
गौंआँकेँ हत' लेल गौआँ
जातिक नाम पर
धर्मक नाम पर
देसक नाम पर

बितबैत अछि सुख दुख संग
राखैत अछि मात्सर्य आन लेल
अनका संग हँसैत अछि
ओकर सुखमे
कनैत अछि अनका संग
ओकर दुखमे
नहि राखैत अछि
क्वाथ कोनो मनमे

ई हमर कविते टामे होइत अछि।

पाँच

हमर कवितामे
राजा बजैत अछि सत्त
राजा होइत अछि लोकोपकारी
निष्ठा राखैत अछि संविधानमे
निष्ठा राखैत अछि लोकमे

अहंकारी आ सर्वज्ञ नहि
होइत अछि सदिखन
आ गलती भेला पर
लोकक धरोहि बैंकक
सोझाँ ठाढ़ करौलाक बाद
कि चला देलाक बाद
लोककेँ हजार हजार कोस
भुक्खे पियासले
राजा माफियो मँगैत अछि
ई हमर कविते टा मे होइत अछि।

छह

हमर कवितामे
राष्ट्र लोकसँ होइत अछि
लोक राष्ट्रसँ नहि

कोनो अस्पतालमे
अनेक नेनाक कवलित भेला उत्तर
झुकाओल जाइत अछि राष्ट्र धुजा
मनबैत अछि राष्ट्र शोक
अपन मुइल नेना सब लेल
करैत अछि स्थगित
राष्ट्रदिवस समारोहकेँ

ई हमर कविते टा मे होइत अछि।

सात

हमर कवितामे
नहि पड़ाइत अछि घरसँ
जाति अनजाति
धर्म आन धर्मक पिरितिया जोड़ा

माथ तानने
बिना कोनो बाधा
करैत अछि समाजक सोझाँ
कि कोनो कचहरीमे बियाह
बियाह दान
खान पान
नेम धर्म
रहब संग आ छुट्टा छुट्टी
सब रहै छै लोकके मर्जीक भीतर
निर्भय रहैत अछि
पिरितियाक जोड़ा
बियाहल बिन बियाहल

ई हमर कविते मे होइत अछि।

आठ

हमर कवितामे
नहि नुकायल फिरैत अछि
कोनो बुच्ची कोनो स्त्री
मात्र एहि लेल
जे ओ स्त्री अछि

जे मन होइत छै
पहिरैत अछि
जत' मन होइत छै
जाइत अछि
नहि सोचैत एकोखन
जे दिन छै कि राति
जेहन काज मन होइत छै
करैत अछि निधोख

ई हमर कविते टा मे होइत अछि।

नौ

हमर कवितामे
खेतिहरो होइत छथि
भरल पूरल
खेतिहरो होइत छथि
जुड़ायल
नहि बहै छनि फसलि
दाहीमे
नहि जरैत छनि फसलि
रौदमे
बिकाइत छनि फसलि
ठीक दाम पर
पढ़ैत छनि धिया पुता नीकसँ
आ फेर आबैत छनि
कर' मदति खेतीमे

ई हमर कविते टा मे होइत अछि।

दस

हमर कवितामे
हाथसँ काज केनिहारक
सबसँ बेसी चलती

मनलग्गू काज करैत छथि लोक
एतेक कमाइत छथि
जे नीक जकाँ खाइत छथि
मदतियो करैत छथिन लोककेँ
आफद असमानीमे
नेना सबकेँ बनबैत छथि
मूड़ी उठौने जिबैत छथि

ई हमर कविते टा मे होइत अछि।

एगारह

हमर कवितामे
न्यायालय सब न्याय करैत अछि
दूधकेँ दूध आ पानिकेँ पानि करैत अछि

नहि लटकैत अछि सूलीसँ
खाली गरीब
खगल खाली
धनिको अपन अपराधक
सजा पबैत अछि
ई हमर कविते टा मे होइत अछि।

•

सम्पर्क : 9330983989

सुस्मिता पाठकक तीनटा कविता

सुस्मिता पाठक(1962) मैथिली आ हिन्दी मे निरन्तर लिखैत छथि। दूटा कविता संग्रह आ एकटा कथा संग्रह प्रकाशित छनि। आम मनुखक बहुरंगी जीवन-व्यापार हिनक रचनामे अभिव्यक्त होइत छनि। एखन एकटा उपन्यास लेखनमे लागल छथि।

माटि

एक मुट्ठी माटिक लेल
कतेको बेर
हम लगा चुकल छी गोहारि
पयरमे गड़ैत अछि पजेबा
गिट्टी आ पाथरसँ
होइत छी रक्तश्लथ
कतहु नहि भेटैत अछि
मुट्ठी भरि बालुओ
चलैत-चलैत
खसि जाइत छी हम
पिछड़ि-पिछड़ि चिक्कन-चुनमुन
जमीन पर
नहि टिकैत अछि पयर

पहिने एना
नहि खसैत छलहुँ
चलैत छलहुँ धुआँधार
कसि क' पकड़ा जाइत छल तरबा
सम्हरल रहैत छल देहक भार
जेना गाछक जड़िकेँ
पकड़ि लैत अछि
गसिया क' माटि
पकड़ने छल हमरो

एखन एकटा छोट सन पौध
उगेबाक लेल
एकटा फूल फुलेबाक लेल
ताकि रहल छी माटि
एक बाकुट माटि
नहि भेटैत अछि
तुलसी तर जरेबाक लेल दीप

चिक्कनि माटिक ढेला
ताकि रहल छी
नहि भेटैत अछि
खसैत-पड़ैत भटकैत-बौआइत रहल छी
नहि भेटैत अछि माटि
बलुआही आ दोमट
आ कि चिक्कनि

डारि रहल छी हम
मरब तँ की
नहि मिलि पायब माटिमे
चिक्कन-चुनमुन जमीन पर
होइत थकचुन्ना
पिसाइत नहि जायब।

पिचास

एहि बलिकागृहक
जहिया पड़ल हेतै नेओँ
एक-एकटा पजेबा
उपकारक रंगसँ रंगल हेतै
पवित्रताक निर्मल सुगंधसँ
महमह करैत हेतै
माटि सात तालामे हैत सुरक्षित
राजकुमारीसभ
प्रहरी, दास, दासी हेतै चौचँक
निषिद्ध हेतै
सभटा बाहरी अबरजात
कोनो फाँक देने
नहि अबैत हेतै कोनो प्रकाश
ने रौद
ने बसात

कोना कही

कोना क' गेल प्रवेश
एहि गृहमे
एक नहि अनेक
नर पिशाच
जीवनक नान्हि-नान्हिटा
संरचनाकेँ
ओझरा क' काँटमे
क' देलक चिर्रीचोंथ
एतेक सहज नहि रहै
पिशाचक प्रवेश
जँ बाट देखौनिहार
नहि बनि जइतै...।

गोहारि

कखनोकेँ जेना चारुभर
छापि लैत छैक मेघ
दिनक सभटा प्रकाश
डरे नुका जाइत हो जेना
हम हथोड़िया मार' लगैत छी

लोक लगबैत अछि ठहक्का
मोन होइत छनि
तँ भरि-भरि आँखि
दया उठौने
हमर अन्धता पर
दैत छथि उझील

हम भरिसक निन्नमे छी
आँखि फुजत तँ
नहि बचत अन्हार
दया आ प्रेम केर
हम आब नहि लगबैत छी
कोनो गोहारि।

•

सम्पर्क : 9471062706

चारिटा गजल : प्रेमचन्द्र पंकज

मैथिली एवं हिन्दीमे स्नातकोत्तर प्रेमचन्द्र पंकजजीक सुनू गीत हमर (गीत संग्रह), जिगरी (तेलुगु उपन्यास 'जिगिरी'क मैथिली अनुवाद) प्रकाशित छनि। कथा, नाटक, कविता, गीत, गजल आदि विधामे कलम चलबैत छथि। सम्प्रति पूर्व क्षेत्रीय भाषा केन्द्र, भुवनेश्वरमे अध्यापन कार्यसँ जुड़ल छथि।

एक

सुनू अहिँक गुनगान करै छी, मुखियाजी
आर ने ककरो ध्यान धरै छी, मुखियाजी

जहिएसँ अहाँ गाम डेबै छी भ' क' मुखिया
हम जनता कोहराम करै छी, मुखियाजी

कल्ला के अलगाओत अहाँक परतापक आगाँ
मन-मरजी सब काम करै छी, मुखियाजी

पटना-दिल्ली बामा-दहिना हाथक घिरनी
नोटहि दुआ-सलाम करै छी, मुखियाजी

जे बिकाएल मतदान समयमे निर्लज्जासभ
एखनो तकर चुमान करै छी, मुखियाजी

एके माघे जाड़ ने जाइ छै, जग जाहिर छै
एखने तँ समधान करै छी, मुखियाजी

दू

मुस्की अहाँकेर मधुबोरल लगैए
बूझैए के काज बिखाहिक करैए

अहँक प्रीति-रीतिक अजबे छै लीला
ककर छी कखन से केओ नहि बुझैए

जे पूजक अहाँकेर तकर दिन सुदिन छै
जे छोड़ल शरण, बुझू काते सड़ैए

अहाँक हाथकेर चङेरा भरि मुङबा
लाभ जकरेसँ पातो तकरे भरैए

बारुदकेर ढेरी पर नाचब कतेक दिन
हमर हाथकेर आगि ताण्डव करैए

तीन

बिहारमे बाढ़ि आकि बाढ़िमे बिहार छै
पुछतै के ककरासँ ककरा दरकार छै

बज्जर खसौ आकि पसरौ कोरोना बरू
कुरसी जोगएबामे लागल सरकार छै

सागर सन बाध-बोन, गाम-घर पोखरि सन
बाट-घाट सफाचट एनएच मोहार छै

जीवन जोगएबा लए जन-जन जुलहाल भेल
बाझ-गिद्ध लुझबा लए चानि पर तैआर छै

बिपदाकेँ अवसर ओएह बना लैछ एतए
डेग-डेग स्वार्थ-नीति जकरे बेबहार छै

जान-माल छति कत' कतबा भेलैक'छि
ब्योरा तैआर हएत, लूटक जोगाड़ छै

कानब बेबस्था पर 'पंकज' अन्याय थिक
उठू बढ़ू लड़ू आब इएहटा हथिआर छै

चारि

अहाँ पाँजरसँ जखने ससरि गेल छी
हम अपनाकेँ अपने बिसरि गेल छी

ठओर हम्मर कतहु ने ठेकाना कतहु
मुदा तैओ हम सगरो पसरि गेल छी

अछि भीजल सुगन्धिसँ हमर तन-मन
द' क' तेहने मधुमासी असरि गेल छी

ठाढ़ रहलहुँ सदति हम तानि छाती
बाढ़ि मारल देबाल सन हहरि गेल छी

मन-प्रान्तरमे पसरल हरिअरी छलै
आब रौदी झमारल कुहरि गेल छी

कहू 'पंकज' केहन छल अहँक दुनिआ
फाँक भेलहुँ आ जाँक सन नमरि गेल छी

•

सम्पर्क : 7079999319

पाँचटा गजल : भास्करानंद झा भास्कर

ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगासँ फोनेटिक्स(ध्वनि विज्ञान) सहित अंग्रेजी साहित्यमे स्नातकोत्तर। भास्करजीक अंग्रेजीमे तीनगोट कविता संग्रह सूथिंग सेरेनेड्स, टू इंडियाज आ थॉट्स इन सॉलिच्यूड प्रकाशित। फिलिपिंसक विद्यालय पाठ्यक्रममे अंग्रेजी कविता "नेल्शन मंडेला-द गाँधी ऑफ साउथ एफ्रिका' सम्मिलित छनि। सम्प्रति परमाणु ऊर्जा विभागक अंतर्गत मुम्बइ स्थित एकटा प्रमुख यूनिटमे अधिकारी पदपर कार्यरत छथि।

एक

मेघ अबिते रहत गहन लगिते रहत
मुदा सुरुज भुरुकवामे उगिते रहत

राति कतबो अन्हार बरु टूटए पहाड़
पसरल अन्हरिया चान जगिते रहत

भरल नैनक नोर दुख बेला घनघोर
भोर आशा पराती नित गबिते रहत

धरतीक आलिंगन गगन केर चुम्बन
गंगा-जमुना केर संगम बनिते रहत

क्षण भरि केर जीनगी दैबक कलगी
प्रेम शान्ति केर कविता बनिते रहत

चारि

पावन प्रेमक गान अहाँ
सावन मेघक थान अहाँ

यौवन-रस धारकेर स्रोत
हृदय आँगन चान अहाँ

प्रीत गीतक समवेत सुर
जीवन संगीत तान अहाँ

हरित मुदित चास मोन
नव-सृजन लबान अहाँ

कवि-हृदयमे जे उगलहुँ
कवि कलमक मान अहाँ

दू

राम-शक्ति अनुसंधान, महान हमर मैथिली
जीवन-दर्शन ज्ञान, अभिमान हमर मैथिली

मधु-मिश्री सानल बोल महमह बड्ड अनमोल
माछ-पान-मखान, पहिचान हमर मैथिली

बड्ड उन्नत मन-मस्तिष्क ज्ञान रक्ताभ क्षितिज
संस्कार केर गौरव गान, वितान हमर मैथिली

विद्यापति-मंडन-सलेस, चंदा लोरिकक देश
महिमा गानक अनुतान, बखान हमर मैथिली

चहुँदिस पूजित धीया सिया घर-घर नेहक नेह
शक्तिक दिव्य बरदान, परित्राण हमर मैथिली

तीन

हम सदिखन अहाँक बाट ताकैत रहलहुँ
करेजा पर उत्कंठाक पट्टी साटैत रहलहुँ

किछु छल मनमे कहबाक लेल अहाँसँ
रने-बने सगरो अहुरिया काटैत रहलहुँ

प्रीत- प्रेमक मधुर मिलनक अभिलाषी
राति अन्हरिया सीत सीपा चाटैत रहलहुँ

आँखिमे खदकैत नोर झड़ैछ झमाझम
सुखल हियाकेँ दुख-नोरसँ पाटैत रहलहुँ

दिन दुपहरिया घाट-बाटमे लोक बेदसँ
विरह वेदनाक व्यथा कथा बाँटैत रहलहुँ

पाँच

गमकैत मिथिला घिना रहल छै
चमकैत मिथिला छिना रहल छै

निष्क्रियताक कोरा सभ मैथिल
गप्पक घोड़ा हिनहिना रहल छै

अप्पन भाषाक नहि कोनो मोजर
आब आनक भाषा किना रहल छै

बुझनिक बनिक' दंभ भड़ैत सभ
बिनु बाते बिखे पिनपिना रहल छै

स्वार्थक नीति कुचक्रक कारण
चहुँदिस मिथिला छिना रहल छै

●

सम्पर्क : 8017310760

चामुण्डा मायक खोज

डॉ. शिव कुमार मिश्र

पटना, बिहार

संपर्क : 9122686586

बिहार सरकारक कला, संस्कृति एवं युवा विभाग अंतर्गत बिहार रिसर्च सोसाइटी, पटना, महाराजाधिराज लक्ष्मीश्वर सिंह संग्रहालय, दरभंगा, बेतिया संग्रहालय, बेतिया आ गांधी स्मारक संग्रहालय, भितिहरवाक (प. चम्पारण) प्रभारी डॉ. शिव कुमार मिश्र मिथिलाक इतिहास, संस्कृति, भाषा, भूगोल, लिपि, पुरातत्व ओ परम्परा विषय पर विगत 32 सालसँ अनुसंधान व प्रकाशन। मैथिली साहित्य शोध संस्थानक कोषाध्यक्ष आ मिथिला भारती त्रैमासिक शोध पत्रिकाक सम्पादक छथि।

नवम्बर 2020 क' डॉ. सुशांत कुमारक संग कटरागढ़क चामुण्डा मायक खोज करबाक लेल दरभंगासँ मोटर साइकिल पर सवार भय विदा भेलहुँ। एन.एच. 57 पर बेनीबादसँ पूर्वहि केवटसा चौकसँ दहिना विदा भेलहुँ। 17 कि.मी. ऊबर-खाबर पक्की सड़ककेँ टपैत कटरागढ़ दिस चललहुँ। सड़क बागमती धारक पुबारी कात दय बनल अछि कतहु-कतहु सुशांतजी कहैत छलाह जे ई प्राचीन डीह अछि मुदा से भ्रम छलनि। ई बागमतीक बाढ़िमे जे पाँक आ बालुक डीह लागल छल सएह छल।

बकुची अख्तियारपुर चौकसँ बामा दिस एक किलोमीटर गेला पर बागमतीक धार पर बनल पीपा पुलसँ टपिकए कटरागढ़ पर अवस्थित चामुण्डा मंदिर पहुँचलहुँ। ओना पीपापुलसँ पूर्वहि एकटा पुरान लोहाक पुल पार कयलहुँ जे भथि गेल छल। बुझना जाइछ जे कहियो एहि ठामसँ धार बहैत छल हएत।

चामुण्डा मंदिरमे प्रवेश कयल। एहिमे तीनटा मूर्ति देखबामे आयल। पहिल गणेश दोसर काली आ तेसर सूर्यक, तीनू मध्यकालक बुझना जाइछ। पुजारीजी फोटो लेबासँ मना कयलनि, मुदा ट्रस्टी रघुनाथ चौधरीजी अनुमति देलनि आ आदर देलनि। चौधरीजी किछु पोथी देखौलनि जे कटरागढ़सँ संबंधित छल।

एहिठामक डीहपर बहुत बेसी निर्माण कार्य भ' गेल अछि जाहिसँ आब ऊपरमे कोनो पुरावशेष देखब कठिन अछि। ट्रस्टी चौधरीजी कहलनि जे एहिठामसँ चामुण्डाक प्रतिमा चोरी भ' चुकल अछि जे बादमे खौंराडीह नामक गाममे भेटल अछि। ओ इहो कहलनि जे खौंराडीह चारि-पाँच कि.मी. दूर अछि। हमरा लोकनिकेँ खौंड़ाडीहक चामुण्डाक मूर्त्ति देखबाक जिज्ञासा भेल आ पुनः पीपापुल द्वारा बागमती धार टपि बकुची-अख्तियापुर चौकसँ पूबदिस विदा भेलहुँ। कनेक दूर गेला पर एकटा भयानक चचरी पुल देखबामे आयल जे सीमेंटक विशाल पुल, जे धँसि गेल छल तकरा ऊपरमे बनल छल। लखनदेइ नदी पर बनल ई पक्का पुल पछिला कतोक वर्षसँ धँसल अछि जाहि पर बांसक चचरी पुल बनल अछि। कतहु-कतहु चचरी सड़ि गेल अछि जाहिसँ गाड़ीक पहिया फँसि जेबाक संभावना रहैत छैक। सुशांतजी मोटर साइकिल लय असगरे चचरी पुल टपय लगलाह आ हम आगू बढ़ि फोटो लेबय लगलहुँ कि देखल जे मोटर साइकिलक पहिया फँसि गेल आ पाछू दिस पिछरय लागल। हम डेरा गेलहुँ जे सुशांतजी खसि ने परथि मुदा दूटा युवक पाछूसँ ठेलि कय गाड़ीकेँ टपायबमे सहयोग कयलनि। पुनः नहुँ-नहुँ गाड़ी चलबैत सुशांतजी नमहर पुलकेँ पार कयलनि। एहि धँसल पक्का पुलक ऊपर बनल चचरी पुलसँ कनेक हटि क' दोसर नव-पुलक निर्माण भय रहल छल ताबत धारमे डायवर्सन सेहो बनि रहल छल। चचरी पुलक दुर्गम रस्ता टपि छहर पर आबि दहिना दिस विदा भेलहुँ। किछु आगू बढ़ि छहरसँ बामा दिस सड़क गेल अछि जे खौंराडीह गेल अछि। बाटमे एकटा धार पर पैघ लचका बनल अछि। दुनू दिस पानि आ बीचमे सीमेन्टक ढलाइ बला लचकाकेँ पार कय दहिना दिस खौंराडीह गेलहुँ। गाममे पुछारी कयला पर एकटा व्यक्ति हमरा लोकनिकेँ मार्गदर्शन करबाक लेल गामक पुबारी-कात बड़की पोखरिक पुबरिया मोहार पर लय गेलाह। बाटमे चामुण्डा मायक गाथा आ हुनक प्रतापक बखान करैत गेलाह। समाजमे कतोक प्रकारक चर्चा आ विश्वास अछि चामुण्डा मायक विषयमे। ओ व्यक्ति कहलनि जे अहाँकेँ अवश्य सपना देने हेती चामुण्डा माय। फेर ओ हमरा लोकनिकेँ बड़की पोखरिक बाट देखा देलनि। हमरा लोकनि गाम टपि बड़की पोखरि दिस प्रस्थान कयल। बाटमे कतेक लोकसँ पुछारी कयल आ अंतमे पोखरिक उतरबरिया मोहार पर पहुँचि कय मोटरसाइकिल ठाढ़ कय पएरे विदा भेलहुँ। तावत ओ

पण्डितजी साइकिलसँ पछुऔने एलाह आ कहलनि जे हमहूँ 5-7 वर्षसँ नहि गेलहुँ अछि चलू चामुण्डा मायक दर्शन क' आबी। ओहि बाटमे रामअशीष राम सेहो भेटलाह जे महींस चरबैत छलाह। ओ लोकनि बड़की पोखरिक पुबरिया मोहार पर बड़क गाछ लग लय गेलाह जाहिठाम एकटा भग्न प्रतिमाकेँ चुनरी ओढ़ाकए ठाढ़ कएल गेल छल।

कारी पाथरक प्रतिमाक ऊपरसँ चुनरी हटेला पर विष्णुक प्रतिमा झलकि गेल जकर आकार 162X75X25 से. मी. छल। प्रतिमाक पादपीठ सुरक्षित अछि जाहि पर विष्णुक दुनू पएर छनि। पएरसँ ऊपरक भाग भग्न छनि। विष्णुक शिलापीठिकामे कटल अछि आ कटावसँ ऊपर विष्णुक छाती ओ गरदनि बाँचल छनि। गरदनिमे हार, कानमे कुण्डल छनि मुदा मुख भग्न छनि। शिलापीठिकाक शीर्ष नोकगर अछि आ ताहि पर कीर्तिमुख अछि। कीर्तिमुखसँ नीचाँ उड़ैत विद्याधर देखबामे अबैछ मुदा भग्न अछि। विष्णुक चारू हाथ भग्न छनि दहिना दिस शिलापीठिका सेहो भग्न छनि। लक्ष्मी भग्न छथि मुदा लक्ष्मी आ विष्णुक बीचमे कमलक डंटी बाँचल अछि जे पादपीठक कमलसँ ऊपर निकलल अछि। बामामे सरस्वती सेहो भग्न छथि मुदा हुनक पाछाँ सहचर ठाढ़ छनि। सहचरक ऊपर शिलापीठिका पर गज-ब्याल बनल अछि। ब्यालक ऊपर हाथी बनल अछि। हाथीक ऊपर किन्नर बनल अछि जिनक दुनू हाथमे वीणा सन कोनो वाद्ययंत्र छनि। हाथीक सूढ़ ऊपर उठल अछि। किन्नर अंकन युक्त विष्णुक प्रतिमा बड़ कम भेटैछ। मधुबनी जिलाक जागेश्वर स्थान (हुलासपट्टी), ठाढ़ी(लदनियाँ) ओ मरूकियाक (खजौली) विष्णुक प्रतिमा पर सेहो किन्नरक अंकन देखबामे अबैछ। खंगुराडीह (खौंड़ाडीहक) विष्णुक प्रतिमाक पादपीठ अत्यंत अलंकृत अछि। तीनटा कमल अछि जाहिमे बीचपर विष्णुक पएर आ दुनू दिसक जे एक-एकटा कमल अछि ताहिपर लक्ष्मी ओ सरस्वतीक पएर बाँचल अछि। सरस्वतीक नीचा गरूड़ ठेहुनियाँ दय बैसल छथि जखन कि लक्ष्मीक नीचाँमे भक्त वा दाताक अंकन अछि। दाता स्त्री छथि जे ठेहुनियाँ दय हाथ जोड़ने प्रणाम करबाक मुद्रामे छथि। दाताक पाछू एकटा बालकक चित्रण बुझना जाइछ। एहि तरहेँ चामुण्डा मायक जे भ्रम एहि क्षेत्रमे व्याप्त अछि ताहिसँ हमरा लोकनि निश्चिंत भेलहुँ जे एतय विष्णुक प्रतिमा अछि नहि कि कोनो चामुण्डा मायक। ई कहल गेल जे कटरागढ़क चामुण्डाक प्रतिमा जे चोरि भेल से खौंड़ाडीहमे राखल अछि सेहो एकटा भ्रम आ दुष्प्रचार अछि। खौंड़ाडीहक राम अशीष राम कहलनि जे ई प्रतिमा ओहि पोखरिसँ बहरायल अछि जखन कि भ्रम अछि जे चामुण्डा मायक संग राक्षसक युद्धमे चामुण्डा मायक गरदनि काटि देल गेल आ एतय माताकेँ राखि देल गेल। एतय एहिठाम इहो कहल गेल जे एहिठामसँ दोसर ठाम कोनो मंदिरमे रखबाक नेयार भेल त' माता सपना देलनि जे हम ओहिठाम रहब। एहन तरहक कतोक कथा सभ एहिठाम प्रचलित अछि मुदा ओहिठामसँ विदा हेबाक काल ओहि ग्रामीणकेँ हम कहि देल जे ई चामुण्डा मायक प्रतिमा नहि अपितु विष्णुक प्रतिमा थिक। ई प्रतिमा कर्णाट कालक बुझना जाइछ। एहन तरहक कतोक विष्णुक प्रतिमा मिथिलामे देखबामे अबैछ जकर स्थापना कार्णाटकालमे भेल हएत।

चामुण्डा मायक खोजक क्रममे डॉ. सुशांत कुमारक संग बीच-बीचमे चर्चा होइत रहल जे एतेक बुधियार मैथिल समाजमे एतेक भ्रम किऐक छैक? बरूआरमे द्वादश सूर्यक प्रतिमा अछि संगहि गणेशक प्रतिमा सेहो छल जे पछिला वर्ष चोरि चलि गेल। मुदा सूर्यक मूर्त्तिकेँ विष्णु वा रामक मूर्त्ति मानि पूजा होइछ। रामनवमीमे पैघ मेला लगैछ। सूर्यक प्रतिमामे सातटा घोड़ाक चित्रण रहैछ जखन कि विष्णुकेँ शंख, चक्र, गदा आ पद्म लय चारू हाथमे देखल जाइछ तखन एहन भ्रम किऐक। विष्णु त' सातटा घोड़ा पर नहि चढ़ैत छथि। मिथिलामे सूर्यादि पंचदेवता आ गणपत्यादि पंचदेवताक पूजा होइछ। कतोक ठाम ई दुनू प्रतिमा भेटैछ मुदा कोना लोक भ्रमित होइत छथि से आश्चर्य। दरभंगा जिलाक महिया गाममे बुद्धक प्रतिमा अछि जकर मूड़ी भग्न अछि मुदा स्थानीय लोक एहि प्रतिमाकेँ दूर्गा माइक रूपमे पूजैत छथि। स्त्री आ पुरुषक मूर्त्तिमे कोना अंतर नहि बुझना जाइछ से आश्चर्य।

सहरसा जिलाक सत्तरकटैया प्रखंडक दोरमा गाममे एकटा मंदिरमे चतुर्भुज विष्णुक प्रतिमा स्थापित अछि। मुदा एहि प्रतिमाकेँ झांपि-तोपि क' दुर्गाक रूपमे पूजा कएल जाइछ। दुर्गा मानि विष्णुक प्रतिमाकेँ छागरक बलिप्रदान कएल जाइछ। दुर्गापूजामे पैघ मेला लगैछ। एकरे ने कहल जाइछ अंधभक्ति। मिथिलामे विष्णुक उपासक वैष्णव कहबैत छथि जे माछ-मासु, पियाज, लहसुनसँ दूरे रहैत छथि मुदा साक्षात् विष्णुक सोझाँ हजारो छागरक बलि। वाहरे भक्ति। मैथिल समाज एतेक आन्हर भय गेल जे स्त्री आ पुरुषक मूर्त्तिमे भेद नहि बुझना जाइछ। विष्णुक मूर्त्ति चतुर्भुज छथि शंख-चक्र, गदा-पद्म लय जखनि कि दुर्गाजीक प्रतिमा दसटा हाथमे अस्त्र-शस्त्र लय बनाओल जाइत छथि। दुर्गामाताक मूर्ति निर्माता कखनो नहि भ्रमित होइत छथि जे पुरुषक आकृति बनबैत छथि कि स्त्रीक।

मुदा वाह रे बुद्धिमान मैथिल। दुर्गा आ विष्णुक मूर्तिमे भेद नहि सूझल। विष्णुक मूर्तिक पूजा विष्णुक रूपमे होइ ताहिमे की हर्ज? दुर्गापूजा सेहो गामे-गाम होइत अछि मूर्ति बनाकय तहिना एहिठाम सेहो मूर्ति बनाकय कएल जाइत त' कोन हर्ज? मुदा जँ प्रश्न करब त' झगड़ा करबाक लेल तैयार। आस्था पर प्रश्न। अन्धविश्वास पर प्रश्न। विष्णुक पूजा दुर्गाक रूपमे करबाक लेल कोन विवशता छनि से विद्वान समाज सेहो उत्तर नहि देता आ झगड़ा करबाक लेल तैयार। एहिठामक लोकसँ बेसी बुधियार तँ थुहमा गाम मुजफ्फरपुरक लोक छथि जे पोखरिसँ निकलल विष्णुक मूर्तिकेँ दुर्गाक रूपमे पूजा प्रारंभ भेल छल मुदा पुरातत्व वैज्ञानिक लोकनिक बुझेला पर आब अपनामे सुधार कए विष्णुक रूपमे पूजा करैत छथि। मुदा दोरमा, बरूआर आ कटराक लोकक भ्रमकेँ दूर होमयमे एखन समय लागत। मैथिल समाजकेँ एहि विषय पर विचार करबाक आवश्यकता छैक जे आगू आबयबला पीढ़ीकेँ हम की संदेश देवय चाहैत छी भ्रम अथवा स्पष्ट दृष्टि?

•

स्मृतिक 'सियाही' एखनहु सूखल नइ अछि

उदय नारायण सिंह 'नचिकेता'

कलकत्ता, प. बंगाल
सम्पर्क : 9434050218

'नचिकेता' केर नामसँ मैथिली साहित्य जगतमे परिचित, साहित्यकार-भाषाविज्ञानी उदय नारायण सिंह मैथिलीमे कविता (कवयो वदन्ति, अमृतस्य पुत्राः, अनुत्तरण, मध्यमपुरुष एकवचन आदि संकलन) आओर नाटक (नायकक नाम जीवन, एक छल राजा, प्रत्यावर्तन, नो एंट्री मा प्रविश आदि) लिखैत छथि। विगत दस वर्षसँ प्रख्यात पत्रिका '*मिथिला दर्शन*'क प्रधान सम्पादक सेहो छथि। भारतीय भाषा संस्थानक पूर्व निदेशक, विश्व-भारतीक प्रति-कुलपति, ओ एखन एमिटी विश्वविद्यालय गुड़गांवमे चेयर-प्रोफेसर छथि। बांगलामे सेहो पंद्रहटा पोथी प्रकाशित छनि। 2017 केर साहित्य अकादेमी पुरस्कार भेटलनि '*जहलक डायरी*' नामक मैथिली कविता संकलनक लेल।

रचना आ सर्जनक जादुइ छड़ी उधार ल' कए कतेको शतक पाछाँ चलि गेल छलहुँ; चन्द्रगुप्त मौर्यक युगमे पहुँचितहि पंडितप्रवर कौटिल्यकेँ पूछलियन्हि— "ई कतहुका नियम भेल जे पैघ माछ छोट-छोट मछलीकेँ गीड़ि जाइक, ओकरा सभकेँ एकटा मौका धरि नहि दैक जे ओ अपन मोनक बातकेँ फरिछा कए सभक सामने राखि सकै? "त ओ बिहुँसैत बजलाह, "परंतु नचिकेता! इयैह त' यमक यमक थीक, इयैक थीक मात्स्यन्याय अहिना त' होइत आबि रहल अछि! "कतेको हजार वर्षक पाछाँ आबि कए हम आइ जेँ पुनः वैह प्रश्न केँ दोहराबी आ पूछी जे अर्थनीतिक वैश्वीकरण आ राजनीतिक वशीकरण की इयैह दुनू राज करैत रहत छोट-छोट भाषा उपभाषा-भाषा-बोली सब पर? की एहि सब भाखा केर बजनिहार लोकनिकेँ एतबो अधिकार नहि जे हमसब हुनका लोकनिक चीखब, चीत्कार, कन्नारोहटि अथवा हमरासभक प्रति तिरस्कारक शब्द सुनबा' लेल कमसँ कम तैयार होयब? भरिसक आइ हुनका सभक कलममे सियाही भरबाक समय आयल अछि। भाषा-आन्दोलनक बात जखनहि कहै छी अथवा वंचनाक इतिहास जखनहि मोन पड़ैत अछि त' लागैछ कोनो-कोनो व्यक्तिक चलि जयबाक बादे किछु-किछु स्मृतिक पल निष्ठुर सत्य बनि कय मनक उपर दबाव डालब शुरू क' दैत अछि। 20 मार्च, 2005केर बाद एहने प्रतीत भेल— जखन प्रबोध बाबू चलि गेला। ओना त' ओ सम्पादकक हैसियतसँ— पंद्रह वर्षक आयुसँ हमरा, जकरा कहै छैक, स्वतंत्र लेखक और कवि-सत्ता बना कय रचना-पथ पर छोड़ि देने छलाह। कहियहु कखनहु मोन भेलनि त' हमरा बजा कय सुनय चाहैत छलाह जे ओहि समय हम बांगला हो अथवा मैथिली- कोण भाषामे की लिखि रहल छी। श्रोतामे कहियहु कखनहु माँ अणिमा जी सेहो शामिल होइ छलीह। कखनहु सामने प्रशंसा नहि करै छलथिन्ह, नीक लागै छलनि त' अणिमा जीकेँ बजा कय दोबारा पढ़य लेल कहै छलथिन। एतबे। बादमे पता चलै छल आरो लोगकेँ कहै छलाह।बात त' जाहिरे छल जे ओहि जमाना केर मैथिल कवि जेहन शैलीमे कविता-पाठ करै छलाह, हमर वाचन अथवा पाठ ताहिसँ बिलकुल अलगे तरहक छल। मुदा ओ कहियो नहि टोकने छलाह ताहि लेल— प्रवासी साहित्यालंकार अथवा आने किनको देखा कय ई कहि कय जे हमरा हिनका सब जकाँ काव्य-पाठ करबाक चाही छल। असलमे बांगला नाट्य-मंच आ' वाचिक शिल्प तथा कतेको प्रख्यात बंगला साहित्यकार और नाट्य-व्यक्तित्वक' साथ परिचय भेला सँ ओ ई बात समझि गेला जे हमर पाठ-शैली बंगलाक औपचारिक पाठ-शैलीसँ मिलैत-जुलैत रहत। परन्तु पति-पत्नी दोनू गोटे मिली कय कखनहु 'पृथ्वीराज रासो' या कबीरक रचना भरिसक अही ले' वाचन क' कय सुनबैत छलाह ता कि एहिसँ हमर मंच परक शायद केर 'ear-training' भ' जाय। जखन 1998मे ओ बेमार पड़ल छलाह, आ दू-दू बेरि रक्त-क्षरणसँ जखन दिमागक हालत बिगड़ल छलनि, तखनहु अहिना कविता-वाचन करैत अणिमा-जी हुनक मनोरंजन आ ध्यानाकर्षण करै छली। भरिसक 'डिमेंशिया' अथवा जड़बुद्धिता आओर तकरहि संगे जे 'डिसफेगिया' अथवा गलाकेँ खाद्यवस्तु निगलै केर पद्धतिकेँ भूलि गेलासँ जाहि तरहसँ ओ अल्जाइमर रोगग्रस्त भ' गेल छलाह, एहन समयमे हुनका संभवतः अपन पसंदक कविता, मंत्रोच्चारण आओर गीत उज्जीवित क' दैत छल।

फरबरी 1924सँ 1998 धरि जत्तेक ऊर्जाक परिचय ओ देने छलाह, आब ओहि वयः-प्रकोष्ठक आस-पास पहुँचि कय हमरा त' पता चलिए रहल अछि जे हमर प्रजानमक तुलनामे ओ कत्तेक बेसी स्वस्थ आ सक्रिय छलाह। हुनक संस्मरणमे हुनके एक छात्र जे बादमे

वरिष्ठ अध्यापिका बनि चुकल छली ओ कहने छली जे कखनहु कोनो रिक्शा वा सवारी पर कतहु जाइत देखै छलाह हिनके जकाँ छात्र-छात्राकेँ त' गाड़ी रोकि कय उतरि कय कुशल-मंगल पूछैत छला। हुनकर बात समाप्त होइते आन क्यो कहि देने छलाह कभी कभार ओ हमर खैरियत पूछ' लेल घर पर सेहो आबैत छलाह मुदा हमर बच्चा लेल चोकलेट आनब नइ भूलैत छलाह। ओना त' प्रबोध बाबू चाय-कॉफी नइ पीबै' छलाह, परन्तु जखन देखइत छलाह जे लोग मुश्किलमे पड़ि गेल छथि जे कोना हुनक अपमान कैल जाय, तखन ओ जे किछु देल जाइत छलनि से पीबि लैत छला। ओना त' एम्हर आबि कय हम एहन मामिलामे पापी बनि गेल छी, परन्तु पच्चीस वर्षक आयु धरि हमहू हुनके अनुसरण करैत छलहुँ। पान-सुपारी सेहो धरि कहियहु नइ, मुदा ककरहु बारातमे जाइत काल ओहि नियमकेँ तनिक शिथिल क' दैत छलाह।

जखनहि हुनक स्मरण-शक्तिक दिसि ध्यान जाइत छल त' लागैत छल जे हमरा सभक दिमाग एना कियैक नइ चलैत अछि? हमरामे कियैक नहि एहन ऐब छैक? ऊपरसँ अन्य भाषा सीखबाक एकटा अद्‌भुत क्षमता हिनका ईश्वरसँ प्राप्त छलनि। गाममे (सहमौरा) स्वयं जब स्कूलमे तीन चार मील चलि कय जाइत छलाह पढ़बा ले' तखन, अथवा साँझ खनि बगल वाला गाँव शाहपुर बाजारमे एकटा दर्जीक पास जा कय जखन ओ उर्दू सीखय ले' जाइत छला' तखन के जानि सकै छल जे एतबेमे ओ संतुष्ट नहि रहता। तैँ जखन ओ अध्यापकीय जीवनमे प्रवेश करबाक बादे बांगला सिखि नेने छलाह अथवा काफी बादमे फारसी पढ़य लगला' तखन के जानि सकै छल जे एहि उमरियोमे ओ आओर एक विषय मे एम.ए. (1970मे) करबामे कोनो कठिनाइ नइ हेतनि। स्नातक स्तर पर संस्कृतक अध्ययन त' केनहि छला जाहिसँ बादमे जा कय पाली भाषामे स्नातकोत्तर अध्ययन करबामे कोनो दिक्कति नइ भेलनि आ 1969मे ताहि लेल एकटा आर स्वर्ण-पदक प्राप्त भेलनि।

तकर बाद जखन हम भाषा-विज्ञान केर आनर्स क्लासमे भर्ती होयबाक तैयारी क' रहल छलहुँ, तखन ओहो अही विषयमे एकटा आर निष्णात क' पढ़ाइ करय लगलाह आ 1968मे ताहूमे प्रथम श्रेणीसँ उत्तीर्ण भेलाह। तकर अलाबे हमरे साथ पार्क स्ट्रीट स्थित एलियांस फ्रान्सेज दू कलकत्तामे भर्ती भ' गेलाह की त' साथे फ्रेंच सीखि लेता। मुदा विश्व-विद्यालयसँ हरदिन फुरसति नइ भेँटैत छलनि समय पर कक्षामे अयबाक। एक दिन त' हमर प्रशिक्षिका मदाम साका (यानि मैडम सरकार) हमरा डाटैत बोलिये देली— कि हम अपन बड़का भैयासँ कहि दी जाहिसँ ओ एकर बादसँ क्लासमे नियमित रूपसँ आबथि। जखन हम माथ खुजला कय कहलियनि जे ओ हमर बड़का भैया नहि, हमर पिता छथि आ पढ़ब-पढ़ायब केर काजमे ओ कहियहु कखनहु यूनिवर्सिटीमे ओझरा जाइत छथि। तखन ओ बहुत शर्मिदा भ' गेलीह। जखन बाबूजी सेवा-निवृत्त होमय जा रहल छलाह तखन त' घरे पर हर रोज मौलवी साहब आबैत छला जिनकासँ अरबी सीख रहल छला। कारण, ताहिसँ पहिनहि ओ अपन फारसी केर गुरुजीक साथ मिलि कय कलकत्ता विश्वविद्यालयक अध्यापक जनाब आता करीम वर्क साहबक प्रोत्साहनसँ विद्यापतिक फारसी अनुवाद क' कय इरानक शाहकेँ उपहार देबाक योजना बना रहल छला। आगाँ चलि कय 1997मे कैल गेल जाहि अनुवादक लेल प्रबोध बाबूकेँ अस्वस्थ अवस्थामे 2002 केर साहित्य अकादेमी अनुवाद पुरस्कार देल गेल छलनि, तकरो पाछाँ बचपनेसँ उर्दू आ फारसीक प्रति हुनक लगाओ छलनि।

बहुभाषिकता आओर बहुलिपिकता प्रबोध बाबूकेँ अपन परिवारेसँ भेंटल छलनि कियैक त' जाहि तरहेँ कोनो औपचारिक शिक्षा नइ भेंटनहु पर हुनक माँ जया देवी बंगलामे आरामसँ त्तिवासी रामायण आओर काशीराम दासक महाभारत पढ़ि लैत छली अथवा अवधीमे रामचरितमानसक पाठ आ व्याख्या करैत छली से त' अचरजे बला बात छल। ओहि जमानामे गाँवमे रहइतो पिता श्रीधर प्रसाद हिन्दी केर चुनल पत्र-पत्रिका मंगबैत छला आ सहरसा जिला केर सोनवर्षा राजक प्रत्यंत अंचलमे सह्रमौरा जकाँ गामक अपनहि घरमे पाठागारक स्थापना कयने छला, तकर प्रभाव त' पुत्र पर पड़त सैह स्वाभाविक छल। ओना प्रबोध बाबू एकटा दोसरे कारणसँ शीघ्र सम्पूर्ण सहरसा जिलामे प्रख्यात भ' गेल छला, परन्तु तकर सम्बन्ध पठन-पाठनसँ नहि छल।

यद्यपि शैशव बीतल छलनि गाँक पासेमे एकटा विद्यालयमे पढ़इत जखन गामक लोग हुनका हीरा बाबूक नामसँ बजबैत छला। मिडल स्कूल ओ पास कयने छला शाह-आलमनगरक स्कूलसँ, जे कि हुनक मामाजीक गाँव पस्तपारक पासेमे छल ओहुना पस्तपारसँ हुनकर एकटा अलग लगाव सेहो छलनि कियैक त' ओ हुनक जन्मस्थान सेहो छल। बादमे ओ सहरसाक हाइस्कूलमे भर्ती भेला जखन कि सहरसा अलग जिला नइ छल, भागलपुर जिलेक एकटा प्रमुख शहर मात्र छल। एहि समय, मिथिलांचलक गरीबी अओर आधुनिक शिक्षाक अभाव आगाँ चलि कय हुनक चिंताक विषय बनि गेल छलनि। आओर मैथिली जकाँ समृद्ध साहित्यिक परंपराक ऊपर हिन्दी आ अंग्रेजीक दबदबासँ ओ परेशान भ' गेल छला। मुदा ताहूसँ अधिक ओ व्यथित छला ओहि समयक भारतीय लोग पर अंग्रेजक बढ़इत अत्याचारकेँ ल' कय। आ' तैँ 9 अगस्त 1942 क बाद जखन गाँधीजीकेँ गिरफ्तार क' लेल गेलनि, तखन सब कियो अपन अपन रीतियेँ तकर विरोध करय लगला आओर तरुण अवस्थामे प्रबोध बाबू तखन अहिंसा आन्दोलनक साथ जुड़ला एवं अंग्रेज प्रशासनक लेल विरोधी आओर वितर्कित व्यक्तित्व बनि गेला। एहिसँ कतेको वर्ष नष्ट भेलनि कियैक त' हुनका एक जगहसँ दोसर-दोसर ठाम भागय पड़ि रहल छलनि। बादमे गाँव परिवारसँ दूर भागलपुरमे पढ़ा ई कयलनि आ 1944मे भागलपुर जिलाक मधेपुरासँ अंग्रेजी, हिन्दी, संस्कृत, इतिहास, भूगोल, आओर गणित विषयादि ल' कय मैट्रिक एव 1946मेभागलपुरसँ अंग्रेजी, हिन्दी, संस्कृत, तर्कशास्त्र आओर अर्थशास्त्रमे आइ. ए. पास कयलनि। अही बीच हिनकर पहिल विवाह बाराही गाँवक बिंदा देवीसँ भेल छलनि आ हुनका दुनूकेँ कन्या

संतान इला रानीक जन्म भेल छलनि। ओ समय छल जखन ओ गंभीर रूपसँ साहित्यक अध्ययनमे जुटि गेल छला आ' हुनका हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयागसँ 'साहित्यालंकार' (1945) एवं 'साहित्यरत्न'(1947)क उपाधि सेहो प्राप्त भेलनि। तखनहि पटना कॉलेजसँ बी.ए. (आनर्स)क' रहल छला संस्कृतमे (1946-1948)। पढ़ाइ केर साथे साथ ओ 'मेल-मिलाप' पत्रिकाक लेल काज सेहो करैत छला। तखनहि हुनकर पहिल पत्नी क देहांत भ' गेलनि। उच्चतर अध्ययन आओर आजीविकाक संधान - ई दुनू बात मिलि कय हुनका बिहारसँ बाहर निकलबा ले' मजबूर क' देने छल आ ओ कलकत्तेमे 'दैनिक लोकमान्य' केर सम्पादकीय दफ्तरमे नौकरी करय लगला। तखनहि राति-राति भरि समाचार पत्रमे काज करैत-करैत ई ख्याल भेलनि जे कियैक ने दिन केर समयक उपयोग क' कय एम. ए. क' लेल जाय? बस, फेर की छल? आधुनिक भारतीय भाषा अर्थात MILमे भर्ती भ' गेला हिन्दीक कक्षामे - जे संस्कृत पढ़ने अछि आओर जकरा उर्दू सेहो अबैत छल, एवं हिन्दीमे लेखन-संपादन कएने अछि, तकरा लेल त' बिलकुल सही निर्णय छल। लेकिन अक्सर एहनो होइ छल जे क्लास छूटि जाइत छलनि आ अध्यापक द्वारा देल गेल असैनमेंट नइ क' पाबैत छलाह। एकबेर जखन हमरा ई पता चलल जे अणिमा धर प्रबोध बाबूक सहपाठी छली आ प्रतिद्वंद्वी सेहो, तखन हम साहस क' कय माँ-सँ पूछि लेने छलहुँ जे हुनका एहि उत्तरी बिहारक लड़कामे कोन खूबी नजरि आयल छल जे एत्तेक बड़का निर्णय क' सकली? हँसइत-हँसइत परेशान भ' गेल छलहुँ। ई जानि कय जे एहि मेधाबी छात्रक करतूद केहन होइत छलनि— हिन्दी विभागक अध्यक्ष प्रोफेसर शुक्ल बादमे क्लासमे लेखन-सम्बन्धी असैनमेंट केर विषयमे पूछै छलथिन त' ओ साहसक संग झुट्ठो कहि दैत छलथिन जे ओ लिखि कय आनने छथि— अध्यापक प्रायः छात्रकेँ खड़ा क' कय असैनमेंट केर निबंधक पाठ करबैत छला आओर एतबे टा भरोसा छलनि हिनकर मोनमे।

जखन हुनकासँ कहल गेलनि जे ओ जे किछु लिखने छथि पढ़ि कय सुनाबथि त' प्रबोध बाबूक की समस्या हेतनि? ओ तत्क्षणत ठाढ़ भ' कय बेझिझक पढ़य लगला। पाछाँ केर बेंच पर बैसल अणिमा जी आ कैकटा आर साथी देखि रहल छली जे महाशय डाइरीक सफेद पन्ना उनटैंत पढ़ल जा रहल छथि एकटा अद्भुत अलिखित साहित्य रससँ परिपूर्ण सुन्दर निबंध। आ अध्यापक सहित सभ क्यो तकर आनंद ल' रहल छला। तखन युवा प्रबोध किचु एहने पंक्ति सुनौला जे ताहि पर अध्यापक वाहवाही दैत हुनका फेर आर एक बेरि ऊपरसँ ओहि पंक्तिकेँ एक बेरि आर पढ़य कहलनि आब त' ओ संकटमे पड़ि गेला। ता धरि अणिमा आओर हुनके साथ बैसल किछु अन्य छात्र सब हँसय लगली। आ हुनकर पोल खुलि गेलनि। तखनहि एहि बातक सेहो भांडाफोड़ भ' गेलनि जे भरी-भरि राति जागि कय न्यूज एजेंसीमे काज करय बला ई छात्र की क' रहल छल। 1950-एमे हुनका दू-दूटा स्वर्ण-पदक प्राप्त भेल छलनि, कियैक त' प्रबोध नारायण हिन्दीमे कला-निष्णातक उपाधि प्राप्त कयने छला एम. ए.मे प्रथम श्रेणीमे प्रथम भ' कय आ ताहू पर दोसर पदक छलनि 1918सँ ल' कय 1948क अवधिमे MIL विभागक सभटा एम. ए. केर परीक्षार्थीकेँ मिला कय सर्वोच्च अंक प्राप्त करबाक लेल। आब ई त' जाहिर बात छल जे एहन प्रतिभा-शालीसँ विवाह रचाबैमे बाधा कोना आबि सकै छल? 28 जुलाइ 1950 केर दिन विवाह सुसंपन्न भ' गेलनि आ ओही दिनसँ एहि विरल युगलक युग्म-यात्र शुरू भ' गेल छलनि।

दुनू गोटेकक जीवनमे अनेक तरहक चैलेन्ज आबैत-जाइत रहलनि शुरूमे चारुचंद्र कॉलेजसँ ल' कय जयपुरिया कॉलेजमे पढ़ायब मुदा अंततोगत्वा अणिमा जी प्रख्यात कोलेज लेडी ब्रेबोर्नमे आओर प्रबोध बाबू कलकत्ता विश्व-विद्यालय केर हिन्दी विभागमे पढ़ाबय लगला। एकटा बड़का चैलेन्ज छलनि दुनूक एत्तेक भिन्न तरहक तजुर्बा आ सांस्कृतिक प्रभेद होइक बावजूद ओ कोना आपसमे मिलल-जुलल संस्कृतिक परिवेशकेँ बना लेबामे सक्षम भेल छला। हमरासँ एगारह वर्षक अधिक उमरिक दीदी इलासँ पिताजी मैथिलीयेमे बात करैत छला। मुदा हम दुनू भाइसँ ओ बंगलेमे बात करै छलथिन। कन्याकेँ हिन्दी-माध्यमक विद्यालयमे भर्ती करबाक बाद हमरा शुरूयेसँ बंगला माध्यमक स्कूलमे आओर हमर छोट भाइकेँ अंग्रेजीक माध्यमसँ पढ़बा ले' भर्ती क' देने छला। आजुक सन्दर्भमे एकरा एकटा एक्सपेरिमेंट अथवा परिक्षण कहि सकै छी जकरा ले' साहस सहो चाही छल। तेसर चैलेन्ज इहो छल जे ओ कोना पत्नी अणिमा जीकेँ मैथिली भाषा आओर साहित्यक ज्ञान दैत हुनका अपन समयक सबसँ ख्याति-प्राप्त मैथिली लोक-साहित्य विशेषज्ञ बनबामे सहायता कयने छला। दुनू गोटेमे कत्तेक सूझ-बूझ रहल हैतनि! एक भाषा आन्दोलनक निर्माण आओर तकरा लेल आवश्यक आत्मत्याग करबा' लेल अपन सह-धर्मिणीकेँ राजी करओने छला। विमाता होइतहु कोना ओ इला रानीकेँ अपने संतान जकाँ स्वीकार करबा ले' उद्बुद्ध वा प्रेरित कयने छला। सबसँ कठिन काज छल 'मिथिला दर्शन' जकाँ एक स्तरीय पत्रिकाक संकल्पना आओर तकरा दशक-दर-दशक चलेबामे सेहो अणिमा जीक सहयोग लेब— पता नइ एतबा किछु कोना संभव भेल हेतनि।

ओना क्यो लिखय चाहे त' कत्ते' किछु लिखि सकैत अछि प्रबोध बाबूक लेल आओर नहि जानि आओर कतेक प्रसंग उठि सकैत अछि, जेना कि हुनकर मैथिली (1972) आओर हिन्दी (1976) दुनू विषयमे डी-लिट केर शोध-कार्यक कहानी मुद्रा से सब फेर कहियो कहब।

•

पछिला अंकसभ पढ़बाक लेल
www.anuprasprakashan.com
पर जाउ आ पत्रिकाक आवरण पेज
पर क्लिक करु।

मोनक बात कागज पर

लक्ष्मण झा 'सागर'

संतोषपुर, कोलकाता

सम्पर्क : 9903879117

अपन बेबाक टिप्पणीक लेल प्रसिद्ध श्री लक्षण झा 'सागर' विगत पाँच दशकसँ मैथिलीक विभिन्न विधा यथा कविता, कथा, निबन्ध, संस्मरण, समीक्षा, टिप्पणी आदि पर लिखैत आबि रहल छथि। हिनक रचना मैथिलीक विभिन्न पत्र-पत्रिकामे बरमहल प्रकाशित होइत रहैत छनि। 2010मे प्रकाशित हिनक कविता संग्रह 'उचरि बैसू कौआ' बेस चर्चित भेलनि। सहृदय श्री सागर जी मैथिलीक विभिन्न संस्था द्वारा सम्मानित छथि।

एक

आयुष्मान दीपनारायण विद्यार्थी तीन बर्ख पूर्व कोलकाता आयल छलाह साहित्य अकादेमीक ट्रैभल ग्रान्ट पर, जाहिमे एक लेखक दोसर भाषा, साहित्यकार आ लोक सभसँ जूड़ि अपन जानकारी आ चेतनाकेँ विस्तार द' सकथि। ओही क्रममे ओ हमरोसँ भेंट केलनि। हुनका नामसँ पूर्व परिचित रही हुनकर किछु कविता सभ पढ़िकेँ जे मैथिलीक पत्रिका सभमे छपल रहनि। हुनकर कविताक धार आ शिल्पसँ हम बहुत प्रभावित भेल रही। मैथिली कविताक भविष्यसँ आश्वस्त भेल रही। हुनका बारेमे पता केने रही तँ ज्ञात भेल जे ओ शिक्षक छथि। माय-बाबूजीकेँ भगवान जकाँ पुजैत छथि। से जहन ओ हमरा पैर छूबिकेँ गोर लगलनि तँ हुनका हम छातीमे सटबैत अनुजवत् स्नेहसँ पुछलियनि जे दीपनारायण जी आब अहाँ मास्टर भ' गेल छी, तहन नाममे 'विद्यार्थी' किएक लगबैत छी तँ तपाकसँ कहलनि जे सर हम मैथिली साहित्यक सब दिन 'विद्यार्थी' बनल रहय चाहैत छी। हुनका मुँहसँ अनायास निकलल ई बात हमरा भीतरसँ झकझोरि देलक। हम मोने-मोन सोचय लगलहुँ जे जहन अखनुका दौड़मे मैथिली साहित्यक लेखनक विद्यार्थी सभ किछु रचना छपलाक बाद अपनाकेँ साहित्यक मास्टर बुझय लगैत छथि। तेहना स्थितिमे दीपनारायण जी मास्टर होइत अपनाकेँ विद्यार्थी बनल रहबाक इच्छा पोसने छथि से अत्यन्त प्रेरणास्पद बात थीक। साहित्यमे हुनक उज्ज्वल भविष्यक कामनाक लेल अपनाकेँ उत्साहित पबैत छी।

दू

जहियासँ साहित्य बुझबाक बोध भेल तहियासँ देखैत आबि रहल छी जे मैथिली साहित्यक दू टा स्थापित विधा (गीत आ कविता)क रचनाकार अर्थात् गीतकार आ कवि आपसमे उपरौझ करैत आबि रहल छथि जे हमरा बेर-बेर भ्रमित करैत रहैत अछि। हमरा बुझने दुनू विधाक अपन अलग महत्त्व अछि। कविता जँ बुद्धिजीवी समाजक मुकुटमणि थीक तँ गीत सर्वहरा समाजक कंठहार। कविता जँ पाठ करबाक वस्तु थीक तँ गीत गयबाक कौशल। कविता अहाँक मोनमे घर तँ बनबैये मुदा कंठमे संजोगिक' राखल नहि जाए सकैये। कविता अहाँकेँ उद्वेलित करैत अछि। अहाँक जीवनमे मोड़ अनैत अछि। गीत अहाँकेँ मनोरंजन करैत अछि। अहाँक जीवनमे संजीवनीक काज करैत अछि। आब किछु कविता आ गीतक पाँति सभ देखल जाय— 'पायब निज अधिकार कतहु की बिना झगड़ने। अछि सलाइमे आगि, बरत की बिना रगड़ने।' कविवर सीताराम झाक ई कविता प्रेरक आ कालजयी अछि। 'चन्द्रमा उतरल गगनसँ चाँदनीकेँ जगाउ औ'— डा. बी. झाक ई गीतमे कतेक माधुर्य अछि। केहन सोहनगर अछि। ककरा पसिन्न करबैक आ ककरा नापसिन्न? दुनू रचनाक अपन महत्व छैक। तखन विवाद किएक? कथीक उपरौंझ? विवाद छैक। उपरौंझ छैक। से ई जे तथाकथित संभ्रान्त कवि सभ गीतकारकेँ दोएम दर्जाक रचनाकार मानैत छथि। हमर प्रश्न अछि जे मधुपजी जँ मिथिलाक समाजकेँ अपन मातृभाषाक प्रति अनुराग जगबैक लेल फिल्मी धुनक तर्ज पर मैथिली गीतक रचना केलनि तँ की हुनका अहाँ दोएम दर्जाक रचनाकार मानबनि? नहि, किएक तँ ओ 'राधा-विरह' सन महाकाव्य सेहो लिखलनि। हमरा लोकनिक गीतकार डा. बुद्धिनाथ मिश्र, मैथिली पुत्र प्रदीप, चन्द्र भानु सिंह, रवीन्द्रनाथ ठाकुर, सियाराम झा 'सरस', डा. चन्द्रमणि, अशोक कुमार मेहता, फूलचन्द्र झा 'प्रवीण', स्नेहलता, जयराम, हेमकान्त प्रभृत्ति की दोएम दर्जाक रचनाकार छथि? प्रत्यक्ष रूपें कहबाक साहस नहि कियो करब। मुदा, परोक्ष रूपें की हिनका लोकनिकेँ वैए सम्मान देल जाइ छनि जे एकटा नव तुरिया कविकेँ देल जाइत अछि? मधुपजी जँ 'राधा-विरह' आ चन्द्रभानु सिंह जँ 'शकुंतला महाकाव्य' नहि लिखितथि तँ की हुनकर गीतक पोथी पर साहित्य अकादेमी पुरस्कार भेटितनि? एकर जवाब नहि अछि किनको लग। उपरौंझ अहीठाम अछि। मैथिली जँ एखनो मिथिलामे बाँचल

अछि तकर सभटा श्रेय 'विद्यापति पदावली'क अछि नहि की कीर्त्तिलता आ कीर्त्तिपताखाक। विद्यापति-गीत मिथिलाक मूर्ख स्त्रीगण सभ अदौकालसँ मुँहजबानी रटने छथि। की कोनो कविक कोनो कविता एखनुका शिक्षिता मिथिलानी सभ बिना देखने सुनाय सकैत छथि? जबाव भेटत, तहन ककरा लेल काव्य-सृजन? सोझबात अछि— पुरस्कार आ सम्मान लेल। जँ यैह परिपाटी रहल तँ मैथिलीकेँ मुइने कुशल...।

तीन

हमरा लोकनिक मातृभाषा मैथिलीक अभियानी पुरूखा लोकनि (बाबू भोला लाल दास डा. कांचीनाथ झा'किरण', प्रो. हरिमोहन झा, बाबू साहेब चौधरी, राघवाचार्य, डा. जयकांत मिश्र प्रभृत्ति) हिन्दीक प्रबल विरोधी छलाह। हुनका लोकनिक मत छलनि जे यावत् मिथिलांचलसँ हिन्दीक बहिस्कार नहि करब मैथिली अस्तित्व पर संकट रहत। हुनका लोकनिक मत अपन अभियानी जीवनक अनुभव पर आधारित छलनि। वस्तु स्थिति ई अछि जे हिन्दी हमरा लोकनिक चिनवार धरिकेँ गछारि लेने अछि। हमरा लोकनिक अपन भाषाक दैनिक अखबार' मिथिला आवाज' हिन्दी लौवीक शिकार भ' गेल। समस्त मिथिला क्षेत्रमे दोकानक 'साइनबोर्ड' हिन्दीमे लिखल भेटत हमरा सभ लेल धनि सन। कोनो प्रतिवादक स्वर नहि। कोनो विरोध नहि। कहबा लेल सभ गोटे कहैत छी जे मिथिलामे बसल सभ जाति, धर्म आ सम्प्रदायक भाषा मैथिली छी। मुदा, तकर अनुपालन कतेक आ कोना भ' रहल अछि ताहि लेल सजग हम सभ कियो नहि छी। की अहू लेल सरकारी फरमानक बेगरता अछि? मिथिलासँ बाहर कोनो प्रदेशमे जाउ— बंगाल, आसाम, उड़ीसा, गुजरात, केरल, आन्ध्र प्रदेश, तमिलनाडु, महाराष्ट्र सभ ठाम दोकानक 'साइनबोर्ड' ओहिठामक भाषामे लिखल भेटत किएक तँ ओतुक्का लोककेँ अपन भाषाक बोध छैक। गौरव तँ बादक बात भेल। हमरा सभकेँ से बोध किएक ने होइए? ई तँ भेल सर्व साधारण जनताक बात। दुःख तँ तहन होइये जखन देखैत छी जे हमरा लोकनिक प्रबुद्ध, साहित्यकार समाज सेहो हिन्दीक व्यामोहसँ उबरि नहि रहल छथि। हँ, जे साहित्यकार हिन्दीक कमाइसँ गुजर करै छथि हुनकर विवशताकेँ अनठौल जाए सकैत अछि जेना छलाह नागार्जुन (बाबा) वा एखन छथि डा. बुद्धिनाथ मिश्र, डा. देवशंकर नवीन, गौरीनाथ, पंकज पाराशर, डा. अरुणाभ सौरभ, विभा कुमारी आदि। मुदा, जे सगर जीवन मैथिलीक कट्टर समर्थक रहलाह से चौथापनमे जहन हिन्दीक नांगरि पकरि वैतरणी पार करबाक अभीष्ट रखैत छथि जे हमरा सभकेँ निराश करैत छथि। चिंताक कारण बनैत छथि जेना छथि कीर्त्तिनारायण मिश्र, उदयचन्द्र झा 'विनोद', डा. गंगेश गुंजन, रामाकान्त राय रमा, मधुकान्त झा, डा. शेफालिका वर्मा, उषा किरण खान आदि। ई सभ गोटे हमर अग्रज छथि। प्राणम्य छथि। हमरासँ बेसी ज्ञानी छथि। हम हिनका सभसँ की सीखी से चिंता खेने जाइत अछि। हम अपन हिस्सा मैथिलीक सेवा जे बनि पड़ैये विशुद्ध मैथिलीये टामे करै छी। की हमर अनुज लोकनि हमरा बाट पर चलताह कि हमर अग्रजक बाट पकरताह से एकटा प्रश्न चिन्ह अछि(?)।

चारि

हम संकल्प ल' लेने रही जे एहि जन्ममे स्मार्टफोन नहि लेब। किएक तँ हमरा फोविया भ' गेल छल जे हमरा बुतें चलौल नहि हैत। एहि फोनक नाम सुनैत देरी हमरा झड़कबाहि उठि जाइत छल। हमरा छोटके फोन सोहाइत छल। फोन केनाइ, फोन एनाइ। एस.एम.एस. केनाइ आ एनाइ। बस, हमर काज चलि जाइत छल। मुदा मित्र आ हित-अपेक्षित अनवरत आग्रह पर हमरा स्मार्टफोन लेबय पड़ल। जहन ल' लेलहुँ तँ सीखय सेहो पड़ल। आब बुझैत छी जे ई फोन एहि युगमे कतेक उपयोगी अछि। युगक हिसाबें लोककेँ बदलक चाही से एकटा सीख भेटल। आब फेसबुक, ह्वाटसप, मेसेंजर युट्यूब, शेयर केनाइ, लाइक केनाइ सबटा सीखि लेलहुँ। एखनो बहुत किछु सीखब बाँकी अछि। एहि कोरोनाक काल खंडमे दिन कोना बीति जाइये पतो ने चलैत अछि। जुम्मा-जुम्मा आठ दिनक अपन फेसबुकिया जिनगीक किछु तीत-मीठ अनुभव हम शेयर करय चाहब। दोस्त बनबाक क्रममे हम देखल जे किछु लोकक बापो हमर दोस्त, बेटो दोस्त, बेटी दोस्त आ पत्नी सेहो दोस्त। ककरो कियो दुश्मन नहि। एकटा हमर विदेशी महिला दोस्त तेना ने हमरा वशीभूत क' लेलनि जे हमरा अपन लोक आन बुझाय लागल। जँ भगवान विभव देने रहितथि तँ हम अपन वाणप्रस्थ जीवन हुनके संग एखन बितबैत रहितहुँ। अपनाकेँ सम्हारि लेलहुँ। बचि गेलहुँ हुनकासँ कड़ीस क' लेलहुँ। किनको पोस्ट पर अपन कमेंट करबाक तेहन ने लुतुक लागि गेल जे पुरान दोस्त सब कट्टर दुश्मन भ' गेलाह अछि। जन्म दिनक आशिर्वादी बांटव आ मृत्यु भेला पर श्रद्धांजलि अर्पित करबाक भरि पोख सुयोग भेटैत अछि। एकटा बातक महीन अनुभव भेल जे अहूठाम लौबीबाजी छैक। अहाँक पोस्टक हम प्रसंशा करब आ हमरा पोस्त पर अहाँ प्रसंशा करू। हम की खाइ छी से अहाँ देखू आ हम देखब जे अहाँ कोना खाइ छी। भविष्यमे इहो देखब जे हम कोना सुतैत छी आ अहाँ ककरा संग सुतैत छी। हम कोना शौच करैत छी आ अहाँ कोना वायु त्याग करैत छी। भ' सकैये से सभ देखबा ले बाँचल नहियो रहि सकैत छी। मुदा, हमरा प्रसन्नता अछि जे मिथिलाक प्राचीन पर्दा-प्रथाक अन्त भ' गेल अछि एहि स्मार्ट फोनक पसारसँ। स्वागत अछि नुतन मिथिलाक!

पाँच

बात दू बर्ख पहिलुका थीक। जमशेदपुरमे साहित्य अकादेमी दिल्ली आ स्थानीय मैथिली संस्थाक संयुक्त तत्त्वावधानमे एकटा मैथिली कविता पर आधारित सेमिनार आयोजित भेल रहैक। हमरा ओहि सेमिनारक अध्यक्षता करबाक भार देल गेल छल। से हम केने रही। ओहिमे भाग लेने रहथि— सर्वश्री देवेश, प्रेम मोहन मिश्र, अशोक अविचल, रमण कुमार झा, अशोक, शिवशंकर श्रीनिवास, नारायण जी, अजित आजाद आ शिवकुमार टिल्लू प्रभृत्ति। हम अपन भाषणक क्रममे एकटा बात बाजल रही से देवेश आ प्रेम मोहन मिश्रकेँ सुनायकेँ। हमर कहब छल जे साहित्य अकादमीक मूल पुरस्कार जे एखन बर्खमे मैथिली साहित्यक कोनो एकटा विधा पर एक लाख रूपैया देल जाइत छैक तकरा दू टा फांक क' देल जाय। पहिने अकादमीसँ माँग कैल जाय जे दुनू फांकक राशि एक्के समान एक लाख क' देल जाय। जँ से मांग नहि मानल जाय तँ दुनू फांकक राशि पचास हजार क' देल जाय। एहिसँ ई

हैत जे अधिकांश साहित्यकार पुरस्कृत भ' लाभान्वित हेताह। एक बर्खमे दू विधा पर पुरस्कार देबाक प्रावधान हो। जेना कविता आ कथा। निबंध आ संस्मरण। आलोचना आ नाटक। एवं प्रकारें। हमरा कचोट भ' रहल अछि जे हमरा लोकनिक साहित्यकेँ उत्कर्ष पर ल' गेनिहार हमर किछु प्रतिभा सम्पन्न साहित्यकार साहित्य अकादेमीक पुरस्कारसँ वंचित रहि गेलाह। ओ सभ आब हमरा लोकनिक बीच नहि छथि जेना– सर्व स्व. राजकमल चौधरी, ललित, धूमकेतु, डा. धीरेन्द्र, कुलानंद मिश्र, मोहन भारद्वाज आ पंचानन मिश्र प्रभृत्ति। जँ वर्त्तमान परिपाटी जारी रहत तँ एहि सूचीमे आरो नाम सब जुटि जाएत। एहि मुदा पर हम अपन समस्त अग्रज आ अनुज साहित्यकार लोकनिक ध्यान आकृष्ट करय चाहैत छी।

छओ

एकटा समय रहैक जहन कलकत्ता नेतृत्व करैत छल मैथिली आन्दोलनक, मैथिली साहित्य-सृजनक, मैथिली रंगमंचक, मैथिली पत्रकारिताक आ मिथिला, मैथिल मैथिलीक लेल कल्याण मूलक जे कोनो काज हो तकर। मुदा, एखनुका कोलकातामे ने ओ काली आ ने ओ कराह वला स्थिति अछि। कोलकाता एखन सेरायल अछि। जाहि कलकत्ताकेँ आचार्य रमानाथ झा 'मैथिलक तीर्थ स्थल' आ यात्री (बाबा) 'मिनी मिथिला' कहैत छलाह से मिनी मिथिला तँ एखनो अछि मुदा, तीर्थस्थल वला आब कोनो टा गरिमा नहि बँचल अछि। एतुक्का एखन जे साहित्यकार सभ छथि से सब मुण्डे-मुण्डे मतिर्भिन्ना छथि। जेठ-छोटक ककरो कोनो ख्याल नहि छनि। सभ अपना आपकेँ पारंगत बुझैत छथि। अग्रज पीढ़ी अपन अनुज पीढ़ीकेँ प्रोत्साहन कतससँ देथिन जे आर बढ़ल फुनगीकेँ छोपि देबाक कुचेष्टामे लागल रहैत छथि। रंगमंचक स्थिति सेहो चिंतनीय अछि। सभा-संस्थासभ अपन वर्चस्वक ओझराहटिमे फंसल अछि। पत्रकारिताक इतिहास विलुप्त होयबाक कगार पर अछि। एहिठामक मैथिलक श्रमजीवी समाज पतराय गेल छथि। बुद्धिजीवी समाजमे बढ़ोत्तरी भेल अछि जे पाइ कमाइ पर लागल छथि। हुनका लोकनिकेँ मिथिला-मैथिलीक गंध लगैत छनि। तहन कोन बुत्ता पर कहल जाएत जे कोलकाता आबो मैथिलक तीर्थ-स्थल अछि?

सात

मैथिली साहित्यक वर्त्तमान नवतुरिया पीढ़ी बेस समङगर छथि। बेस सचढ़गर छथि से बेटा आ बेटी दुनू। ई मैथिली साहित्यक भविष्यकेँ सुदृढ़ रखवाक शुभ संकेत अछि। हम गर्वसँ किछु नाम जे मोन परि रहल अछि एतय राखि रहल छी जेना डा. अरूणाभ सौरभ, चन्दन कुमार झा, दीप नारायण, शारदा झा, स्वाती शाकम्भरी, रोमिशा, विजेता चौधरी, निशाकर, विकास सत्सनाभ, प्रणव नार्मदेय, अभिलाशा, गुंजन श्री, मनोज शाण्डिल्य, रितेश पाठक, विभा कुमारी, विनीत उत्पल, परमानन्द प्रभाकर, रूपेश व्योंथ, राजीव रंजन झा, आशिष अनचिन्हार, कामेश्वर झा 'कमल', विजय इस्सर'वत्स' अजय कुमार झा, नारायण झा, सच्चिदानन्द सच्चू, सत्येन्द्र कुमार झा, अनमोल, आमोद कुमार झा, विनय भूषण, रंजीत कुमार झा 'पप्पू', अमरनाथ भारती, सोनू कुमार झा, भाष्करानन्द झा भास्कर, मेनका मल्लिक, महाकांत ठाकुर, मिथिलेश कुमार झा, शीतल कुमारी दिलीप कुमार झा प्रभृत्ति लोकनि। हिनका सभक रचना हम सभ पढ़ैत छी आ आह्लादित होइत छी। एहि लिस्टमे किछु नाम तँ एहन अछि जे नवतुरिया रहैत हुनकर लेखन प्रौढ़ भ' रहल छनि। किछु एहनो नाम सभ अछि जे हुनका सभकेँ आर मेहनत करय पड़तनि। बेसीसँ बेसी पढ़य पड़तनि। मैथिलीक इतिहास बुझय पड़तनि। अपन अग्रज साहित्यकारक सान्निध्य पावि अपनाकेँ माजय पड़तनि। ई मोन राखय पड़तनि जे व्याकरण शुद्ध भेने टासँ अहाँ साहित्यकार बड़ कमजोर रहनि मुदा हुनक व्यापक अध्ययण आ अनुभवक संसार एतेक विशाल रहनि जे हुनकर साहित्य पढ़िकेँ कतेको साहित्यकार अपनाकेँ परिष्कृत केने छथि। हिनका लोकनिकेँ हमर एकटा सुझाब छनि जे अहाँ कतेक लिखलौं से नहि जानि। अहाँ की लिखलौं से गुनी। साहित्य-लेखन क्रिकेटक रन नहि छियैक। साहित्यक लेल साधना करय पड़ैत छैक। समुन्द्र मंथन करय पड़ैत छैक। एहि बातकेँ स्मरण करैत लेखन करै जाउ। मैथिलीक भविष्य अहीँ लोकनिक हाथमे अछि। जय मैथिली!

आठ

पं. चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' आ डा. रामदेव झा (ससुर-जमाय)क मैथिली साहित्यक अवदानकेँ बिसरल नहि जाए सकैत अछि। मैथिलीक ई दुनू वरदपुत्र हमरा लोकनिक गौरव छथि। हमरा पीढ़ीक लोक हिनका कृति पढ़िकेँ मैथिली साहित्य बुझय लगलाह। किछु गोटे साहित्यकारो बनलाह। तेँ हमरा सभ लेल दुनू कीर्त्तिस्तंभ छथि। वंदनीय छथि। अही परिवेशमे पलल-बढ़ल डा. शंकरदेव झा हमर अनुज छथि। जेठ भाइक सम्मान दैत छथि। ओ शोध विषयक निष्णात विद्वान छथि। हमर स्नेही साहित्यकार छथि। ओ जँ चाहितथि तँ कोनो कौलेजमे प्रोफेसर बनि सकैत छलाह। मुदा, से नहि बनलाह। पत्रकारिताकेँ धर्म मानि ओहिसँ जुरि गेलाह। ओ तेजस्वी छथि। प्रतिभाशाली छथि। मैथिलीक सजग प्रहरी छथि। मैथिलीक हितक विदति भेला पर आक्रोशित भ' जाइत छथि से तेना जेना हिनकर भरल जजाति खेतकेँ कियो महींससँ चराय लेने हो। आक्रोशक बेग हिनकर एहन भ' जाइत अछि जे वाणी आ लेखन पर नियंत्रण नहि राखि पबैत छथि। किनको उकटि दैत छथि तेना भ'केँ जे ओ हुनकर कट्टर दुश्मन भ' जाइत छथि। हिनक प्रशंसक सेहो कम नहि छनि मुदा से संख्या शत्रुक आगू झूस पड़ि जाइत अछि। हम हुनक शुभचिंतकक नातें एकटा सुझाव देबनि जे अहाँ विरोध व्यक्त करू। से खूब करू। मुदा, भाषा शालीन राखू। बंगालमे एकटा कहबी छैक जे 'आपनार त्योवहार आपनार परिचय'। से अपन परिचय खराब नहि करू। अहाँ अपन बात विवेकपूर्ण ढंगसँ अग्रज-अनुजक प्रतिष्ठाकेँ ध्यानमे रखैत कहि सकैत छी। पत्रिका वा पोथीमे अहाँक भाषा कतेक शिष्ट होइत अछि से हम यत्नपूर्वक पढ़ैत रहैत छी। फेसबुक पर जे पोस्ट करैत छी से भाषा हमरा विचलित करैये। मुदा अहाँक सही परिप्रेक्ष्यमे रहैत अछि। ज्वलंत समस्या आ मैथिलीक हितक रक्षार्थ रहैत अछि। मुदा, हम आशा करैत छी जे आगाँसँ हम किनको मुँह अहाँक कोनो शिकाइत नहि सुनब। आयुष्मान भवः

•

समकालीन आ सार्थक विमर्श लेल नोतैत उपन्यास : कोखि

रूपम झा

वीरपुर, बेगूसराय

सम्पर्क : 7870283170

हमरा जनैत उपन्यास कथा आ उपकथा सभक संगम होइत अछि। एकटा केन्द्रीय विषय वा विचारकेँ ल' क' चलैत अछि, जाहिमे विभिन्न कथा/उपकथा गाँल रहैत अछि। प्रस्तुत उपन्यास 'कोखि'मे तेहन बात देख'मे अबैत अछि।

एहि उपन्यासमे चारिटा विन्दु पर गप कयल गेल अछि— दत्तक पुत्र ग्रहण माने पोसपुत लेब, लिव इन रिलेशनशिप, सेरोगेसी आ भ्रूण हत्या। एहि चारू विषयकेँ समेटि क' उपन्यासकार कोखिक महत्वकेँ कुशलतापूर्वक उजागर कयलनि अछि।

एहि उपन्यासक सूत्रधार प्रोफेसर प्रतीक पराशर अछि। हमरा एहि पात्रकेँ सूत्रधारे कहब उचित लगैत अछि, कारण ई सभ कथा/उपकथाक संग उपन्यासमे अछि। प्रतीक अछि गणितक प्रोफेसर, मुदा मैथिलीक रंगकर्मी सेहो अछि...नाट्य समीक्षक सेहो। पल्लवी नामक रंगकर्मीसँ प्रेम विवाह कयने अछि।

उपन्यासक आरंभ फेसबुकक फ्रेंड रिक्वेस्टसँ होइत छै। प्रतीक एकटा महिलाक रिक्वेस्ट पर पत्नीक संग विचार क' ओकर मित्रताकेँ स्वीकार करैत अछि। ओ महिला प्रतीकक पोथी सभ पढ़ने रहैत अछि आ से सूचना ओकरा दैत अछि । बादमे ओ महिला माने नायिका श्वेता प्रतीककेँ अपन पिता मानि लैत अछि। ओ कहैत अछि जे अहींक शहरमे हमर पिताक हर्ट अटैक भेल रहनि, आइ अहाँ भेटलौं, तँ अहाँमे अपन पिताक छवि देखैत छी। प्रतीक एहि संबन्धकेँ स्वीकारैत आ निमाहैत अछि।

श्वेता आ अनुपम निःसंतान अछि। कालेजक संगी अछि आ प्रेम विवाह कयने अछि। ओकरा दुनूक प्रेम विवाहकेँ अनुपमक पिता नहि स्वीकारलनि, तँ ओ फराक डेरा ल' क' दुनू प्राणी रहैत अछि। बादमे अनुपमक परिवार सम्बन्धकेँ मानि लैत अछि। मुदा, तैयो ई दुनू अलगे रहैत अछि। श्वेता हिन्दीमे प्रतीकक युनिवर्सिटीसँ पीएचडी क' रहलि अछि। एही दम्पत्तिसँ कथा चलैत छै।

श्वेताकेँ तीन बेर चारि-चारि मासक गर्भनाश भ' गेल छै, तैं ओ फेर माय बनेक बारेमे नहि सोचैत अछि। मुदा, ओकरा दुनूक नैहर-सासुर पक्षक चिन्ता खूब देख'मे अबैत छै आ ओही लेल उपन्यासक कथा बढ़ैत छैक। अनुपमक माता-पिता बेर-बेर ओकरा दोसर बियाह कर' कहैत छैक, जकरा ओ बेर-बेर नकारि दैत अछि। श्वेताक माय एकरा दुनूक संतान हेतु सभ प्रयास करैत रहैत छथि आ एहि हेतु ततेक ने चिन्ता करैत रहैत छथि जे अपन बेटा रवि आ बेटी शुभाक चिन्ता बड़ कम करैत छथि।

शुभा कलकत्तामे नोकरी करैत अछि। रवि बंगलौरमे नोकरी करैत अछि। बेटीक लेल संतानक विभिन्न उपाय लेल व्याकुल श्वेताक मायकेँ सेरोगेसीक बारेमे शुभा कहैत छनि। सेरोगेसीकेँ पूरा बूझि गेलाक बाद ओ अपन दूरक सम्बन्धक बहिनक बेटी ललिताकेँ तैयार करबाक प्रयास करैत छथि। ललिताकेँ दस बरखक बेटा छैक। पति दिल्लीमे नोकरी करैत छैक। बहुत रास मानसिक द्वन्द्वक बाद ललिता निर्णय लैत अछि जे ओ मौसीक बात नहि मानत।

एकटा कथा आर चलैत अछि। ओ कथा थिक प्रतीक आ भौमिक दा'क। दुनू रंगकर्मी मित्र अछि। परिचय तँ पहिनेसँ छलैक, मुदा जबलपुर नाट्य समारोहमे साक्षात् भेल छल। भौमिककेँ अपम टीमक कलाकार पारुलसँ प्रेम भ' जाइत छै। प्रेममे दुनू एक-दोसराक प्रति आसक्त आ प्रतिबद्ध अछि। एही क्रममे पारुल भौमिकक बच्चाक माय बन' बाली भ' जाइत अछि। मुदा, ओ अपन नृत्य आ अभिनयक कैरियरक कारणेँ बच्चा नहि चाहैत अछि। मुदा, भौमिक भ्रूणहत्या नहि चाहैत अछि। आ अंततः पारुल भौमिकक आगत संतानकेँ नष्ट क' कोलकाता चलि जाइत अछि। ओ बंगालक प्रसिद्ध नृत्यांगना आ अभिनेत्री बनि जाइत अछि।

पारुलक एहि कार्यसँ भौमिक आहत होइत अछि। ओ रंगकर्म त्यागि दैत अछि आ स्वयंकेँ नुका लैत अछि। अनचोके सभसँ अपन संपर्क खतम क' लैत अछि आ मोहन बाबू बनि बाल कल्याण आश्रम बनबैत अछि। ओ अनाथ नेना सभकेँ आश्रय दैत अछि। सरकारक दत्तक ग्रहण प्राधिकरणसँ संस्थाकेँ पंजीकृत करा क' बाल कल्याणमे लागि जाइत अछि। मित्रप्रतीकसँ अंतमे भेंट होइत छै। भेंट होइत छै पारुलसँ। श्वेता आ अनुपम पोसपुत लेल ओहि आश्रम जाइत अछि मुदा मोहन बाबूक काज आ व्यक्तित्वसँ जतेक ने प्रभावित होइत अछि, जे अपन विचार बदलि हुनक अभियानक सहभागी बनैत अछि। पारुल भौमिक लग घुर' चाहैत अछि। ओ भौमिककेँ कहैत अछि जे ओकर कोखि एखनो भौमिकेक प्रतीक्षामे छैक। तकर उतारामे भौमिक कहैत छैक जे कोखि बहुत सम्मानजनक शब्द होइत छै मैडम। आ दोसर दिस घुमि अलमारीसँ पाण्युलिपि बहार कर' लगैत

अछि। उपन्यास एतहि समाप्त होइत छै।

ई तँ भेल उपन्यासक संक्षिप्त कथावस्तु। एहि उपन्यासमे अंतर्निहित एकटा आओर गप्प नुकाओल छैक जकरा स्पष्ट केनाइ आवश्यक अछि। एहि उपन्यासक सभटा स्त्री पात्र अपन जीवनकेँ छोटसँ छोट आ पैघसँ पैघ निर्णय स्वयं ल' रहल छथि। जेना पारूलक अपन निर्णय छलैक जे ओ माय नहि बनति। ललिता सेहो अपनहि निर्णय लेलकि जे ओ मौसीक बात नहि मानति। श्वेताकेँ पोसपुत लेबाक निर्णय। अधिकांश स्त्री अपन जीवनक सम्पूर्ण निर्णय स्वयं नहि ल' पाबि रहल छथि। स्वयं निर्णय लेबाक अधिकार हुनका नहि छनि। ओ अपन जीवनक लेल नीक-बेजाय सोचब बन्न कयने छथि। मुदा किछु स्त्री छथि जे भीड़सँ फराक छथि। आ अपन क्षमतासँ साबित क' चुकल छथि जे ओ अपन जीवनक बाटमे बिना सोंगरोकेँ चलि सकैत छथि। हुनकर बाट कतेक कठिन छनि, हुनकर गणतव्य कतय छनि, से सभटा बात हुनका ज्ञात छनि। ओहि भीड़सँ फराक स्त्री सभकेँ उपन्यासकार अपन उपन्यासक पात्र बनौलनि अछि। उपन्यासकारक स्त्री स्वतंत्रताक प्रति ई दृष्टिकोण प्रशंसनीय अछि। आ एहि उपन्यासक माध्यमसँ एकटा संवाद अपना देश वा समाजमे पठयबाक प्रयास कयलनि अछि जे स्त्री अपन जीवनक सभ निर्णय स्वयं लैथि। अपन जीवनसँ जुड़ल सभटा बात पर गंभीर बिचार-विमर्श करथि। कारण, जखन सोचब बन्न भ' जाइत छैक तखन सीखब सेहो बन्न भ' जाइत छैक आ जखन सीखब बन्न भ' जायत तँ विकास स्वतः बन्न भ' जाएत ।

***समीक्षित पोथी** : कोखि*
***लेखक** : प्रदीप बिहारी*
***प्रकाशक** : चतुरंग प्रकाशन बेगूसराय।*
***पृष्ठ** : 202*
***मूल्य** : 250/-*
***प्रकाशन वर्ष** : 2020 ई.*

प्रदीप बिहारी अपन कथामे कथोपकथन आ वातावरण निर्माणमे माहिर छथि। हिनकर भाषा सहजहिं पाठककेँ बान्हि लैत छैक। वातावरणक अनुसार मैथिलीक ठेंठ शब्दक समायोजन क' वाक्य गढ़ब हिनक विशेषता छनि। मैथिलीक अप्रयुक्त शब्द सभकेँ प्रयोगमे आनि ओकरा पुनर्जीवित करैत रहब सेहो हिनक प्राथमिकता होइत छनि। कथाक भाषाकेँ मनोरम आ सर्वग्राह्य बनयबाक कलाकारी ई बुझैत छथि। एहि पोथीक कतोक स्थल पर से देखल जाइत छैक। जेना, जखन श्वेता आपरेशन थियेटरमे अछि आ श्वेताक माय आ पति अनुपम अस्पतालक केबिनमे श्वेताक प्रतीक्षारत अछि, ताहि समयक वातावरणक सृजन देखिते बनैत अछि। भावुकताक ओ क्षण अविस्मरणीय अछि। तहिना जखन ह्वाट्सेप पर श्वेता प्रतीककेँ कहैत छै जे अहाँमे हम अपन पिताक छवि देखैत छी। एहन बहुतो अंश छैक जत' पाठक स्वयंकेँ बिसरि जयबा लेल बाध्य होइत अछि।

प्रेमक शाश्वत रूप तँ एहि उपन्यासक आभूषण सन छै। श्वेता आ अनुपमक प्रेम, शुभा आ आशुतोषक प्रेम एवं भौमिक आ पारुलक प्रेम। सभक प्रेमकेँ उपन्यासकार एकेटा गीतक प्रतीकसँ बान्हैत छथि। ओ अछि गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर - आमार प्राणो जहाँ चाई, तुमि ताई. ..तुमि ताई गो...। माने हमर प्राण जकरा चाहैत अछि, से तौं छैं..तोहीं छैं...। एकहि गीतसँ तीनू जोड़ीक प्रेम-बन्हन ई बतबैत अछि जे प्रेमक शाश्वतता एक्कहि होइत छै, काया भने अलग-अलग होउक। हमरा जनैत ई बड़ीटा बात कहैत छथि उपन्यासकार।

एहि उपन्यासमे गौण पात्रक महत्ता पर नाटकक विचार गोष्ठीमे चर्च चलैत छै। हमरा लगैत अछि जे लेखक स्वयं एहि बातकेँ पूरा ध्यान एहि कृतिमे राखलनि अछि। उपन्यासक छोट-छोट पात्र जेना, ललिता। बड़ कम समय लेल पोथीमे अछि, मुदा मौसीक विरोध क' महत्वपूर्ण बनि गेल अछि। रितिका, जे स्वयं लिव इनमे रहैत अछि। अपन सहकर्मी शुभाकेँ आशुतोषक संग उपजल मन-मुटावकेँ ठीक करैत अछि। एकटा पात्र रवि, जे श्वेताक भाय अछि, पूरा उपन्यासमे नेपथ्यमे अछि, मुदा प्रायः दू-तीन वाक्यक संवादसँ लेखक ओकरा महत्वपूर्ण बना देने छथि। ई प्रदीप बिहारीक लेखनक विशिष्टता छनि। एहू लेल ओ लोकप्रिय आ आवश्यक लेखक छथि।

एहि उपन्यासक एकटा खूबी इहो छैक जे जतेक बेर पढ़ब, ततेक नव विमर्श बुझना जायत। सामाजिक समस्यासभ पर बड़ कौशलसँ पाठक ध्यान केन्द्रित क' एकटा नमहर विमर्शक गुंजाइस बनबैत छथि। ओना ई कहब बेसी उचित जे विमर्श हेतु नोंतैत छथि।

एहि उपन्यासमे राग छैक, अनुराग छैक। प्रेम छैक, विरह छैक। मिलन सेहो। दायित्व निर्वहनक अनुपम उदाहरण प्रस्तुत छैक। संबन्धक परिभाषा आ गरिमा छैक। देश-कालक चिन्ता आ चिन्तन छैक। लोक कोखिक दुरुपयोग कोना करैत अछि, तकर चिन्ता छैक। कोखि सन सम्माननीय अंगकेँ कोना बचाओल जाय, तकर चिन्तन छैक।

ई उपन्यास पढ़ैत अपनेकेँ लागत जे बहुत दिनक बाद एकटा सम्पूर्ण आ महत्वपूर्ण उपन्यास पढ़लहुँ अछि। उपन्यासक कथानकमे आधुनिक वैश्विक संस्कृतिमे होइत परिवर्तनकेँ सेहो लेखक बहुत सूक्ष्मतासँ अंकित कयलनि अछि।

ई उपन्यास समाजक चेतना निर्माणमे महत्वपूर्ण भूमिकाकेँ निर्वाह करत। एतेक महत्वपूर्ण उपन्यासक रचना लेल उपन्यासकार श्री प्रदीप बिहारी जीकेँ बधाइ दैत छियनि।

●

मैथिली खरमासी लिटरेचर फेस्टिवल

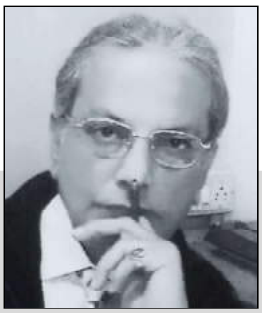

वीरेन्द्र नारायण झा

समया, झंझारपुर, मधुबनी

संपर्क : 7903425262

मैथिली आ हिन्दीक प्रसिद्ध व्यंग्यकार वीरेन्द्र नारायण झाक बहुत रास वैचारिक आलेख, कहानी, लघुकथा, व्यंग्य आ कविता हिन्दी-मैथिलिक प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिका सभमे प्रकाशित होइत रहैत छनि। नियमित व्यंग्य स्तम्भ लेखनक अनुभवः हिन्दुस्तान दैनिक, सन्मार्ग, प्रभात खबर, समकालीन तापमान आदि। *जीबाक बाट* (कथा संग्रह), *हास्य पर व्यंग्य फ्री* आ *ठाँहि-पठाँहि* (व्यंग्य संग्रह) हिनक प्रकाशित आ चर्चित मैथिलीक कृति छनि। हिन्दीमे *भगवान भरोसे* (लघुकथा संग्रह), *मस्त पस्त मुरारी जी* एवं पाँच गोट व्यंग्य संग्रह प्रकाशित। संप्रतिः ग्राम्य जीवन व्यतीत करैत स्वतंत्र-स्तंभ-लेखन आ साहित्यिक गतिविधिसँ जुड़ल छथि।

अपनहुँ सभ सुनने हेबै, खरमास शुरू भए गेल अछि। ई बात अलग जे अइ रचनाकेँ पढ़बा काल खरमास रहए वा नहि रहए। ओना ई मानि क' चली जे हमरा सभ रहबे करब आ संपादक जी सेहो रहबे करताह। माफ करब, भएक्सीन आबिए रहलए ने। भोंकेलाक बाद निचेन। पछाति खो मंगला पड़ल रह, नहि तँ कवि गोष्ठी करैत रह... पाग-डोपटा सरियेबैत रह... आधुनिकतामे जीबैत रह आ अतीतक गुणगानमे कविता गढ़ैत रह...! मोटर साइकिल पर उड़ैत रह आ कठही गाड़ी लेल छाती पीटैत रह आ थपड़ी लूटैत रह...।

खरमासमे बिआहक शुद्ध जे अशुद्ध भए जाए, मुदा ओइ वरक हाल की होइ छै से कियो सोचलकै? कानी कटाएल वर रहिए गेल, यैह हाल हेतै ने। ओमहर कनियाँक वश चलितै, तँ खरमास लागू करै वलाक कान कतरि क' ओकरा सोशल साइट्स पर वायरल करैत ई लिखितए, जकर कानक ई कतरन छी से आबि क' ल' जाओ। यद्यपि, ई कोनो अनर्गल नहि होइत। कारण, मात्र खरमास दुआरे ककरो ब्याह किछु मास लेल रुकि जाय, प्रेम-शास्त्र-सम्मत नहि भेल ने। कने कल्पना कैल जाओ, सरकार जँ एहन (कु)कृत्य करैत, त' वर-कनियाँक संग दुनूक मम्मी-डैडी सरकारकेँ चेनसँ कुरसी पर बैस' दितए! ओना, ई गप फराक जे सत्ताक कुरसी काज लेल कम, बैसबा आ पॉलिटिक्स करबा लेल सदिखन सुरक्षित होइछ।

एकटा बात ध्यातव्य अछि जे वर (लड़का) आ हुनक होइ वाली कनियाँ (लड़की) लेल ज्ञानीक पोथीमे एहन कोनो नियम नहि छनि जे दुनूकेँ खरमासक अवधिमे भेंट-घांट करबासँ रोकि सकए। आ कि एक संग रहबा पर जुर्माना ठोकि दिअए। कारण, 'लीव-इन-रिलेशन' पर खरमासी सभ एखन धरि कल्पनो नहि केलनि अछि जे एकर विरोध करताह। हँ! कष्ट ओहि जोड़ीकेँ छैक जे सिर्फ 'मोबाइल-इन-रिलेशन' पर आश्रित अछि। तखन, एखनुका स्मार्ट मोबाइल जकाँ आजुक लड़का-लड़की ततेक ने स्मार्ट आ बोल्ड अछि जे खरमासी ओकर संबंध आ मोबाइल-वीडियो-वार्ता- आलापकेँ बाधित नहि कए सकैत छथि। अइ लेल इंटरनेटमे एंटर करए पड़तनि। जे कि निकट भविष्यमे संभव नहि।

खरमास ब्याहेटा स्थगित नहि केलक, ई तँ कोरोना-कोविडसँ जेना गठजोड़ क' लेने अछि। कोविड जेना लॉकडॉन लगा क' कतेको वर-कनियाँक करेज पर क्रेन चला देलक आ ओ सभ पति-पत्नी बनबा लए 'मैरिज फ्रॉम होम'सँ ब्याहक कल्पनामे डूबल रहल आ जखन साकार करबाक बेर आयल कि तखनहि खरमासक लाठीचार्ज होमय लागल। जेना केश कटेबिते मेघसँ पाथर खस' लागल। कहू त'... एहनो जुलुम भेलैए एहि लोक-धर्मतांत्रिक समाजमे!

तखन एहन-एहन तंत्र राखिए क' की करब यौ खरदूषण जी?

हम अपन सखासँ पूछने रहियनि। किए तँ हमर माथ काज केनाइ बन्न कए देलक बाबू। ई पूसक पछबा हवाक असरि छी कि बुढ़ारीक से नहि जानि, मुदा जवाब वा समाधान त' चाहबे करी। ओना, शरीर ने बुढ़ाएलए, माथ तँ कोनो सत्तरि-अस्सी वर्षक नेतासँ बेसी तेज अछि, जे कोनो गंभीर समस्या पर देरीसँ काज करैए। मुदा करैए त'! यद्यपि, ई कोनो दैहिक समस्या नहि छी। संगहि कहए चाहब जे ई कोनो प्रांतीय वा राष्ट्रीय समस्या सेहो नहि थिक, जे उत्तर देबामे कतेको युग लागि जायत। से तुरत निराकरण लेल हम अपन मित्रसँ 'हेल्प लाइन'क सुविधा लैत, संपर्क केनाइ उचित बुझलहुँ। मित्र हमर साहित्यसँ सेहो जुड़ल छथि। नै-नै! साहित्य हिनक पछोड़ धेने अछि। तेँ ने आइ जिला-जएबारमे एकर पूछ छैक। मैथिली लिटरेचर फेस्टीवलक आयोजन होइत अछि। नै तँ मैथिली साहित्य कहियो फेस्टिवल-मेला साहित्य मना सकितए! आगाँ जा क' ई विदेसर, सिमरिया आ कुम्भ मेला साहित्य सेहो भए सकैछ। हँ! साहित्य मादे मोन पड़ल, ऊपरसँ फीट-फाट भीतरसँ मोकामा घाट! हम नहि, ई मित्रक कहब छनि।

हुनक उत्तर छल, हौ बुद्धिक चौपाटी... तंत्रमे एकटा छै सामाजिक तंत्र, जे अलिखित छैक। जे अदौसँ होइत आयलए आ जे नव पर जुड़लए, अइमे दुनूकेँ सत्य बूझल जाइत छैक, शेष असत्य थिक। जेना, ढोल-पिपही अदौसँ बजिते छैक आ डीजे ओइमे जुड़ि गेलासँ सेहो धड़केबैए। तँ दुनूक अनुसरण हेबाक चाही। तखने समाज रहतै आ लोक बँचत। नहि तँ लोक कतहु आ समाज कतहु। तालमेले नहि रहि जेतै। जेना सत्तापक्ष आ विपक्ष, एकटा इर घाट दोसर बीर घाट। ई नीक बात नहि छियै ने। तखन?

तखन नीक की छियै, जे भए रहल अछि, से कि जे नहि भए रहलए, से?

उत्तर सुनि हम चकरा गेल रही। जवाब किछु फुरा नहि रहल छल।

अंतमे वैह सम्हारलनि, हौ चौपाटी! हम की कहलियह, जे अदौसँ भए रहल छैक आ ओइमे इहो जोड़, सभ कियो एखन जे क' रहल अछि, सैह उचित आ सर्वमान्य अछि। कारण, जै पथ पर नेता-मंत्री, समाजक धनबली आ मोछबली चलथि, वैह पथ भेल धर्मपथ आ लोकपथ! संगहि कर्मपथ यैह थिक। एकर अलावे जे कोनो पथ अछि से भेल तोरा अधर्मपथ। आ अइ पर चलनिहारकेँ भटकलपथिक कहल जाइछ।

हे तात! अपनेक वचन हमरा ओहिना बुझना जाइए, जेना केंद्र सरकारक गप आंदोलन केनिहार किसानकेँ बुझना जाइत छैक। से हमर मार्गदर्शन कैल जाओ। हमर माथ आ बुद्धि एखन सुन्न भए गेल अछि। जाड़सँ नहि, अपितु अपनेक जिलेबी सन सोझ गप सुनि क'।

चिंता जुनि करह मिथिलापार्थ! धैर्य राखह भारतीय भोटर जकाँ, कलें-कलें सभटा बुझि जेबह। सुनह! खरमासकेँ सभ कियो मानैत अछि, तँ तोहूँ मानल करह। बेसी तीरी नहि एहि सभ मान्यताकेँ, नहि तँ एक दिन उठल्लू भए जेबह। जँ खरमासमे शुभ काज नहि कैल होअ', तँ मर्दे अशुभ काज सभ कर' लागह ने। मुदा बैसल नहि रहह। रावणक नाम जप' लागह। रामभक्त सुनिते दौड़ल एथुन। अयोध्या दरबारमे ई खबरि पहुँचत आ राम तोरा पर प्रसन्न हेथुन जे भक्त समयक सदुपयोग केलक। तोहर अवश्य कल्याण हेतह। अशुभ काजक लिस्टमे लिखल छैक जे खरमासमे जे प्राणी दिन-राति अपन कठबॉसक स्मरण करैत रहैत अछि से एक ने एक दिन वैह कुरसी अवश्य हथिया लैत अछि। जे 'पीड़ पड़ाई' मादे सदिखन सोचैए आ ओकर कष्ट दूर करबाक चेष्टा करैए, से जन कहियो चेनसँ नहि रहि सकैए। चाहे ओकर चानि परहक केश जवानिएमे किए ने उड़ि गेल होइक। ई समय घूस लेबाक-देबाक लेल सर्वथा वर्जित अछि। खरमासक दोषसँ अइ कमाइमे बरकति कथमपि नहि भए सकैछ आ यैह कारण छै जे भारत विश्वमे घुसखोरीमे पचहत्तरिवां संख्याकेँ आइ धरि पार नहि क' सकलए। छै ने दुखद स्थिति! से, खरमासक लॉकडॉन हटला पर हमरा सभ घुसखोरीक शतक प्राप्त कए विश्वमे भारत भूमिक पताका फहराबी।

हे मित्र खरदूषण, खरमासमे साहित्य भए सकैत अछि कि नहि, एहि पर कने मोबाइल टार्चक इजोत दियौ ने। कारण, डर होइए जे एखनुका रचल साहित्य खढ़-पात भए पुरस्कार लेल छंटाइए नहि जाए! ओना, आर दोसर बात जे खर-मासक बाद जँ ओकरा कियो पुछबो नहि करत, तखन तँ हम कतहुकेँ नहि रहब!

हे सखा! धैर्यसँ सुनू। अहाँक सभ शंकाक समाधान हमरा लग अछि।

खरमासमे साहित्य हेतै किए नहि... नीक जकाँ हेतै। मुदा प्रश्न छैक जे केहन साहित्य होअय? एकरो उत्तर हमरे लग अछि, कोनो दोसर-तेसर मठाधीश लग नहि, एतबा गारंटी दैत छी। से कहलहुँ साहित्य जे होअय से, मुदा एकरा आब जन-जनसँ जोड़बाक जरूरति अछि। मैथिली-हिन्दी-भोजपुरी-हरियाणवी मिक्स गीत-कविता-साहित्य जकाँ। आइ जन-जन, हर हरि-जनकेँ यैह गीत सभ याद छैक। कियो गाबए कि नहि, परन्तु सुननहारक ठोर स्वतः गुनगुनाए लगैत छैक। जेना, फलां छौंड़ा चुम्मा लेलकौ तीन बजे भोरहरियामे... ई छौंड़ी...ऊ छौंड़ी...मारै छै सभकेँ जान... गोरकी पतरकी रे लचके कमरिया... आब हरियाणवी सेहो सुनि ली, तेरी आँख्या का वो काजल... पल-पल आग लगाए...

राम-राम! तात खरदूषण, अहाँ त' घिना देलियै!

तों रामेक नाम लेलह ने हौ। ई शुभ थिक। सुनह, हम जें सुनलियै तैं ने बुझलियै। जें कि नीक लागल तैं ने याद अछि। जँ ककरो नहि नीक लगै छै, तँ गीत बजबै के छै आ सुनै के छै? कम्बल ओढ़ि क' सभ कियो सुनैए आ तरे तर गीतक रस पीबैए। तैं ने ई साहित्य एहन रसगर-सुअदगर अछि, जतय बूढ़ आ जवान एक भए जाइए। मौगी आ मरद, दुनू मुह घुमा क' सुनैए आ गुदगुदाइए। छौंड़ी-छौंड़ा सभ मुदा अइ तरहक गीत पर डाँड़ तोड़ि क' डांस करैए। डीजे रहबाक चाही। से खरमासक साहित्य एहने होअए आ खरमासक बाद एकर जमि क' उपयोग होअए। जेना कि... बिआह-मुड़न-उपनयन-बर्थडे-मैरिज डे-फेस्टिवल डेज आ सहित्य डे...आदिमे। आब तँ बात-बात पर डीजे बजे छै आ डीजेसँ यैह सभ निकलैत छै। डीजे बिनु सिंदूर दान नहि भए रहलए। तखन आगाँ यैह परम्परा बनि जायत। आइ फटलाहा जीन्स आ कुर्ता पहिरब स्टायलमे आबि गेलै ने। तात्पर्य, खरमासक साहित्यक बड़ महत्व आ मांग छैक। एहि लेल ने गोष्ठी आ ने मंचक आवश्यकता आ ने मंचासीन हेबाक तरद्दुत आ ने 'पैकेटक' खर्च। बस डीजे टा उपलब्ध रहए। डीजेसँ याद आयल, कोनो डीजे प्रेमी गाँवमे एक गोट बच्चा अइ दुआरे जन्म लेनाइ स्थगित क' देने रहैक जे ओहि कालमे कतहुसँ डीजेक आवाज ओकरा नहि सुनाइ देलकै। तखन हांय-हांय क' डीजे वलाकेँ बजाओल गेल आ तकर बादे बच्चाक 'भये प्रगट कृपाला'क विधि सम्पन्न भेल। त' ओहि बच्चाकेँ ओहने साहित्य नीक लगतै ने।

मित्र खरदूषनक साहित्य मादे जानि क' हमर माथ आरो सुन्न भए गेल छल, मुदा हुनक धाकसँ चुप्पे रहलहुँ।

कि मित्र अपनहि बजलाह, अहाँ गुम छी चौपाटी जी, लगैए अहाँक सभ शंकाक समाधान भए गेल अछि। आब खरमासी लिटरेचर फेस्टिवलक तैयारीमे जुटि जाओ, मुदा पिपही-डीजेक संग।

हमरा गुम्मी ध' लेलक। की करितहुँ!

●

तिस्ता नदीक कछेरमे एक राति...

फुलकान्त ठाकुर

बरदाही, बाबूबरही, मधुबनी

सम्पर्क : 7992322719

फुलकान्त ठाकुरक जन्म 18-02-1987 क' मधुबनी जिलाक बाबूबरही, बरदाही गाममे भेलनि। जिला स्कूल मधेपुरासँ वर्ष 2001मे मैट्रिकक परीक्षा पास कएलनि एवं वर्ष 2009मे बीजू पटनायक यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी, उड़ीसासँ कम्प्यूटर साइंसमे इंजीनियरिंग कएलाक बाद बिहार सरकारक जिला सूचना प्रौद्योगिकी प्रबन्धकक पद पर साढ़े पाँच वर्ष अरवलमे काज कएलनि एवं 2015मे बैंक पी.ओ.क पद पर पीएनबी बेनीपट्टीमे पदस्थापित भेलाह। साहित्यसँ नेनपनेसँ अभिरुचि छनि। अनुप्रास मैथिली पत्रिकाक प्रबन्ध सम्पादक छथि। सम्प्रति प. बंगालक दुर्गापुरमे इंटरनल सीनियर ऑडिटरक पद पर कार्यरत छथि।

हमर स्थानान्तरण पीएनबी खोजपुर मधुबनीसँ 31-07-2020 क' मैनेजरसँ सीनियर मैनेजरकेँ पदपर दुर्गापुर पं. बंगाल भेल छल। घरक लग महक ब्रांच छोड़ि क' प्रमोशन लेने रही से 'नीक केलहुँ कि बेजाए' मोनमे ई गुणधुन्नी लेने दुर्गापुर गेल रही। ओतए पहुँचलाक बाद मोन आओर भारी भ' गेल छल। कारण एत' हमरा ऑडिट ऑफिसरकेँ रूपमे काज-भार भेटल छल। भारीए मोने मित्र दीप नारायणकेँ फोन केलियनि ओ कहलाह– 'ई एकटा नव अवसर अछि अहाँ लग। एकर लाभ एहि तरहेँ ल' सकैत छी अहाँ, अपन सभ यात्राकेँ संस्मरण लिखैत चलू जाहिसँ आन लोककेँ सेहो लाभ भेटतैक।' हम चकित भेल रही! किएक कि ई विचार हमरा बहुत उत्साहित कएने छल। हम अपन ड्यूटी आरम्भ कएलहुँ आ प्रत्येक यात्राकेँ लिखब सेहो आरम्भ कएलहुँ। अपन सभ यात्रामेसँ 'तिस्ता नदीक कछेरमे एक राति...'क' संस्मरणकेँ अपने लोकनिक सोझा राखि रहल छी–

23-01-2021 (शनिदिन)

हमर निन्न भोरे 7:30 बजे खुजैत अछि। हम आइ सिलीगुड़ी राज दरवार होटलक रूम नं. 204मे छी। एतसँ त्रिवेणीक यात्रा पर जयबाक अछि। एहि यात्रामे हमरा संग– प्रोवल साहा जे कि माथाभंगाक ब्रांच मैनेजर, साधना वर्मन, ओहि शाखाक अधिकारी, स्वेता, सीनियर मैनेजर मुर्शिदाबाद आ सोमजीत चन्द्रा, सीनियर मैनेजर न्यू जलपाइगुड़ी छथि।

हमरा सभ 8:30 बजे तैयार भ' होटलसँ निकलि सिलीगुड़ी जंक्शनसँ पहुँचल रही। गाड़ी बुक करबामे कने समय बेसी लागि गेल, दिनक करीब बारह-सवा बारह बाजि रहल छल। हम सभ गाड़ीमे बैसलहुँ आ ड्राइभर गाड़ी विदा कएलक। बाटमे शालुगाड़ाक आस-पास एकटा गुमती पर रूकि क' चिप्स आ पानिक बोतल लेने रही। शालुगड़ा पार करिते सेवक पहाड़ीक सुन्दर प्राकृतिक दृश्य देखि मोन रोमांचित भ' रहल छल। सड़कक दूनू कात 'आर्मी कन्टेनमेन्ट जोन' एहि प्राकृतिक सौन्दर्यमे चारि चान लगबै छल। तिस्ता नदीक कछेरे-कछेर तिस्ता बाजार पार करैत करीब डेढ़ बजे दिनमे त्रिवेणी पहुँचल रही।

त्रिवेणीमे हमरा सभक टेन्ट पहिनहिसँ बुक छल। हमरा सभ बाटेमे गाड़ीयेमेसँ फोनक माध्यमसँ ई काज क' लेने रही। एत' त्रिवेणीमे हमरा सभक केयर टेकर जे छल ओहि लड़काक अजीब नाम छलनि–'मैगी'। हमरा सभक लेल दू गोट टेन्ट बूक छल एकटा पुरूषक लेल आ एकटा जनानाक लेल। टेन्ट तिस्ता नदीक कछेरमे बालूपर बनल रहैत छैक। जे कि सुन्दर रहैत छैक।

त्रिवेणी तीन पहाड़क बीच एकटा टापू अछि। तीन गोट पहाड़ तीन जिलामे अवस्थित अछि– कालिम्पोंग, दार्जीलिंग आ सिक्किम। तीनू पहाड़क बीच दू दिससँ दू टा नदी अबैत अछि– रंगीत आ तिस्ता। रंगीत नदी एत' स्वयंकेँ तिस्तामे विलीन क' अपन अस्तित्व समाप्त क' लैत छथि। एत'सँ केवल आगु बढ़ैत छथि–'तिस्ता'।

हँ, एकटा गप्प बहुत रोचक ई अछि–जत' तिस्ता आ रंगीत आपसिमे मिलैत छैक ओतए एक-दोसराक पानि मिझर नहि होइत छैक। दूनूक दू रंगक पानि साप अलग-अलग देखाइत अछि। हमर मोन त' पहिने ई होइत छल एत' तीन गोट नदीक मिलन स्थल होयतैक। मुदा, से नहि! एत' दू गोट नदी आ तीन गोट पहाड़ अछि। एतुका सौन्दर्य एतेक मनोरम छल जे हम करीब 5 मिनट

धरि एकटक ओहि प्राकृतिक छटाकेँ निङहारैत रहलहुँ आ अपना भीतरमे एकटा अलगे तरहक आनन्दक प्रस्फुटन अनुभव केलहुँ। किनसाइत हमर कोनो सपना पूर भ' रहल हो जेना।

खायर, अपन-अपन सामान टेन्टमे राखि पहिने फ्रेस होबय चाहैत रही। मुदा महिला वॉस रूमकेँ कोनो थाह नहि लागि रहल छल। हम 'मैगी'केँ फोन केलियै। ओम्हरसँ जवाब आएल— 'वीक्एन्ड्' पर बहुत सारे डे-पर्यटक आते हैं इसलिए बंद था। मैं अभी चाभी लेकर आता हूं। कनिये देर बाद 'मैगी' चाभी ल' क' अएलाह। हम सभ फ्रेस भेल रही ताबतमे टेन्ट वला दिससँ कॉफी आबि गेल छल। मुदा, सभगोटेकेँ भूख लागल रहनि। तेँ हमसभ कनेक उपर दिस बढ़ल रही। ओतए दू-तीन टा गुमती छल मुदा, भोजन नहि भेटि सकैत छल, कारण एम्हर खानाकेँ पहिले ऑर्डर देब' पड़ैत छैक तखन खाना भेटैत छैक। समय करीब तीन बाजि रहल छल। भूख अपन अंतिम सीमापर रहैक। जल्दी-जल्दीमे हम सभ मैगी आ बाइ-बाइ मात्र मंगा सकलहुँ। घुरतीमे बिस्कुट आ चिप्स ल' टेन्टमे घुरि गेल रही।

सोमजीत, साधना आ स्वेता टेन्टमे जा क' सुति रहल छल। हमर आ प्रोवल जीकेँ सुतबाक मनोदशा नहि छल। ओतुक्का छटा देखि तत्काल घुरबाक मोन भेल। हम दूनू गोटे नदी आ पहाड़ दिस टहलि गेल रही। ओहि सुन्दर दृश्यमे ओझराइत-लेपटाइत फेर ऊपर पहुँच गेल रही। सोझामे 'वाइन शॉप' छल। बीयर आ पानिक बोतल लेलहुँ आ टेन्ट दिस विदा भेलहुँ। एखनहुँ ओ तीनू गोटे सूतले छल, उठेनाइ ठीक नहि लागल तेँ सूतले छोड़ि देलियनि। गाड़ी-घोड़ाक कने-मने थकावट त' रहिते छैक।

टेन्ट बला दिससँ हमरा सभक टेन्टक सोझा एकटा गोल टेबल आ एकटा बड़का छाता तानल छल। पाँच टा कुर्सी सेहो लागल रहैक। ओत' बैसि क' हम दूनू एक-एकटा बीयर पीब गेल रही। जाड़ बेसी बढ़ि रहल छलैक तेँ दिनुका पर्यटक सभ वापस जा चुकल रहथि। आब ओत' 70-80 गोट टेन्ट महक पर्यटक लोकनि मात्र बँचल छल जिनका रातिमे एतहि रहबाक अछि।

साझ भ' गेल छल, बहुत रास बाजा सेहो बाजए लागल छलैक। बहुत रास पर्यटक लोकनि नाचि रहल छलाह।

हमरा सभकेँ सेहो नाचकेँ आजादी छल। मुदा मैगी चाय ल' क' आबि गेल छल, हुनका सभकेँ सेहो जगा सभ गोटो चायक चुस्की संग गप-सप क' रहल छलहुँ। चाय खतम केलाक बाद ओ सभ प्राकृतिक सुन्दरता देखबाक लेल केम्हरो-केम्हरो जा रहल छलाह। हम आ प्रोवल जी सेहो एक-एक टा बीयर हाथमे ल' तिस्ताक कछेरे-कछेर आगु बढ़ल रही। ठंढ़ा-ठंढ़ा हवा देहमे लगैत छल से एकटा अलगे तरहक एहसास भ' रहल छल ताहिपरसँ पानिक मधुर ध्वनि एक तरहक संगीत उत्पन्न क' रहल छल। हम सभ बहुत रोमांचित भ' रहल छलहुँ।

थोड़ेक देर बाद सभ कियो कैम्पमे आबि गेल रही समय साँझक सात बाजि रहल छल 'मैगी' शानदार 'बोनफायर'केँ इन्तजाम कएने छल। चारू कातसँ पाँच टा कुर्सीपर हम सभ आगिक आनन्द ल' रहल छलहुँ। होइत छल जेना स्वर्ग एतहि हो। हम सभ पुनः बीयर पीब शुरू क' देने रहियैक, स्वेता आ साधनाकेँ कोनो तरहक दिक्कत नहि रहैक जे हम सभ बीयर ल' रहल छलहुँ। सोमजीत कहलनि हम छोड़ि देने छियै से हम नहि लेब। साधना एक घोंट ल' क' मुह बिजकबैत कहलनि—'अरे बाबा! इतना तीता! नहि बाबा मैं नहीं लेती'।

जँ-जँ राति बितैत जाइत छल जाड़ सेहो बढ़ि रहल छल आ इन्जॉय सेहो। चारू भर केवल नाच चलि रहल छल, लगैत छल सभ कियो एहि पलकेँ जीबि रहल हो। केखनो हिन्दी केखनो बंगाली, नेपाली, पंजाबी, भोजपुरी तँ कखनो अंग्रेजी गानाक स्वर कतहुँसँ सुना जाइत छल आ हम सभ सेहो झुमि उठैत छलहुँ। साढ़े सातसँ बेसी समय भ' चुकल छल कि 'मैगी' फेर हमरा सभक लेल 'बार्बी क्यू'क इन्तजाम कएलक। बार्बी क्यू आगिक-धधरापर पकाओल चिकेनकेँ कहल जाइत अछि। शाकाहारी खएनिहारक सभक लेल पनीर-पकौराक इन्तजाम छलैक। तिस्ताक कछेरपर बोनफायर, तकरा बाद बार्बी क्यू आ तहिपरसँ बीयर हम बता नहि सकैत छी हम सभ कतेक आनन्द मग्न रही। हम सभ डम्ब-शेरेड्स, अन्त्याक्षरी आदि खेलैत-खेलैत कखन घंटा बिता देलियैक पत्ते नहि चलल।

बोनफायर एखनो चालु छल। बादमे फेर 100 रुपयाक चारि गोट चैला लाबि क' देने रहैक 'मैगी'। किछु देर बाद 'मैगी' डिनर ल' क' आएल। हम सभ डिनर केलाक बाद तिस्ताक कछेरमे घुमि रहल छलहुँ। हम आ प्रोवल जी दू गोट कुर्सी ल' क' पानिक एकदम लगमे जा क' बैसि गेल रही। हमरा दूनूक हाथमे बीयरक बोतल छल। कनेक काल बाद कैम्प एरेजन्जमेन्ट बला आबिक हमरा सभसँ कहलनि— 'यहाँ से हट जाइए रात के समय पानी खोला जाता है। एकाएक पानी की मात्रा बढ़ जाने से खतरा का संभावना रहता है।'

हम सभ गोटे अपन कैम्प लग आबि क' बैसि गेल रही, समय 1:30 बाजि गेल छल। हमरा आ प्रोवल जीकेँ हाथमे अंतिम बीयरकेँ बोतल छल। सभकेँ हाफी-पर-हाफी भ' हरल छलैक मुदा सुतबाक कियो नाम नहि ल' रहल छलाह।

अंततः, कनेक देर बाद करीब दू बजे हम सभ अपन-अपन कैम्पमे सुतबाक लेल जा चुकल रही। आइ एतहि धरि।

•

शशि कुमार शशि

सिधपकला, लदनियाँ, मधुबनी
सम्पर्क : 8521907184

शशि कुमार शशिक जन्म 9 फरवरी 1983मे मधुबनी जिलाक लदनियाँ प्रखंड अंतर्गत अपन पैतृक गाम सिधपकलामे भेलनि। प्राथमिक शिक्षा गामक राजकीय मध्य विद्यालय सिधपकलासँ कएलाक बाद मधुबनी देव नारायण यादव महाविद्यालयसँ स्नातक एवं बिहार विश्वविद्यालय मुजफ्फरपुरसँ मैथिली विषय ल' क' स्नातकोत्तरक शिक्षा प्राप्त केलनि। वर्तमानमे बिहार सरकारक ग्रमीण विकाश विभागमे कार्यरत छथि। मैथिली साहित्यमे रुचि छनि कविता/लघुकथा आदि लिखैत रहैत छथि।
सम्प्रति मैथिली साहित्यक रचनात्मक पत्रिका अनुप्रासक उप सम्पादक छथि।

...आब धोखा-धरिक खेल, खेल रहल अछि कोरोना

चीनक वुहान प्रान्तसँ उपतैन भेल कोरोना आइ संसार भरिमे बे-खौफ विचरण क' रहल अछि। हम सभकियो अपन-अपन घरमे घरबंदी भेल छी सभ काज-धंधा छोड़ि क'। एहि वायरसक किरदानीसँ बहुतो लोकक जान गेल अछि, सभक विकास रुकि सन गेल अछि। चिन्ताक विषय जे छोट-छोट नेना सभक पढ़ाइ-लिखाइ सभ ठप भ' गेल अछि।

एहि वायरसक प्रकृति बहुत शुक्ष्म आ बहुत घातक अछि। WHO क अनुसारे– वायरस मनुष्यक केशक तुलनामे 900 गुणा छोट अछि आ बहुत तेजीसँ दुनिया भरिमे पसरि रहल अछि। एहि वायरसक अकोशकीय बहुत सूक्ष्म जीव अछि जे मात्र जीवित कोशिकामे वृद्धि क' सकैत अछि। देहक बाहर ई मृत प्राय होइत अछि मुदा देहक भीतर गेला पर जीवित भ' जाइत अछि आ बहुत घातक असरि करैत अछि। ई एतेक सूक्ष्म होइत अछि जे एकरा आँखिसँ नहि देखल जा सकैत अछि।

कोरोनाक ई दोसर वेव अपन रंगमे अछि। एकर लक्षण सभ सेहो पहिनेसँ बदलल अछि। हमरा सभकेँ एहि मरकीसँ बचैकेँ एक मात्र उपाय अछि ओ अछि सावधानी! अपन-अपन परिवार/समाजक संग सावधानीसँ रहबाक अछि। मास्कक उपयोग कएने बिना कतहुँ नहि जएबाक अछि। घरसँ बहुत कम बहराइ सम्भव हो तँ नहि बहराइ, बाहर गेला पर भीड़सँ परहेज करी आवश्यक दूरीक धियान राखी। आवश्यकताकेँ कम क' क' राखी से बेसी आवश्यक अछि।

बहुत डेराओन समयमे बीति रहल छी हमरा लोकनि। WHO क कहनामे लगभग सत्तरि देशमे पसरि गेल अछि ई वायरस। मुदा डेरेबाक नहि अछि हमरालोकनिकेँ बस सतर्क रहबाक अछि। एकर संक्रमणसँ मृत्यु निश्चित नहि अछि-समय रहैत तकतियान कएला पर बेरामीक जान बँचि सकैत अछि।

एहि सभ सावधनिक संगे जरूरी अछि जे– देशमे कोविड-19 महामारीक खेलाप टीकाकरण अभिनयमे शामिल भ' कोरोनाक टीका अवश्य लगबा ली। टीका लगएबाक संगे डॉक्टरक सलाह जरूरी अछि– कंप्लीट ब्लड काउंट(CBC), C-रिएक्टिव प्रोटीन(CRP) या इम्यूनोग्लोब्युलिन-E (IgE) लेवलकेँ जाँच कएल जा सकैत अछि। टीका लैसँ पहिने कोनो दबाइ खाइ लेल देल जाए तँ जरूर खा लेबाक चाही। टीकाकरणकेँ ल' क' कोनो तरहक तनाओ नहि ली एकदम सहज रही।

डाइबिटीज या ब्लड प्रेशरकेँ मरीजकेँ टीका लैसँ से पहिने सुगर आ ब्लड प्रेशर लेवल सामान्य स्तर पर लएबाक खगता अछि। कैंसरक मरीज आ खासकर जिनका कीमियोथेरपी भेल छनि, हुनका डॉक्टरक सलाह मानक चाही।

वैक्सीन हमर प्रतिरक्षा तंत्र(Immune System)केँ बाहरक खतरासँ लड़नाइ सिखबैत अछि। कोविड- 19 की वैक्सीन सेहो देहमे कोरोना वायरसक संक्रमणकेँ खेलाफ लड़ैक तागत दैत अछि, महज एहिमे किछु सप्ताह लागि जाइत अछि। ई नहि बुझि कि वैक्सीन लगा लेलहुँ तँ एखनेसँ अहाँ कोरोना वायरसक खेलाफ सुरक्षित भ' गेलहुँ।

मुदा सबसँ दिक्कत अछि एत' ई जे लोक जाँच करबैक लेल तैयार नहि छथि अथवा कनेक दिन अनठबैत रहब हमरासभक वृतिमे अछि। जखन की कोरोना आब धोखा-धरिक खेल सेहो खेल' लागल अछि। एकटा रिपोर्टसँ पता चलल अछि जे– टायफाइडक बहन्ने कोरोना लोकक जान ल' रहल अछि।

विशेषज्ञक कहब छनि– जकरा टायफाइड छैक ओ कोरोना पॉजिटिव भेलाक बादो जाँचमे नेगेटिव आबि रहल अछि। टाइफाइडकेँ चलते कोरोना जाँचकेँ समय पकड़मे नहि आबि रहल अछि। जखन की एहन मरीज वास्तवमे कोरोना संक्रमित रहैत अछि।

...जँ साँस फूलि रहल हो, बोखार आ खौंखीक लक्षण देखा रहल हो। रैपिड आ आरटीपीसीआर जाँच रिपोर्टमे कोरोना निगेटिव अछि तखन एक बेर टाइफाइडक जाँच जरूर करा लेबाक चाही।

समानता तँ छैक

ऋषि बशिष्ठ

तेजगंगाधाम, परिहारपुर, मधुबनी

सम्पर्क : 8789589063

ऋषि बशिष्ठ मैथिलीक कथाकार, उपन्यासकार, अभिनेता तथा निर्देशक छथि। हिनक जन्म 1974 मे तेजगंगाधाम, परिहारपुर, मधुबनी, बिहारमे भेलनि। ई नाट्यशास्त्रमे स्नातकोत्तरक उपाधि प्राप्त कयलनि। हिनक पहिल उपन्यास जे *हारय से नाक कटाबय* 2008मे प्रकाशित भेल। हिनक प्रकाशित कृतिसभ अछि— *कोढ़िया घर स्वाहा, झूठ पकड़ा मशीन, माटि परक लोक आ सुफांटि जतरा, नित नित नूतन होय, गाम सँ जाइत रेलगाड़ी, ई फूलक गुलदस्ता, बाबा दंडोत बच्चा जयसियाराम, कलशयात्रा, सिया के सकल देखि* आदि। हिनका संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा सीनियर फेलोशिप प्राप्त छनि। *डॉ. माहेश्वरी सिंह 'महेश' ग्रंथ पुरस्कार* एवं *मैथिली सेवी पुरस्कार*क अतिरिक्त वर्ष 2019मे *ई फूलक गुलदस्ता*क लेल *साहित्य अकादेमी बाल साहित्य पुरस्कार* प्राप्त छनि।

चारि मासक बाद आइ उमाकान्तक दरबज्जापर हहारो पड़ैत छलनि। गाम भरिक संगी-साथी आयल छलखिन भेंट करय। एकसँ एक फुलझड़ी छुटैत छल गप्पक। कियो अपन बाल्यावस्थाक खुरलुचपानीक चर्चा उठा दैत छलाह तँ कियो कॉलेजमे संगी-साथीक बीचक घटल घटना। उमाकान्त मुदा एकदम स्थिर छलाह। आँगनसँ चाह ल' क' साकेत आयल। उमाकान्तक एकटा संगी ओकरा दुलार करैत पुछलखिन, ''अहाँ कहिया अयलहुँ यौ बटुक?''

साकेत ट्रेकेँ चौकीपर रखैत बजलाह, ''काल्हिए।''

''काल्हि कखन?''

''बाबूजीसँ पहिने।'' साकेत उत्तर दैत जाय लगलाह। उमाकान्तक एक मित्र जे पेशासँ शिक्षक छलखिन से प्रश्न कयलनि, ''होस्टलमे मोन लगैए किने?'' साकेत चुप्प। कोनो उत्तर नहि देलनि।

मास्टर साहेब पुनः पुछलनि, ''साकेत, कहलहुँ नहि! मोन लगैए किने?''

साकेत बात बहटारैत उमाकान्तकेँ पुछलनि, ''बाबूजी, गैसवला गोटी नेने आउ?''

''नेने आबह।''

मास्टर साहेबक प्रश्न साकेतसँ जेना उछटि गेलनि उमाकान्तपर, ''गैसक परेशानी बढ़ि गेलह? ...जेलमे खान-पानमे तेल-मसल्ला बेसी रहै छै की?''

''ऊँह! तेल-मसल्ला!'' उमाकान्त संक्षिप्त उत्तर देलनि।

''हँ, तेल-मसल्लासँ मोन पड़ल! ...अयँ हौ उमा! जेलमे खेनाइ कोना-की दैत छैक?''

तावत बामा हाथमे पानिक गिलास आ दहिना हाथमे पातसँ छोड़ायल कैप्सुल ल' साकेत आबि गेल। करजनीक बीया सन रंगक, मुदा नमगर आधा लाल आ आधा कारी कैप्सुल उमाकान्त चुटकीमे ल' मुहमे फेकलनि आ गटागट पानि पीबि घोंटि गेलाह।

मास्टर साहेबक जेना एकहुटा जिज्ञासा शान्त नहि भ' रहल छलनि। ओ आओर उत्सुकतासँ पुछलनि, ''अयँ हौ उमा! जेलमे मारबो केलकह?''

उमाकान्त किछु उत्तर देबाक लेल नियारथि तावेत हुनक एकटा मित्र जे डिस्टिक कोर्टमे वकील छथिन ओ मास्टर साहेबक प्रश्नक जवाबमे कहि देलखिन, ''एतेक जिज्ञासा छह त' एकबेर भइये आबह ललका घरसँ।''

''नहि-नहि! आब हम कथी लेल जायब, अपना सभक सत्ती तँ उमाकान्त भइये आयल! ... अपना सभकेँ की अछि। ... कियो कुलमे दादा कहाबओ! से उमाकान्त भइये गेल!'' मास्टर साहेब वकील साहेबक जवाबपर लेबा लगौलनि।

वकील साहेब उमाकान्तकेँ कहलनि, ''हौ उमाकान्त, जखनसँ जेल गेलह तखनसँ ल' क' जहिया अएलह तहिया तककेँ सभटा लिखिक' हिनका एकटा कॉपीपर द' दहुन जे कखन-कखन की-की भेलह! ... हौ साकेत! बच्चा, एकटा कॉपी आनिक' बाबूजीकेँ दहुन!''

साकेत फुर्र द' आँगन जाक' कॉपी-पेन ल' क' आबि गेल। साकेत कॉपी-पेन वकील साहेबकेँ दैत पुछलक, ''अहाँ लेबै ओकील चच्चा?''

उमाकान्त जोरसँ बाजि उठलाह, ''एह! ओहिना कहलखुनहेँ! ल' जो!''

साकेत जे कॉपी-पेन वकील साहेब दिस बढ़ेने छल से आगाँ बढ़ेनहि रहि गेल। मास्टर साहेब दया प्रदर्शित करैत बजलाह, ''एह कोना लुलुआ लेलियै नेनाकेँ।'' साकेतकेँ कान्हपर हाथ द' चौकीपर बैसबैत बजलाह मास्टर साहेब, ''एतय बैसू बौआ! ... अहिना संगी-साथीमे गप्प होइछै! ... अहुँकेँ होस्टलमे संगी-साथी सभ अछि किने?''

साकेत मात्र मुद्रासँ भाव प्रकट कयलनि।

जखन तोरा जेल ल' गेलह तखन की भेलै उमा भाइ?'' मास्टर साहेब पुनः जिज्ञासु भ'

पुछलनि।

''हौ, कहिये दहक! ई मस्टरबा नहि मानतह! ... असलमे मास्टरी करैत-करैत सिखबाक-सुनबाक अभ्यास ने भ' गेल छैक!'' वकील साहेबक गप्पपर उमाकान्तक दोसरो-तेसर मित्र हामी भरलनि। वकील साहेब सभक समान जिज्ञासा देखि बजलाह, ''होअह! शुरू करह! ... जखन जेलमे प्रवेश कयलह, तखनेसँ सभ वृतांत सुना दहक।''

उमाकान्त कुमोनसँ कहब शुरू कयलनि, ''जखने हमरा जेलक गेटसँ भीतर ल' गेल कि कैदी सभ हमरा देखबाक लेल तेना आयल जेना हाटसँ कीनल नबका बड़दकेँ देखबाक लेल किसान अबैए। ... मुदा हमरा देखिते सभ कहय लागल— चारि सय बीसी केसमे आयल अछि... फल्लाँ फ्रॉड कम्पनीमे नोकरी करैत छल... फल्लाँ गाम घर छै. .. फल्लाँ योग्यता छै। ... सभटा जानकारी ओकरा सभकेँ कोना छलै से सुनि छगुन्तामे पड़ि गेलहुँ।''

उमाकान्तक गप्प सुनैत काल साकेत होस्टलमे भर्ती होयबाक समयमे घटल घटना सभक मिलानी करैत गेल। ओहो जखने होस्टलक कैम्पसमे प्रवेश कयने छल कि एकरा देखबाक लेल विद्यार्थी सभ तेना झुण्ड बनाक' आयल छल, जेना ई चिड़ियाघरमे आयल नब जानवर होअय। ओहिना एकरो मादे सभकेँ सभ बात ज्ञात छलैक। कोन वर्गमे आयल अछि...कोन स्कूलमे पढ़ैत छल...कतेक प्रतिशत नम्बर अनने छल...कोन गाम घर छैक। छगुन्ता साकेतोकेँ लागल छलैक।

अनायास साकेतकेँ बजा गेलै, ''अहिना त'...''

मास्टर साहेब साकेतकेँ पुछलनि, ''की कहलहक?''

''नहि! कहाँ किछु!'' साकेत बातकेँ टारलक।

''बुझलहक मास्टर?...आब की बुझबाक छह से पुछहक उमाभाइसँ।'' वकील साहब मास्टर साहेबकेँ जेना मुहमे आँगुर द' प्रश्न करबेबाक चेष्टा कयलनि।

''अयँ हौ उमाभाइ! जेलक भीतरमे कोठली सभ केहन? ...एक कोठलीमे कतेक गोटा रहै छै?'' मास्टर साहेबक प्रश्न समाप्त होअयसँ पहिनहि उमाकान्त केन्द्रित भ' बाजय लगलाह— ''कोठली सभ तरहक! . ..कोनो-कोनो पैघो, तँ कोनो-कोनो छोटो! ...पैघ कोठरीमे बीस-पचीसटा कैदी तक रहैत अछि! ...आ छोटमे कम्मो! ...ओही कोठलीक एक कोनमे पैखाना-पेशाब...कनिके ऊपर तक ईंटाक घेरेबा देल! ...मोन घिन्न भ' जाइत छैक! ...ओहिना आदमीपर आदमी नीचहिमे पड़ल!''

उमाकान्त जेना-जेना जेलमे रहबाक कोठलीक मादे बजैत छलाह, साकेत तेना-तेना होस्टलमे रहबाक कोठलीक मिलान करैत छल, मोनहि-मोन! निःशब्द भेल। ...कोनो कोठली छोटो आ कोनो-कोनो पैघो। सुतबाक लेल पँचमहला बेंच देबालक काते-कात लागल। एकटा बेंच नीचाँ आ तकर ऊपर बर्थ, तकर ऊपर आ तहिना तकरो ऊपरे-ऊपर, जेना रेलमे लोअर, मिडिल आ अपर बर्थ होइत अछि। साकेतकेँ चट् द' बजा गेलै, ''कनिके त' छैक अन्तर...!''

मास्टर साहेब साकेतक व्यथाकेँ जेना गौर कयलनि। ओ साकेतकेँ पुछि देलनि, ''तोँ किछु कहलह साकेत?''

झेंपबाक प्रयास कयलक साकेत, ''...किछु नहि!''

उमाकान्त जेना गति पकड़ि लेने छलाह। ओ सभ-वृत्तांत बजैत जा रहल छलाह। ओ ई नहि देखैत छलाह जे के हमरा दिस ध्यान देने अछि आ के दोसर दिस लागल अछि। हुनका सुरमे मोन पड़लनि मास्टर साहेबक व्यंग्य, 'जेलमे भोजनमे तेल-मसल्ला बेसी रहै छै की?' उमाकान्त कहय लगलाह, ''जेलक खेनाइ कोनो खेनाइ छैक, ओ तँ लोक प्राण रक्षाक लेल खाइए! ...आ ओही ठाँ जे दादा किस्मक कैदी अछि तकरा लेल नीक-निकुत! ...आ अनका लेल जरल-जरल रोटी...दुइयोटा ने खा हेतह!''

साकेत एहि सभ गप्पमे तेना हेरा गेल छल जे मुह बओने रहि गेल छल! एकदम अहिना छैक—होस्टल! ...अनमन जेले सन!

...रोटियो ओहिना जरल-जरल आ सेहो दू टा खयबाक भूख अछि तँ डेढ़ेटा खाउ! ... होस्टलोमे जे उचक्का छौंड़ा अछि तकर चला-चलती! ओकरापर कोनो रोकटोक नहि! साकेतकेँ हठात् बजा गेलै, ''कोनो अन्तर नहि'' मास्टर साहेब साकेतकेँ किछु पुछथि, ताहिसँ पहिनहि वकील साहेब प्रश्न क' देलखिन, मारो-पीट करै छै जेलमे?''

''दबंग टाइपक कैदी जे पैघ-पैघ अपराध क' क' गेल छैक ओ कमजोरहाकेँ कखनो, कोनो बातपर पीटि दैत छैक! ...कमजोरहाक कम्पलेनपर कोनो सुनवाइ नहि छैक!''

एहिबेर मुखर भ' गेल साकेत, ''अहिना तँ होस्टलोमे छैक! ...दबंग टाइपक विद्यार्थी ककरो मोजर नहि करैत छैक! ...मुहदुब्बर विद्यार्थीकेँ कखनहुँ पीटि दैत छैक! ...ओकर 'कम्प्लेनपर कियो 'एक्शन' नहि लैत छैक! ... डाइरेक्टरो नहि! ...सभ कहैत छैक जे एहि विद्यार्थीपर 'एक्शन' हेतै तँ होस्टल चलतै! ...बम-बारुदसँ उड़ा देतै एकर बाप! ...तखन एकटा होस्टल आ जेलमे की फर्क छै ओकील चच्चा?''

वकील साहेब साकेतक दर्दकेँ बुझलनि। ओ साकेतकेँ दुलार करैत बजलाह, ''साकेत! अहाँ एखन दस बरखक छी! ... अहाँकेँ नियम-कानूनमे बान्हिक' होस्टलमे एहि दुआरे राखल जाइए जे अहाँ आगाँ चलिक' सफल नागरिक बनि सकी, अपना जीवनमे किछु क' सकी। ...धैर्य राखि सकी!''

मास्टर साहेब बीचेमे रोकलनि वकील साहेबकेँ, ''नहि-नहि! ...हम तोरा बातसँ एकदम सहमत नहि छी वकील! एकटा विद्यार्थीक संग एना कैदी सन व्यवहार अनुचित थिक! ...बच्चा ओहिना नहि बजलह अछि! ओकरा दिमागपर असर पड़ल छैक!''

साकेतक आत्मबल आओर बढ़ि गेलै। ओ पूरा तावमे बाजल, ''...तखन जेल आ होस्टलमे एतबहि अन्तर जे विद्यार्थीकेँ अभिभावक स्वतः होस्टलमे भर्ती करा अबैत छथिन आ जेलमे पुलिस पकड़िक' ल' जाइत अछि! ...बस्स! एतबे अन्तर छैक! ...अहाँ सभकेँ एहिसँ बेसी किछु अन्तर देखाइए चच्चा?''

सभकियो अवाक् रहि गेलाह! समानता तँ छैक!

●

पढ़' बेरमे बकरी चरवाही

माए गे बकरी चराब' जाइछी बाधमे
हमरा जलखै पठा दिहै धारक कातमे।

भुजा फाकि जाए छी, भुख बड़जोर लागैए
मउरकलसन रौद हमर सौसे देह जराबैए
पियाससँ गला सुखाइत अछि फक-फक
गर्मीकेँ मारल घम चुबै टप-टप
नून-मेरचाइ छुट्टे, पठाबिहै सागभातमे।

परती-परातपर घुमि घुमि चरबै छी
नया डारिपात तोड़ि-तोड़ि खिअबै छी
मालजालकेँ आगा पाछा भरिदिन दौड़ै छी
माटिपर क, कासँ गे हम अ, आ सीखै छी
सिलेट-पिलसिम फेरस हमरा दिहै हाथमे।

निर्धनकेँ धियापुता स्कूल कोना जेतै
माल-जाल, बकरी फेर के सभ चरेतै
हमरो मोन होइछै बेटा हाकिम-हूकम बनै
बैलगाड़ी छोड़ि बौआ मोटरगाड़ीमे चढ़ै
काल्हिसँ पढ़ पठेबै चटियाक साथमे।

•

बौआ खेतए बौआ सुततए

कर्ण संजय

विराटनगर, नेपाल

संपर्क : +977 9804050956

हे रे चन्दामामा बौआ लए गुड़ लेने आ
बौआकेँ मामा मधुर लेने आ।
बौआ खेतए बौआ सुततए
देखु लिहुछ-लिहुछ कानैए बौआ हमर
पठाए देबनि मम्मीकेँ अपन गामक नैहर
पापा, आम, लिची, केरा, अंगूर लेने आ।
बौआ खेतए ...
बाबा बनता घोड़ा बैसत बौआ पीठपर
कानलोमे हँसताह ओ टॅफीकेँ मीठपर
अंकल टॅफी खेलौना जरुर लेने आ।
बौआ खेतए...
सनेस लेने औताह बौआक मौसा-मौसी
भार लेने औताह बौआक पिसा-पिसी
नानी ठकुआ पिरिकिया खजूर लेने आ।
बौआ खेतए ...

•

हम किएक डरी

अभिषेक सुमन

नरहन, समस्तीपुर

संपर्क : 6206867873

कखनहुँ क' हम सोच' लगैत छी
हम कथी-कथीपर गुमान करी
मारतेरास काज तँ बाँचले अछि
तखन शक्ति किएक जियान करी

देह तँ भसिया जाइत अछि मुदा
मोन नहि थाकैए किछु सोचिक'
कतेको चुनौती तँ बाँचले अछि
ओहि सभसँ हम कोना लड़ी

कखनहुँ हमरा चिन्ता होइत अछि
छोटछीन जीत तँ किछु नहि अछि
पैघ जीत बाँचले अछि अखनो
ओ पयबा लेल नभमे कोना उड़ी

एकटा बात ई ध्यानमे आएल
समयक लेल व्यर्थ अछि सोचब
समय होइत अछि निस्सीम व्योम
तँ पहिनहिसँ हम किएक डरी

•

अनुप्रासक माध्यमसँ मैथिलीकेँ एकटा नव स्तरीय पत्रिकाक लेक हमर बहुत-बहुत साधुवाद।

एकर दोसर अंक पढ़बाक मौका भेटल। अंकमे ललित कुमुद पर केदार कानन एवं दयानाथ झा पर डॉ. प्रकाश झाक संस्मरण एहि अंकक विशेष आकर्षण अछि।

—कीर्ति नारायण मिश्र
(बरौनी)

अनुप्रासक दोसर अंक पढ़लहुँ। मैथिली पत्रिकाक जे दयनीय स्थिति छैक ताहि समयमे अनुप्रास मनकेँ आश्वस्त करैत अछि। संपादककेँ बधाइ दैत छिअनि।

एहि अंकक सामग्री पढ़ि बड़ नीक लागल। डा. रामावतार यादवक आलेख तँ संग्रहनीय छन्हिए, डा. प्रकाश झाक संस्मरण सेहो बेश नीक छनि। विनय कुमार झाक कविता 'विकास-पथक ज्यामिति' बढ़िया भेल छनि। एकटा महत्वपूर्ण बात इहो जे एहि अंकमे हमरा प्रूफक गलती नहि सन भेटल।

हमर शुभकामना जे पत्रिकाक निरन्तरता बनल रहए।

—श्याम दरिहरे
(पटना)

अनुप्रासक दोसर अंक खजौली बाजारकेँ मिथिला पुस्तक भंडारसँ खरीदलहुँ। एतेक कम दाममे एतेक सुनर रचना आ विविधता देख हम दंग भ' गेलहुँ।

कोनो कारणसँ पहिल अंक हम नै ल' सकल रही मुदा दोसर अंक पढ़लाक बाद पहिल अंक सेहो पढ़बाक मन भ' रहल अछि!

अंतमे हम इहे कहब जे सभ कियो ई मैथिली पत्रिका किनि कए पढ़ू आ अपन भाषा-संस्कृतिकेँ बचाउ। संग्रहणीय पत्रिका लेल अनुप्रासक संपादकीय समूहकेँ बधाइ। हमर शुभकामना! शून्य काल धरि पत्रिका प्रकाशित होइत रहैक।

—कमलेश कुमार सिंह
(खजौली)

मधुबनी गेल रही खबरि रहए जे मित्र दीप नारायणजीक संपादनमे मैथिली पत्रिका अनुप्रासक दोसर अंक प्रकाशित भ' चुकल अछि। मात्र 30 टाकामे खूब रूचिगर पत्रिका अछि— *अनुप्रास* मैथिलीमे एतेक कंटेटसँ भरल पत्रिका बहुत कम प्रकाशन भ' रहल छैक। एतेक सुरुचिपूर्ण पत्रिका जे हम पूर्वमे पढ़ने रही ओ छल भाइ अनलकांतजी(गौड़ीनाथ) पत्रिका अंतिका।

हमर पाठकीय प्रतिक्रिया—

अनुप्रास नीक लागल

सामयिक कलेवर
रचनात्मक संयोजन
संपादककेँ मेहनति आर,
सफगर पन्ना-पात
नीक लागल

कथा-कविता
गीत-गजलक फुलबारी
संस्मरण-बालवाड़ी
साक्षात्कारक संग सबटा चास
नीक लागल

इतिहासक अभ्यंतरसँ निकसल
मैथिली शब्दावलीक इतिहास
बुकाननसँ धीरजजी धरि
भाषाविद्जीक खोजी बात
नीक लागल

...'छिड़ियाल रोटी',
'कोरोना'क दर्द
... चुलबुल पांडे...
आ पसाही कथा
नीक लागल

कम मूल्यमे कसगर कलेवर
संपादकीयमं काजुक बात
उगल सुरूज लय अपन ठाठ
हाथ आबि गेल अनुप्रास
नीक लागल।

रूचिगर पत्रिकाक प्रकाशनक लेल संपादक आ हुनकर सम्पूर्ण टीमकेँ हार्दिक बधाइ आ शुभकामना जे पत्रिका दीर्घायु होमए।

—रामनरेश यादव
(फुलपरास)

अनुप्रास पत्रिका समकालीन मैथिली साहित्यक एकटा मजबूत खाम्ह बनि ठाढ़ भ' रहल अछि। जुलाइ-दिसंबर 2020 अंकमे बिरल लेखसभ पढ़ि नब-नब तथ्यसँ परिचित भेलौं। सम्पदाकक दृष्टिफलक गहींर छन्हि आ ओ स्तरीयता, उपयोगिताक संगहि समावेशी बनि अइ पत्रिकाकेँ आगु बढ़ा रहल छथि। भाषाशास्त्री प्रो. रामावतार यादवजीक आलेख बिरल ओ संग्रहणीय छल। हम शुभकामना व्यक्त करैत कामना करै छी जे ई पत्रिका दीर्घजीवी हुए।

—शैलेन्द्र कुमार मिश्र
(दमण)

अनुप्रास प्रकाशनसँ प्रकाशित पोथीसभ...

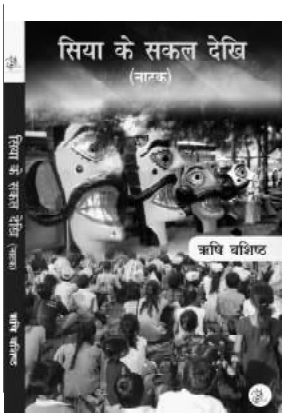

सिया के सकल देखि
[मैथिली नाटक]
ऋषि बशिष्ठ
मूल्य : ₹ 108/-

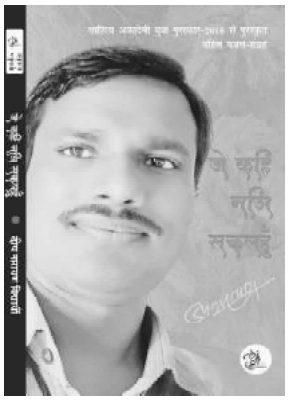

साहित्य अकादेमी युवा पुरस्कार-2016सँ पुरस्कृत पहिल गजल संग्रह

जे कहि नञि सकलहुँ
[मैथिली गजल संग्रह/दोसर संस्करण]
दीप नारायण विद्यार्थी
मूल्य : HB ₹ 199/-
PB ₹ 149/-

लय
[मैथिली उपन्यास/दोसर संस्करण]
विभूति आनन्द
मूल्य : ₹ 200/-

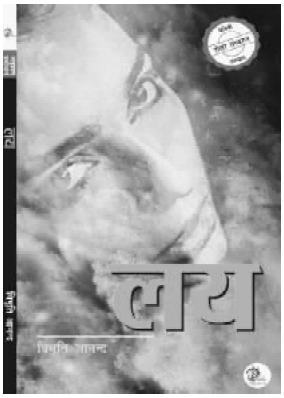

थिर कएने मोन
[मैथिली कविता संग्रह]
अमरनाथ झा 'अमर'
मूल्य : ₹ 211/-

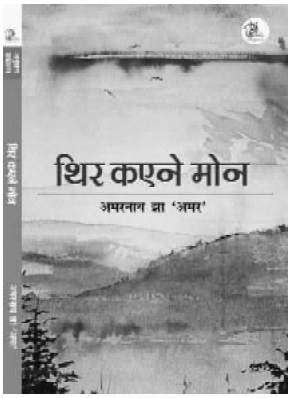

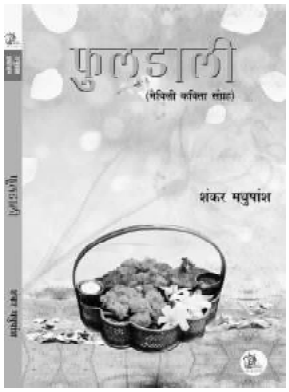

फुलडाली
[मैथिली कविता संग्रह]
शंकर मधुपांश
मूल्य : ₹ 160/-

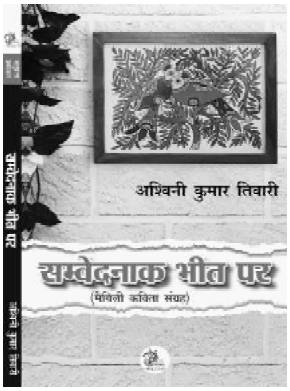

सम्वेदनाक भीत पर
[मैथिली कविता संग्रह]
आश्विनी कुमार तिवारी
मूल्य : ₹ 225/-

विरह संदेश
[हिंदी काव्य]
शंकर मधुपांश
मूल्य : ₹ 160/-

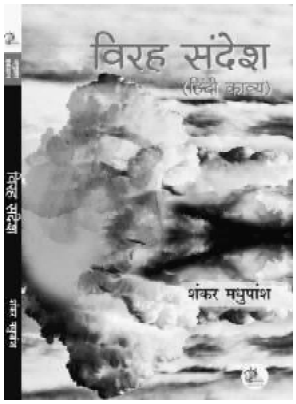

अगम अगोचर
[हिंदी उपन्यास]
अर्जुन झा
मूल्य : ₹ 150/-

अनुप्रास प्रकाशनसँ पोथी/पत्रिका समूल्य मंगएबा एवं छपएबा लेल सम्पर्क कएल जा सकैत अछि... Mo./whatsApp : +91 9430583847

अनुप्रासक गतिविधि

अनुप्रासक पहिल आयोजन, मधुबनी 24 जून 2018, डा. कमल मोहन चुन्नूक एकल गजल पाठमे मंचासीन अतिथि लोकनि

पहिल अंकक लोकार्पण समारोह 31 दिसम्बर 2019 होटल स्वास्तिक इन, मधुबनी

जे कहि नञि सकलहुँ (मैथिली गजल संग्रह) दोसर संस्करणक लोकार्पण समारोह 31 दिसम्बर 2019 होटल स्वास्तिक इन, मधुबनी

जून 2019, दोसर अंकक लोकार्पण समारोहमे महेन्द्र मलंगिया, अजय कुमार सिंह, DDC मधुबनी आ अनुप्रास समूह

अनुप्रासक कार्यालयमे बामासँ नाटककार महेन्द्र मलंगिया, अजय कुमार सिंह, DDC मधुबनी, ऋषि बशिष्ठ आ दीप नारायण

जनकपुर, प्रा. डा. रामावतार यादव जीक आवास पर पहिल अंक भेंट करैत

बामासँ अनुप्रासक सम्पादक दीप नारायण, परामर्शी धीरेन्द्र प्रेमर्षि आ उप-सम्पादक कुमार आलोक

बामासँ अनुप्रासक सम्पादक दीप नारायण उप-सम्पादक क्रमशः शशि कुमार शशि, कुमार आलोक आ प्रबन्ध सम्पादक फुलकान्त ठाकुर

मैथिलीक सद्य:दिवंगत साहित्यकार-संस्कृतिकर्मी लोकनिकेँ अनुप्रास परिवारक

श्रद्धाञ्जलि

चन्द्रनाथ मिश्र अमर
(दरभंगा)

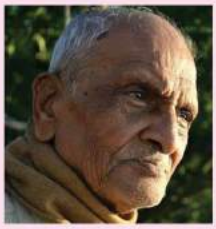
डा. रामदेव झा
(लहेरिया सराय)

योगमाया देवी
(लहेरिया सराय)

सुकान्त सोम
(पटना)

राम लोचन ठाकुर
(कलकत्ता)

पंचानन मिश्र
(दरभंगा)

हेमचन्द्र झा
(मधुबनी)

आचार्य नाजिम रिजवी
(अलीनगर)

जयप्रकाश मंडल
(निर्मली)

डॉ. विश्वेश्वर मिश्र
(सरिसव-पाही)

स्वामी शैलेन्द्र
(लहान, नेपाल)

धर्मनाथ झा
(सरिसव-पाही)

कुमार गगन
(पटना)

प्रणव नार्मदेय
(मधुबनी)

प्रो. नबोनाथ झा
(दरभंगा)

शेखर झा
(दिल्ली)

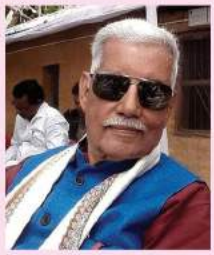
ई. नमोनाथ
(राँची)

कामेन्द्र नाथ झा अमल
(कोइलख)

सुधीर कुमार झा
(पटना)

मनोज मनुज
(पटना)

डॉ. मोहन मिश्र
(लहेरिया सराय)

कुसुमाकर दुबे
(आकाशवाणी, दरभंगा)

अजय कुमार सिंह
(कलकत्ता)

भगवान प्रलय
(अररिया)

शत्रुघ्न पासवान
सहयात्री (दरभंगा)

संजू अग्रवाल
(प्रिंटवेल, दरभंगा)

गुरुशरण सदाय
(सिरहा, नेपाल)

नीलाम्बर सिंह
(लक्ष्मीपुर पतारि, नेपाल)

अनुप्रास प्रकाशन

किताब जाहिसँ नेहाल होइछ जीवन

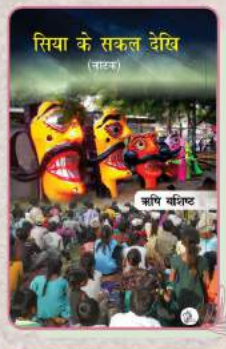

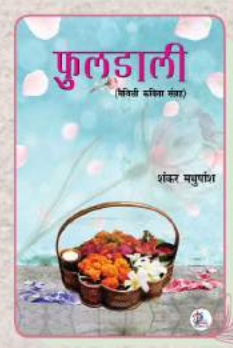

आकर्षक कवर डिजाइन आ सुन्दर छपाइक संग सस्ता मूल्यमे किताब प्रकाशित करएबाक लेल सम्पर्क करी...

अनुप्रास प्रकाशन 9430583847

अनुप्रास प्रकाशनसँ प्रकाशित सभ पोथी/पत्रिका–'पोथी अहाँक दुआरि धरि' फरीदाबाद सँ ऑनलाइन मंगा सकैत छी। +91 9990111455

शीघ्र प्रकाश्य

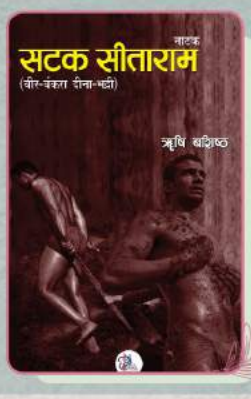

Website : www.anuprasprakashan.com e-mail : info@anuprasprakashan.com

anuprasprakashan @anuprasprakashan +91 9430583847

अनुप्रास प्रकाशनसँ आबयबला आगामी पोथीसभ–

आलेख संग्रह

मैथिली आलेख सञ्चयन II : प्रा. डा. रामावतार यादव

कथा संग्रह

एकान्त द्वीप पर डा. मंजुला : श्याम दरिहरे

बिढ़आ (मधुमाछी कथा) : शंकर मधुपांश

यात्रा वृत्तांत

देश-विदेश : योगेन्द्र पाठक 'वियोगी'

अनुवाद

परिचय शतक : मूल- काशीकांत मिश्र 'मधुप' हिन्दी अनुवाद : शंकर मधुपांश

उपन्यास

बिड़रो : शंकर मधुपांश

कविता संग्रह

कोनो टूटल अछि तन्तु : नारायण जी

नमहर हो चद्दरि जतबए : अमरनाथ झा 'अमर'

जेना होइत हो भोर : अरुण लाल दास

आब कतेक चुप रहू : दीप नारायण

गीत संग्रह

भए गेल भोर : आनन्द मोहन झा